शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

2022-23

कक्षा : बारहवीं

इतिहास

मार्गदर्शन:

श्री अशोक कुमार

सचिव (शिक्षा)

श्री हिमांशु गुप्ता

निदेशक (शिक्षा)

डा0 रीता शर्मा

अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल एवं परीक्षा)

समन्वयक:

श्री संजय सुभाष कुमार
उप शिक्षा निदेशक (परीक्षा)

श्रीमती सुनीता दुआ
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

श्री राज कुमार
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

श्री कृष्ण कुमार
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

उत्पादन मंडल

अनिल कुमार शर्मा

दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो में **राजेश कुमार**, सचिव, दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो, 25/2, पंखा रोड, संस्थानीय क्षेत्र, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा **मुद्रक :** सुप्रीम ऑफसेट प्रेस, 133, उद्योग केन्द्र, EXT.-1, ग्रेटर नोएडा, उ.प.

ASHOK KUMAR
IAS

सत्यमेव जयते

सचिव (शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष : 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Secretary (Education)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187 Telefax : 23890119
e-mail : secyedu@nic.in

MESSAGE

Remembering the words of John Dewey, "Education is not preparation for life, education is life itself, I highly commend the sincere efforts of the officials and subject experts from Directorate of Education involved in the development of Support Material for classes IX to XII for the session 2022-23.

The Support Material is a comprehensive, yet concise learning support tool to strengthen the subject competencies of the students. I am sure that this will help our students in performing to the best of their abilities.

I am sure that the Heads of School and teachers will motivate the students to utilise this material and the students will make optimum use of this Support Material to enrich themselves.

I would like to congratulate the team of the Examination Branch along with all the Subject Experts for their incessant and diligent efforts in making this material so useful for students.

I extend my Best Wishes to all the students for success in their future endeavours.

(Ashok Kumar)

HIMANSHU GUPTA, IAS
Director, Education & Sports

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Civil Lines
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail: diredu@nic.in

MESSAGE

"A good education is a foundation for a better future."
- Elizabeth Warren

Believing in this quote, Directorate of Education, GNCT of Delhi tries to fulfill its objective of providing quality education to all its students.

Keeping this aim in mind, every year support material is developed for the students of classes IX to XII. Our expert faculty members undertake the responsibility to review and update the Support Material incorporating thelatest changes made by CBSE. This helps the students become familiar with the new approaches and methods, enabling them to become good at problem solving and critical thinking. This year too, I am positive that it will help our students to excel in academics.

The support material is the outcome of persistent and sincere efforts of our dedicated team of subject experts from the Directorate of Education. This Support Material has been especially prepared for the students. I believe its thoughtful and intelligent use will definitely lead to learning enhancement.

Lastly, I would like to applaud the entire team for their valuable contribution in making this Support Material so beneficial and practical for our students.

Best wishes to all the students for a bright future.

(HIMANSHU GUPTA)

Dr. RITA SHARMA
Additional Director of Education
(School/Exam)

सत्यमेव जयते

Govt. of NCT of Delhi
Directorate of Education
Old Secretariat, Delhi-110054
Ph. : 23890185

D.O. No. PS/Addl.DE/Sch/2022/131
Dated: 01 सितम्बर, 2022

संदेश

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार का महत्वपूर्ण लक्ष्य अपने विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा निदेशालय ने अपने विद्यार्थियों को उच्च कोटि के शैक्षणिक मानकों के अनुरूप विद्यार्थियों के स्तरानुकूल सहायक सामग्री कराने का प्रयास किया है। कोरोना काल के कठिनतम समय में भी शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को निर्बाध रूप से संचालित करने के लिए संबंधित समस्त अकादमि समूहों और क्रियान्वित करने वाले शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कक्षा 9वीं से कक्षा 12वीं तक की सहायक सामग्रियों में सी.बी.एस.ई के नवीनतम दिशा–निर्देशों के अनुसार पाठयक्रम में आवश्यक संशोधन किए गए हैं। साथ ही साथ मूल्यांकन से संबंधित आवश्यक निर्देश भी दिए गए हैं। इन सहायक सामग्रियों में कठिन से कठिन सामग्री को भी सरलतम रूप में प्रस्तुत किया गया है ताकि शिक्षा निदेशालय के विद्यार्थियों को इसका भरपूर लाभ मिल सके।

मुझे आशा है कि इन सहायक सामग्रियों के गहन और निरंतर अध्ययन के फलस्वरूप विद्यार्थियों में गुणात्मक शैक्षणिक संवर्धन का विस्तार उनके प्रदर्शनो में भी परिलक्षित होगा। इस उत्कृष्ट सहायक सामग्री को तैयार करने में शामिल सभी अधिकारियों तथा शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ तथा सभी विद्यार्थियों को उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देती हूँ।

रीता शर्मा

(रीता शर्मा)

शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022-2023)

इतिहास

कक्षा : बारहवीं

(हिन्दी माध्यम)

निःशुल्क वितरण हेतु

दिल्ली पाठ्य-पुस्तक ब्यूरो द्वारा प्रकाशित

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

Constitution of India

Part IV A (Article 51 A)

Fundamental Duties

It shall be the duty of every citizen of India —

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wildlife and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

*(k) who is a parent or guardian, to provide opportunities for education to his child or, as the case may be, ward between the age of six and fourteen years.

Note: The Article 51A containing Fundamental Duties was inserted by the Constitution (42nd Amendment) Act, 1976 (with effect from 3 January 1977).

*(k) was inserted by the Constitution (86th Amendment) Act, 2002 (with effect from 1 April 2010).

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [1]**[SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC]** and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the [2][unity and integrity of the Nation];

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949 do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

---

1. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

Support Material

History

Class - XII

Review Committee

Team Members

1.	Dr. Anuj Rai (Group Leader)	HOS	SKV, No. 2, C-Block Janakpuri, Delhi

SUBJECT EXPERTS

2.	Dr. Harita Arora	Lecturer (History)	SBV, Jonapur New Delhi
3.	Ms. Savita	Lecturer (History)	RSKV, No. 2 Shakarpur Delhi
4.	Ms.Pragya Sinha	Lecturer (History)	School of Excellence Sector-22, Dwarka
5.	Mr. Santosh Kumar Mishra	Lecturer (History)	GBSSS, Baprola Delhi
6.	Mr. Shakeel Ahmad	Lecturer (History)	GBSSS, Zeenat Mahal Kamla Market, Delhi

HISTORY
COURSE STRUCTURE
CLASS XII (2022-23)
(Code No. 027)

One Theory Paper **Max. Marks-80**
Time:3 Hours

THEMES		Periods	Marks
Themes in Indian History Part-I			**25**
Theme 1	Bricks, Beads and Bones	15	
Theme 2	Kings, Farmers and Towns	15	
Theme 3	Kinship, Caste and Class	15	
Theme 4	Thinkers, Beliefs and Buildings	15	
Themes In Indian History Part-II			**25**
Theme 5	Through the Eyes of Travellers	15	
Theme 6	Bhakti –Sufi Traditions	15	
Theme 7	An Imperial Capital: Vijayanagar	15	
Theme 8 –	Peasants, Zamindars and the State	15	
Themes In Indian History Part-III			**25**
Theme 10	Colonialism and The Countryside	15	
Theme 11	Rebels and the Raj	15	
Theme 13	Mahatma Gandhi and the Nationalist Movement	15	
Theme 15	Framing the Constitution	15	
Including Map Work of The Related Themes		15	**5**
Total			**80**
Project work		**25**	**20**
Total		**220**	**100**

COURSE CONTENT

Class XII: Themes in Indian History		
Themes	**NOTE-** *This is not an exhaustive list. For reflective teaching- learning process, explicit Learning Objectives and Outcomes can be added by teachers during the course-delivery for student's real learning.*	
	Learning Objective	**Learning Outcomes**
Part-I **BRICKS, BEADS AND BONES** **The Harappan Civilization:** **Broad overview:** Early urb an centers **Story of discovery:** Harappan civilization **Excerpt:** Archaeological report on a major site **Discussion:** How it has been utilized by archaeologists/ historians	• Familiarize the learner with early urban centers as economic and social institution. • Introduce the ways in which new data can lead to a revision of existing notions of history.	At the completion of this unit students will be able to: • State and deduce the multi-lateral aspects of Harappan civilization in order to understand the first civilization of the world. • Develop an ability to use and analyze socio- economic, political aspects of Harappa • Investigate and interpret historical and contemporary sources and viewpoints of ASI and historians on Harappa.
KINGS, FARMERS AND TOWNS:Early States and Economies (c. 600 BCE-600 CE) **Broad overview:** Political and economic History from the Mauryan to the Gupta period **Story of discovery:** Inscriptions and the Decipherment of the script. Shifts in the Understanding of political and economic history. **Excerpt:** Ashokan inscription and Gupta period land grant **Discussion**: Interpretation of inscriptions by historians.	• Familiarize the learner with major trends in the political and economic history of the subcontinent. • Introduce inscripti onal analysis and the ways in which these have shaped the understanding of political and economic processes.	At the completion of this unit students will be able to: • Explain major trends in the 6th century BCE in order to understand the political and economic history of the subcontinent. • Analyze inscriptional evidences and the ways in which these have shaped the understanding of political and economic processes.
KINSHIP, CASTE AND CLASS **Early Society Societies (C. 600 BCE-600 CE)** **Broad overview:** **Social Histories: Using the**	• Familiarize the learners with issues in social history. • Introduce the	At the completion of this unit students will be able to • Analyze social norms in order to understand the perspectives of society given in the scriptures of

Mahabharata Issues in social history, including caste, class, kinship and gender **Story of discovery:** Transmission and publications of the Mahabharat **Excerpt:** from the Mahabharata, illustrating how it has been used by historians. **Discussion**: Other sources for reconstructing social history.	strategies of textual analysis and their use in reconstructing social history.	ancient India. • Examine the varied dimensions explored by historians in order to understand dynamic approach of Mahabharata.
THINKERS, BELIEFS AND BUILDINGS **Cultural Developments (c. 600 BCE - 600 CE)** **Broad overview:** **A History of Buddhism: Sanchi Stupa** A brief review of religious histories of Vedic religion, Jainism, Vaishnavism, Shaivism (Puranic Hinduism) b) Focus on Buddhism. **Story of discovery:** Sanchi stupa. **Excerpt:** Reproduction of sculptures from Sanchi. **Discussion:** Ways in which sculpture has been interpreted by historians, other sources for reconstructing the history of Buddhism.	• Discuss the major religious developments in early India. • Introduce strategies of visual analysis and their use in reconstructing the theories of religion.	At the completion of this unit students will be able to: • Compare the distinct religious facets in order to understand the religious developments in ancient India • Elucidate the rich religious sculpture and infer the stories hidden in it.
Part-II **THROUGH THE EYES OF TRAVELLERS** **Perceptions of Society (c. tenth to seventeenth century)**	• Familiarize the learner with the salient features of social histories described by the travellers.	At the completion of this unit students will be able to: • Identify the accounts of foreign travellers in order to

Broad Overview: outlines of social and cultural life as they appear in traveller's account. **Story of their writings:** A discussion of where they travelled, what they wrote and for whom they wrote. **Excerpts:** from Al Biruni, Ibn Battuta, Francois Bernier. **Discussion:** What these travel accounts can tell us and how they have been interpreted by historians.	• Discuss how traveller's accounts can be used as sources of social history.	understand the social political and economic life during the tenure of different rulers in the medieval period • Compare and contrast the perspectives of Al Biruni, Ibn Battuta and Bernier towards Indian society.
BHAKTI –SUFI TRADITIONS: **Changes in Religious Beliefs and Devotional Texts (c. eighth to eighteenth centuries)** **Broad overview:** a. Outline of religious developments during this period saints. b. Ideas and practices of the Bhakti-Sufi **Story of Transmission:** How Bhakti-Sufi compositions have been preserved. **Excerpt:** Extracts from selected Bhakti-Sufi works. **Discussion:** Ways in which these have been interpreted by historians.	• Familiarize the learner with the religious developments. • Discuss ways of analyzing devotional literature as sources of history.	At the completion of this unit students will be able to: • Summarize the philosophies of different Bhakti and Sufi saints to understand the religious developments during medieval period. • Comprehend the religious movement in order to establish unity, peace, harmony and brotherhood in society.
AN IMPERIAL CAPITAL: VIJAYANAGARA (c. fourteenth to sixteenth centuries) **Broad Over View: New Architecture: Hampi** a. Outline of new buildings	•Familiarize the learner with the new buildings that were built during the time. Discuss the ways in	At the completion of this unit students will be able to:

during Vijayanagar period-temples, forts, irrigation facilities. b. Relationship between ar chitecture and the political system **Story of Discovery:** Account of how Hampi was found. **Excerpt:** Visuals of buildings at Hampi **Discussion:** Ways in which historians have analyzed and interpreted these structures.	which architecture can be analyzed to reconstruct history.	• Classify the distinctive architectural contributions of the Vijayanagar empire to comprehend the richness of mingled cultures of deccan India • Analyze accounts of foreign traveller's on Vijayanagar in order to interpret political, social and cultural life of the city.
PEASANTS, ZAMINDARS AND THE STATE: Agrarian Society and the Mughal Empire (c. sixteenth-seventeenth centuries) **Broad overview: The Ain-i-Akbari** a. Structure of agrarian relations in the 16th and 17th centuries. b. Patterns of change over the period. **Story of Discovery:** Account of the compilation and translation of Ain I Akbari **Excerpt:** from the Ain-i-Akbari. **Discussion:** Ways in which historians have used texts to reconstruct history.	• Discuss the developments in agrarian relations. • Discuss how to supplement official documents with other sources.	At the completion of this unit students will be able to: • Comprehend the facets of agrarian developments in order to understand the relationship between the state and the agriculture during Mughal period. ompare and contrast the agrarian changes occurred during sixteenth and seventeenth centuries.

Part-III **COLONIALISM AND THE COUNTRYSIDE: Exploring Official Archives** **Broad overview:** **Colonialism and Rural Society: Evidence from Official Reports** a) Life of zamindars, peasants and artisans in the late18th century b). Permanent Settlement, Santhals and Paharias **Story of official records:** An account of why official Investigations in to rural societies were undertaken and the types of records and reports produced. **Excerpts:** From Fifth Report **Discussion:** What the offici al records tell and do not tell, and how they have bee n used by historians.	• Discuss how colonialism affected zamindars, peasants and artisans. • Comprehend the problems and limits of using official sources for understanding the lives of the people	At the completion of this unit students will be able to: • Compare and contrast the revenue systems introduced by the British in order to understand the economic aspects of colonization in India. • Analyze the colonial official records& reports in order to understand the divergent interest of British and Indians.
REBELS AND THE RAJ: 1857 Revolt and its Representations- **Broad overview:** a. The eventsof1857-58. b. Vision of Unity c. How these events were recorded and narrated. **Focus:** Lucknow **Excerpts:** Pictures of 1857. Extracts from contemporary accounts. **Discussion:** How the pictures of 1857 shaped British opinion of what had happened.	• Discuss how the events of 1857 are being interpreted. • Discuss how visual material can be used by historians.	At the completion of this unit students will be able to: Correlate the Planning and coordination of the rebels of 1857 to infer its domains and nature. • Examine the momentum of the revolt to understand its spread. • Analyze how revolt created vision of unity amongst Indians. • Identify and interpret visual images to understand the emotions portrayed by the nationalist and British

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT: **Civil Disobedience and Beyond** **Broad overview:** a. The Nationalist Movement 1918 -48. b. The nature of Gandhian politics and leadership. **Focus:** Mahatma Gandhi and the three movements and his last days as "finest hours" **Excerpts:** Reports from English and Indian language newspapers and other contemporary writings. **Discussion:** How newspapers can be a source of history.	• Familiarize the learner with significant elements of the Nationalist movement and the nature of Gandhian leadership. • Discuss how Gandhi was perceived by different groups. Discuss how historians need to read and interpret newspapers diaries and letters as a historical so	At the completion of this unit students will be able to: • Correlate the significant elements of the nationalist movement and the nature of ideas, individuals, and institutions under the Gandhian leadership. • Analyze the significant contributions of Gandhiji to understand his mass appeal for nationalism. Analyze the perceptions and contributions of different communities towards the Gandhian movement. • Analyze the ways of interpreting historical source such as newspapers, biographies and auto-biographies diaries and letters.
FRAMING THE CONSTITUTION: **The Beginning of a New Era** **Broad overview: The Making of the Constitution an overview:** a. Independence and then new nation state. b. The making of the Constitution **Focus:** The Constituent Assembly Debates **Excerpts:** from the debates **Discussion:** What such debates reveal and how they can be analyzed.	• Discuss how the founding ideals of the new nation state were debated and formulated. • Understand how such debates and discussions can be read by historians.	At the completion of this unit students will be able to: • Highlight the role of Constituent Assembly to understand functionaries in framing the constitution of India. • Analyze how debates and discussions around important issues in the Constituent Assembly shaped our Constitution.

LIST OF MAPS

Book 1		
1	Page 2	Mature Harappan sites: • Harappa, Banawali, Kalibangan, Balakot, Rakhigarhi, Dholavira, Nageshwar, Lothal, Mohenjodaro, Chanhudaro, KotDiji.
2	Page 30	Mahajanapada and cities: • Vajji, Magadha, Kosala, Kuru, Panchala, Gandhara, Avanti, Rajgir, Ujjain, Taxila, Varanasi.
3	Page 33	Distribution of Ashokan inscriptions: • Kushanas, Shakas, Satavahanas, Vakatakas,Guptas • Cities/towns: Mathura, Kannauj, Puhar,Braghukachchha • Pillar inscriptions – Sanchi, Topra, Meerut Pillar and Kaushambi. • Kingdom of Cholas, Cheras and Pandyas.
4	Page 43	Important kingdoms and towns: • Kushanas, Shakas, Satavahanas, Vakatakas,Guptas • Cities/towns: Mathura, Kanauj, Puhar, Braghukachchha, Shravasti, Rajgir, Vaishali, Varanasi,Vidisha
5	Page 95	Major Buddhist Sites: • Nagarjunakonda, Sanchi, Amaravati, Lumbini, Nasik, Bharhut, Bodh Gaya, Ajanta.
Book 2		
6	Page 174	Bidar, Golconda, Bijapur, Vijayanagar, Chandragiri, Kanchipuram, Mysore, Thanjavur, Kolar, Tirunelveli
7	Page 214	Territories under Babur, Akbar and Aurangzeb: • Delhi, Agra, Panipat, Amber, Ajmer, Lahore, Goa.
Book 3		
8	Page 297	**Territories/cities under British Control in1857**:Punjab, Sindh, Bombay, Madras Fort St. David, Masulipatam, Berar, Bengal, Bihar, Orissa, Avadh, Surat, Calcutta, Patna, Benaras, Allahabad and Lucknow.
9	Page 305	**Main centres of the Revolt of 1857**:Delhi, Meerut, Jhansi, Lucknow, Kanpur, Azamgarh, Calcutta, Benaras, Gwalior, Jabalpur, Agra, Awadh.
10		**Important centres of the National Movement**: Champaran, Kheda, Ahmedabad, Benaras, Amritsar, Chauri Chaura, Lahore, Bardoli, Dandi, Bombay (Quit India Resolution), Karachi.

FEW SUGGESTIVE TOPICS FOR CLASS XII PROJECTS

1. The Indus Valley Civilization-Archeological Excavations and New Perspectives
2. The History and Legacy of Mauryan Empire
3. "Mahabharat"- The Great Epic of India
4. The History and Culture of the Vedic period
5. Buddha Charita
6. A Comprehensive History of Jainism
7. Bhakti Movement- Multiple interpretations and commentaries.
8. "The Mystical Dimensions of Sufism
9. Global legacy of Gandhian ideas
10. The Architectural Culture of the Vijayanagar Empire
11. Life of women in the Mughal rural society
12. Comparative Analysis of the Land Revenue Systems introduced by the Britishers in India
13. The Revolt of 1857- Causes; Planning & Coordination; Leadership, Vision of Unity
14. The Philosophy of Guru Nanak Dev
15. The Vision of Kabir
16. An insight into the Indian Constitution

(Projects are an imperative component in enhancing students learning with the related themes. In the research project, students can go beyond the textbook and explore the world of knowledge. They can conceptualize under the embedded themes. Forms of rubrics are a significant aspect and to be discussed in the classroom itself for clear understanding of concept & for assessment.)

Note: Please refer Circular No. Acad.16/2013 dated 17.04.2013 for complete guidelines

Note: Kindly refer to the guidelines on project work for classes XI and XII given below: -

Guidelines for History Project Work: 20 Marks

One Project to be done throughout the session, as per the existing scheme.

1. **Steps involved in the conduct of the project:**

Students may work upon the following lines as a suggested flow chart:

Choose a Title/Topic

↓

Need of the Study, Objective of the Study

↓

Hypothesis

↓

Content -Timeline, Maps, Mind maps, Pictures, etc.

↓

(Organization of Material/Data

↓

Present Material/Data)

↓

Analyzing the Material/Data for Conclusion

↓

Draw the Relevant Conclusion

↓

Bibliography

2. **Expected Checklist for the Project Work:**

- Introduction of topic/title
- Identifying the causes, events, consequences and/or remedies
- Various stakeholders and effect on each of them
- Advantages and disadvantages of situations or issues identified
- Short-term and long-term implications of strategies suggested during research
- Validity, reliability, appropriateness, and relevance of data used for research work and for presentation in the project file
- Presentation and writing that is succinct and coherent in project file
- Citation of the materials referred to, in the file in footnotes, resources section, bibliography etc.

3. **Assessment of Project Work:**

- Project Work has broadly the following phases: Synopsis/ Initiation, Data Collection, Data Analysis and Interpretation, Conclusion.
- The aspects of the project work to be covered by students can be assessed during the academic year.
- 20 marks assigned for Project Work can be divided in the following manner:

PROJECT WORK: 20 Marks

The teacher will assess the progress of the project work in the following manner:

Month	Periodic Work	Assessment Rubrics	Marks
April -July	Instructions about Project Guidelines, Background reading Discussions on Theme and Selection of the Final Topic, Initiation/ Synopsis	Introduction, Statement of Purpose/Need and objectives of the study, Hypothesis/Research Question, Review of Literature, Presentation of Evidence, Methodology, Questionnaire, Data Collection.	6
August - October	Planning and organization: forming an action plan, feasibility, or baseline study, Updating/modifying the action plan, Data Collection	Significance and relevance of the topic; challenges encountered while conducting the research.	5
November - January	Content/data analysis and interpretation. Conclusion, Limitations, Suggestions, Bibliography, Annexures and overall presentation of the project.	Content analysis and its relevance in the current scenario. Conclusion, Limitations, Bibliography, Annexures and Overall Presentation.	5
January/ February	**Final Assessment and VIVA by both Internal and External Examiners**	External/ Internal Viva based on the project	4
		TOTAL	**20**

4. Viva-Voce

- At the end, each learner will present the research work in the Project File to the External and Internal examiner.
- The questions should be asked from the Research Work/ Project File of the learner.
- The Internal Examiner should ensure that the study submitted by the learner is his/her own original work.

In case of any doubt, authenticity should be checked and verified. *****

विषय सूची

क्रम सं.	अभ्यास	पृष्ठ संख्या
1	ईंटे, मनके तथा अस्थियाँ (हड़प्पा सभ्यता)	1
2	राजा, किसान और नगर (आंरभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ) लगभग 600 ई. पू. से 600 ई.	16
3	बंधुत्व, जाति तथा वर्ग : आरंभिक समाज लगभग 600 ई. पू. से 600 ई.	35
4	विचारक, विश्वास और इमारतें (सांस्कृतिक विकास) लगभग 600 ई. पू. से 600 ई.	60
5	यात्रियों के नजरिए से समाज के बारे में उनकी समझ (लगभग दसवीं सदी से सत्रहवीं सदी तक)	63
6	भक्ति-सूफी परंपराएँ धार्मिक विश्वासों में बदलाव और श्रद्धा ग्रंथ (लगभग आठवीं से अठारवहीं सदी तक)	77
7	एक साम्राज्य की राजधानी : विजयनगर (लगभग चौदहवीं से सोलहवीं सदी तक)	92
8	किसान, जमींदार और राज्य : कृषि समाज और मुगल साम्राज्य (लगभग सोलहवीं से सत्रहवीं सदी तक)	107
9	उपनिवेशवाद और देहात : सरकारी अभिलेखों का अध्ययन	124

विषय सूची

क्रम सं.	अभ्यास	पृष्ठ संख्या
10	विद्रोही और राज 1857 का आंदोलन और उसके व्याख्यान	136
11	महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन (सविनय अवज्ञा और उससे आगे)	154
12	संविधान का निर्माण (एक नए युग की शुरूआत)	173
13	अभ्यास प्रश्न पत्र (हल रहित)	191

विषय–1
ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ (हड़प्पा सभ्यता)

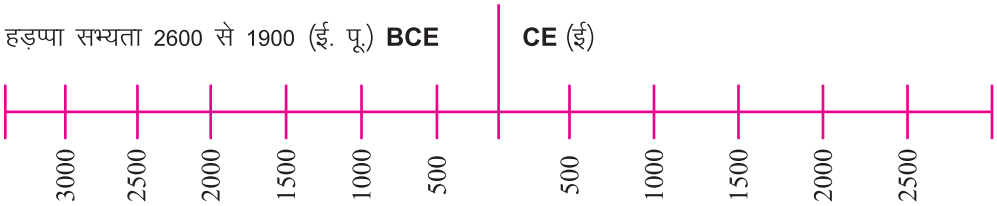

स्मरणीय बिन्दु :–

1. हड़प्पा संस्कृति को सिंधु नदी की घाटी में फैले होने के कारण सिंधु घाटी की सभ्यता भी कहते हैं। पुरातत्त्वविद संस्कृति शब्द का प्रयोग पुरावस्तुओं के ऐसे समूह के लिए करते हैं जो एक विशिष्ट शैली के होते हैं और सामान्यतया एक साथ, एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र तथा काल–खण्ड से संबंधित पाए जाते हैं।
2. इस सभ्यता का नामकरण हड़प्पा नामक स्थान, जहाँ पर यह संस्कृति पहली बार खोजी गई थी के नाम पर किया गया है।
3. हड़प्पा संस्कृति के दो प्रसिद्ध केन्द्र हड़प्पा और मोहनजोदड़ो है।
4. हड़प्पा सभ्यता की खोज 1921–22 में दया राम साहनी, रखालदास बनर्जी और सर जॉन मार्शल के नेतृत्व में हुई।
5. हड़प्पा सभ्यता का काल (विकसित सभ्यता) 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व के बीच माना जाता है।
6. हड़प्पा सभ्यता की जानकारी के प्रमुख स्त्रोत – खुदाई में मिली इमारतें, मृद भाण्ड, औजार, आभूषण, मूर्तियाँ, मुहरें इत्यादि हैं।
7. हड़प्पा सभ्यता का विस्तार क्षेत्र – अफगानिस्तान, जम्मू, बलूचिस्तान (पाकिस्तान) गुजरात, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश।
8. इसके प्रमुख स्थल – नागेश्वर, बालाकोट, चन्हुदड़ो, कोटदीजी, धौलावीरा, लोथल, कालीबंगन, बनावली, राखीगढ़ी इत्यादि।
9. यह एक नगरीय सभ्यता थी। इसकी सबसे प्रमुख विशेषता इसकी नगर निर्माण योजना है।
10. हड़प्पा सभ्यता की बस्तियाँ दो भागों में विभाजित थी, दुर्ग तथा निचला शहर।
11. निचला शहर आवासीय भवनों के उदाहरण प्रस्तुत करता है तथा दुर्ग पर बनी संरचनाओं का प्रयोग संभवतः विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए किया जाता था।

12. हड़प्पा सभ्यता में सड़कों तथा गलियों को एक ग्रिड पद्धति द्वारा बनाया गया था और ये एक दूसरे को समकोण पर काटती थी।
13. जल निकास प्रणाली अद्‌भुत थी। घरों की नालियों को गली की नालियों से जोड़ा जाता था। नालियाँ पक्की ईटों से बनाई गई थी।
14. हड़प्पा सभ्यता में गेहूँ, जौ, दाल, सफेद चना तथा तिल जैसे खाद्य पदार्थों के इस्तेमाल का अनुमान है।
15. हड़प्पा सभ्यता में – भेड़, बकरी, भैंस, सूअर जैसे जानवरों के अस्तित्व का अनुमान है।
16. हड़प्पा में पाई जाने वाली लिपि को पढ़ने में विद्वान अभी तक असमर्थ है।
17. हड़प्पा की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। इसमें चिह्नों की संख्या 375 से 400 के बीच थी।
18. हड़प्पा सभ्यता में बाट का प्रयोग संभवतः आभूषणों व मनकों को तोलने के लिए होता था जो चर्ट नामक पत्थर से बनाए जाते थे। बाटों के निचले मानदंड द्विआधारी थे।
19. चन्हुदड़ों शिल्प उत्पादन का एक प्रमुख केन्द्र था। शिल्प कार्यों में मनके बनाना, शंख की कटाई, धातु कर्म, मुहर निर्माण तथा चर्ट बाट बनाना सम्मिलित थे।
20.

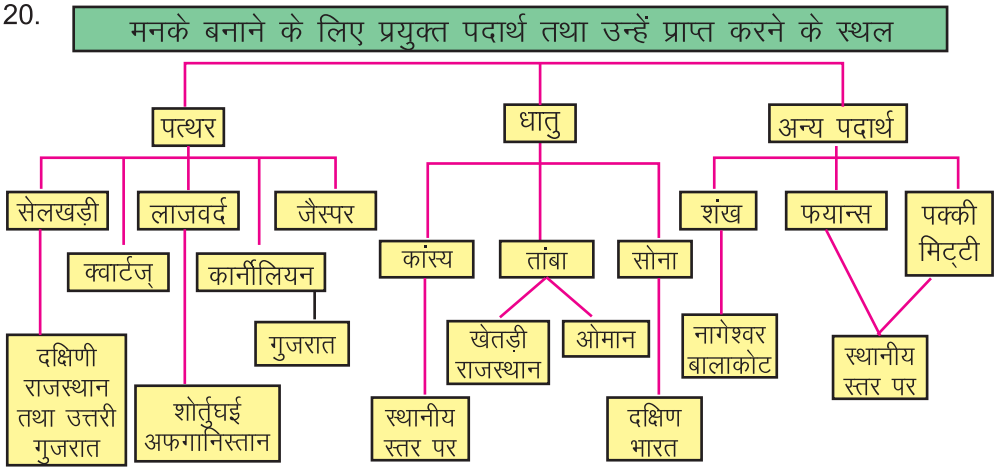

21. मुहरों और मुद्रांकनों का प्रयोग लंबी दूरी के संपर्कों को सुविधाजनक बनाने के लिए होता था।
22. हड़प्पा स्थलों से मिले शवाधानों में आमतौर पर मृतकों को गर्तों में दफनाया गया था। इनके साथ मृदभाण्ड आदि के अवशेष मिले हैं। शवाधानों के अध्ययन से सामाजिक आर्थिक विभिन्नता का पता चलता है।

23. हड़प्पा सभ्यता के पतन के संभावित कारण

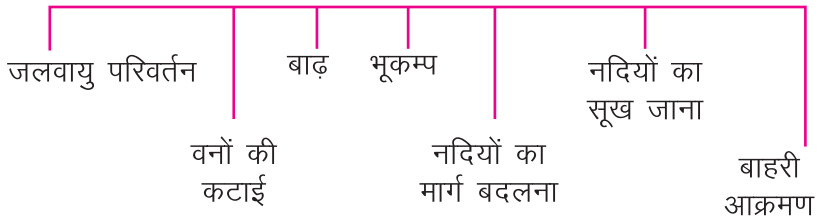

24. हड़प्पा सभ्यता के हर घर में ईंटों के फर्श से बना एक स्नानघर होता या जिसकी नालियाँ दीवार के माध्यम से सड़क की नालियों से जुड़ी हुई थीं।

25. चन्हूदड़ों लोथल एवं हाल ही में धौलावीरा में विशिष्ट प्रकार के छिद्र करने वाले औजार प्राप्त हुए हैं।

26. मँहगें पदार्थो से बनी दुर्लभ वस्तुएँ सामान्यतः मोहनजोदड़ों और हड़प्पा जैसी बड़ी बस्तियों से मिली हैं जैसे स्वर्णाभूषण व फयॉन्स से बने लघुपात्र।

27. नागेश्वर तथा बालाकोट समुद्र तट के नजदीक स्थित थे तथा शंख से बनी वस्तुओं (चूडियाँ, करछियाँ इत्यादि) के निर्माण के विशिष्ट केंद्र थे।

28. कच्चा माल प्राप्त करने के लिए सुदूर क्षेत्रों में विशेष अभियान भेजे जाते थे जैसे ताँबे के लिए खेतडी, ओमान व सोने के लिए दक्षिण भारत के क्षेत्र।

29. भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के पहले डायरेक्टर जनरल कनिंघम को भ्रम था कि भारतीय इतिहास का प्रांरभ गंगा की घाटी में पनपे पहले शहरों के साथ ही हुआ था।

30. हडप्पा सभ्यता की योजना, भवन निर्माण कला, व्यापार एवं आधुनिकता के आधार पर इसे एक नवीन प्राचीन सभ्यता की संज्ञा भी दी जाती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक वाले)

1. हड़प्पा सभ्यता की खोज कब हुई ? किन विद्वानों के नेतृत्व में इसकी खोज हुई?

2. हड़प्पा–पूर्व की बस्तियों की कोई एक विशेषता लिखिए।

3. सर जॉन मार्शल कौन थे ?

4. हड़प्पा लिपि की कोई एक विशेषता लिखिए।

5. हड़प्पावासियों द्वारा सिंचाई के लिए प्रयोग में लाये जाने वाले प्रमुख साधन का उल्लेख कीजिए।

6. फयॉन्स क्या होता है ?

7. हड़प्पा सभ्यता के किन देशों के साथ व्यापारिक संबंध थे ?

8. हड़प्पा सभ्यता के निवासी किन देवी–देवताओं की पूजा करते थे ?

9. हड़प्पा सभ्यता के किन्हीं दो प्रमुख क्षेत्रों के नाम लिखिए।

10. हड़प्पा सभ्यता की बस्तियाँ.....और.....में विभाजित थी।

11. मोहनजोदड़ों में अनुमानित कुओं की संख्या थीः

क) लगभग 500
ख) लगभग 600
ग) लगभग 700
घ) लगभग 800

12. हड़प्पा सभ्यता की लिपि की मुख्य विशेषता थी–

क) यह दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी
ख) यह बाईं से दाईं ओर लिखी जाती थी
ग) यह ऊपर से नीचे की ओर लिखी जाती थी
घ) यह नीचे से ऊपर की ओर लिखी जाती थी

13. हड़प्पा व मोहनजोदड़ो स्थित है–

क) वर्तमान महाराष्ट्र में
ख) वर्तमान पाकिस्तान में
ग) वर्तमान हरियाणा में
घ) वर्तमान में से कोई नहीं

14. हडप्पा सभ्यता के किन देशों के साथ व्यापारिक संबध थे–

क) चीन, जापान, कोरिया
ख) रूस, मंगोलिया, इटली
ग) ईरान, इराक, मिश्र
घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

15. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पहले डायरेक्टर जनरल थेः

क) जॉन मार्शल
ख) कनिंघम
ग) आर.ई.एम.व्हीलर
घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

16. हड़प्पा लिपि में चिन्हों की संख्या थीः

क) 500–700
ख) 375–400
ग) 200–300
घ) 300–350

17. शिल्प उत्पादन का एक प्रमुख केंद्र थाः
क) मोहनजोदडो
ख) हड़प्पा
ग) कालीबंगन
घ) चन्हुदड़ो

18. हल से जुते खेत के साक्ष्य मिले हैंः
क) हडप्पा से
ख) कालीबंगन से
ग) मोहनजोदडो से
घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

19. शंख से बनी वस्तुओं का प्रमुख केंद्र था–
क) नागेश्वर
ख) चन्हुदडो
ग) राखीगढी
घ) हड़प्पा

20. हड़प्पा सभ्यता के पतन का प्रमुख कारण थाः
क) जलवायु परिवर्तन
ख) लगातार अकाल पड़ना
ग) प्राकृतिक आपदाएँ
घ) उपरोक्त सभी

21. दिए गए चित्र को पहचानिए तथा नाम लिखिए।

उद्धरण आधारित प्रश्न (3 अंक वाले)

प्रश्न 1. नीचे दिए गए स्रोत को ध्यान पूर्वक पढ़िए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

दुर्ग

हालांकि अधिकाशं हड़प्पा बस्तियों में एक छोटा ऊँचा पश्चिमी तथा एक बड़ा लेकिन निचला पूर्वी भाग है, पर इस नियोजन में विविधताएँ भी हैं। धौलावीरा तथाा लोथल (गुजरात) जैसे स्थलों पर पूरी बस्ती किलेबंद थी, तथा शहर के कई हिस्से भी दीवारों से घेर कर अलग किए गए थे। लोथल में दुर्ग दीवार से घिरा तो नहीं था पर कुछ ऊँचाई पर बनाया गया था।

A) सिंधु घाटी सभ्यता में हड़प्पा के बाद दूसरा खोज गया सबसे प्रसिद्ध स्थल है –

(क) चन्हुदड़ों (ख) बालाकोट
(ग) नागेश्वर (घ) मोहनजोदड़ो

B) निम्नलिखित में से जो संरचनाएं दुर्ग में पाई गई हैं, वे हैं –

(क) मालगोदाम
(ख) वृहत् स्नानागार
(ग) क एव ख दोनों
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

C) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में और दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है–

कथन (A) – दुर्ग को एक ऊंचे स्थल पर बनाया गया।
कथन (R) – दुर्ग की संरचनाएं कच्चे ईंटों के चबूतरे पर बनी थी।

(क) केवल कथन (A) सही है।
(ख) केवल कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है पर कारण (R) कथन (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।

D) निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए :–

i. दुर्ग को किलेबंद किया जाता था।

ii. दुर्ग पर ऐसी संरचनाएं प्राप्त हुई है जिनका प्रयोग संभवतः विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए किया गया था।

(क) (i) और (ii) दोनों सत्य है। (ख) केवल (i) ही सत्य है

(ख) केवल (ii) सत्य है (घ) कोई भी कथन सत्य नहीं है।

प्रश्न 2. दिए गए चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

प्र.1. ये चित्र है –

(क) आद्य शिव (ख) मात्रदेवी

(ग) मिट्टी का खिलौना (घ) पुरोहित राणा

प्र.2. पुरातत्त्वविदों को सबसे ज्यादा समस्या हड़प्पा सभ्यता के जिस क्षेत्र की व्याख्या करने में आती है, वह है –

(क) शासक वर्ग की (ख) आम जनता की

(ग) धार्मिक क्षेत्र की (घ) व्यापार सम्बन्धी क्षेत्र की

प्र.3. मुहावरों पर मिले एक सींग वाले जानवर को कहा गया है –

(क) वृषभ (ख) एकश्रृंगी

(ग) आद्य शिव (घ) मातृ देवी

प्र.4. निम्न कथनों को ध्यान से पढ़िए तथा सही विकल्प चुनिए।

(i) आधशिव को पशुपति नाथ भी कहा गया है।

(ii) मृणमूति आभूषणों से लदी हुई नारी की मूर्ति है।

(क) केवल (i) सही है (ख) केवल (ii) सही है

(ग) (i) एवं (ii) दोनों सही है (घ) कोई भी सही नहीं है

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक वाले)

1. मोहनजोदड़ो के विशाल स्नानागार का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
2. हड़प्पा निवासियों की आर्थिक गतिविधियों पर प्रकाश डालें।
3. हड़प्पाई समाज में सामाजिक आर्थिक भिन्नताओं का अवलोकन करने के लिए पुरातत्वविद किन विधियों का प्रयोग करते थे ?
4. हड़प्पा वासियों के धार्मिक विश्वासों की जानकारी प्राप्त करने में वहाँ से प्राप्त मुहरें किस प्रकार सहायक होती हैं ? संक्षेप में वर्णन कीजिए।
5. पुरातत्वविद शिल्प उत्पादन केन्द्रों की पहचान कैसे करते हैं ?
6. जनरल कनिंघम कौन थे? वह किस प्रकार हड़प्पा के महत्व को समझने में चूक गए ?
7. हड़प्पा सभ्यता की 'जल निकास प्रणाली' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
8. हड़प्पा के पश्चिमी एशिया के साथ व्यापारिक संबंधों का वर्णन कीजिए।
9. हड़प्पा सभ्यता के अंत के लिए कौन से कारण उत्तरदायी थे ? (कोई तीन)
10. मोहनजोदड़ो के आवासीय भवनों की विशिष्ट विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
11. हड़प्पाई लिपि को एक रहस्यमयी लिपि क्यों कहा गया है ? इसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (कोई तीन)
12. सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों की खाद्य सामग्री के बारे में आप क्या जानते हैं? स्पष्ट कीजिए।
13. हडप्पा सभ्यता की तकनीक व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्या उपलब्धियाँ रही? कोई तीन उपलब्धियाँ लिखिए।
14. जान मार्शल कौन थे? उनका भारतीय इतिहास में क्या योगदान रहा? स्पष्ट कीजिए।
15. इतिहासकार किस प्रकार से इतिहास का पुर्ननिर्माण करते हैं? वर्णन कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक वाले)

1. हड़प्पा सभ्यता की नगर निर्माण योजना का विस्तार से वर्णन कीजिए। (संकेत–पृष्ठ संख्या 5–8, एन.सी.ई.आर.टी.)
2. हड़प्पा सभ्यता की मुख्य देन या उपलब्धियाँ कौन–कौन सी हैं ? (संकेत पृ. सं. (संकेत पृ. सं. 5,6,7,13,15, एन.सी.ई.आर.टी.)
3. हड़प्पा संस्कृति की कृषि और कृषि प्रौद्योगिकी के मुख्य पक्ष कौन से थे ? (संकेत पृ. सं. 2,3, एन.सी.ई.आर.टी.)
4. भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के डायरेक्टर जनरल के रूप में आर, ई. एम. व्हीलर की उपलब्धियों का उल्लेख करें। (संकेत पृ. सं. 21, एन.सी.ई.आर.टी.)
5. सिंधु घाटी सभ्यता की आर्थिक एवं धार्मिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (संकेत पृ0 9,10,12,23 , एन.सी.ई.आर.टी.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1. हड़प्पा सभ्यता की नगर निर्माण योजना–
   (1) एक नगरीय सभ्यता।
   (2) बस्तियाँ दो भागों में विभाजित – दुर्ग एवं निचला शहर।
   (3) सड़कें ग्रिड पद्धति पर आधारित।
   (4) पक्की ईंटों से बनी ढकी हुई नालियाँ।
   (5) जल निकासी का उत्तम प्रबंध।
   (6) विशेष प्रकार के भवनों का निर्माण जैसे स्नानागार, अन्नागार इत्यादि।
   (7) घरों की नालियाँ गली की मुख्य नाली से जुड़ी।
   (8) पक्की ईंटों तथा मिट्टी से बने मकान।
   (9) दो मंजिला मकानों का निर्माण।
   (10) ऊपर की मंजिल पर जाने के लिए सीढ़ियों का प्रयोग
2. हड़प्पा सभ्यता की मुख्य देन कुछ इस प्रकार हैं।
   (1) नगर निर्माण योजना।
   (2) शिल्प उत्पादन शैली।
   (3) सार्वजनिक भवनों का निर्माण।
   (4) उत्कृष्ट जल निकासी।

(5) मुहरों का निर्माण।

(6) अंतर्देशीय एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार।

(7) एक नगरीय सभ्यता की संकल्पना।

(8)कृषि एवं पशुपालन।

(9) आभूषणों का प्रयोग।

(10) निपुण नागरिक प्रबंधन।

(11) भवन निर्माण कला एवं स्थापत्य कला

(संकेत पृष्ठ सं. 5, 6, 7, 13, 15, एन.सी.ई.आर.टी)

3. हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न स्थलों से कृषि उत्पादन के पर्याप्त अवशेष/साक्ष्य मिलें हैं।

(1) गेहूँ जौ, दाल, सफेद चने, तिल इत्यादि के इस्तेमाल का अनुमान है।

(2) कुछ स्थानों पर चावल की खेती के अवशेष भी मिले हैं।

(3) कृषि के साथ पशुपालन के भी साक्ष्य हैं।

(4) शिकार के भी पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध हैं।

(5) प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर अनुमान है कि जोतने के लिए बैल का प्रयोग होता था।

(6) खेत जोतने के लिए धातु अथवा पत्थर के हल का उपयोग होता था।

(7) सिंचाई के लिए नहरों, कुँओं तथा जलाशयों के भी प्रमाण मिले हैं।

(संकेत पृष्ठ सं. 2, 3, एन.सी.ई.आर.टी)

4ण (1) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के डायरेक्टर जनरल के रूप में (R.E.M Wheeler) आर. ई. एम. व्हीलर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

(2) भूतपूर्व सैनिक होने के कारण साक्ष्यों को सुरक्षित निकालने में उनका अनुभव काफी काम आया।

(3) हड़प्पा सभ्यता में प्राप्त टीलों को क्षैतिज रूप से खुदाई करने के बजाय विभिन्न परतों को सुरक्षित अध्ययन करना उन्होंने उचित समझा।

(4) व्हीलर द्वारा प्राप्त स्तर विन्यास के आधार पर हड़प्पा को समझने में काफी मदद मिलीं।

(5) व्हीलर ने अपने संस्मरण में लिखा है कि 1944 में एक गर्म रात में चार मील एक तांगे की सवारी कर वे हड़प्पा पहुंचे। उन्हें यह शक हो गया कि उनके इस जुनून को देखकर लोग उन्हें पागल ही ना समझ लें।

(6) उनके प्रयासों को देखकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ही हड़प्पा के विषय में लोगों की रूचि बढ़ने लगी।

(संकेत पृष्ठ सं. 21, एन.सी.ई.आर.टी)

5. (1) आर्थिक संपन्नता तथा धार्मिक विशेषताओं के पर्याप्त साक्ष्य मिले हैं।

(2) शवाधानों के अध्ययन से समाज में आर्थिक भिन्नताओं का पता चलता है।

(3) महिलाएँ तथा पुरुष आभूषणों का प्रयोग करते थे। आज की तरह उस समय भी स्वर्ण एक कीमती वस्तु थी।

(4) कीमती वस्तुओं, पत्थर, धतु आदि का अंतर्देशीय तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार होता था।

(5) मुहरों पर अनुष्ठान के दृश्य प्राप्त हुए हैं जो धर्म एवं उपासना के संकेत हैं।

(6) आभूषणों से लदी मृण्मूर्तियां मिली हैं जिन्हें मातृदेवी की संज्ञा दी गयी हैं।

(7) कुछ साक्ष्यों से शिव उपासना के संकेत भी मिलते हैं।

(संकेत पृष्ठ सं. 9, 10, 12, 23 एन.सी.ई.आर.टी)

विषय–1

ईंटे, मनके तथा अस्थियाँ

अनुच्छेदों पर आधारित प्रश्न (5 अंक वाले)

1. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

(अब तक खोजी गई प्राचीनतम प्रणाली।)

नालियों के विषय में मैके लिखते हैं–''निश्चित रूप से यह अब तक खोजी गई सर्वथा संपूर्ण, प्राचीन प्रणाली है।'' हर आवास को गली की नालियों से जोड़ा गया था। मुख्य नाले गारे में जमाई गई ईंटों से बने थे और इन्हें ऐसी ईंटों से ढका गया था जिन्हें सफाई के लिए हटाया जा सके। कुछ स्थानों पर ढकने के लिए चूना पत्थर की पट्टिका का प्रयोग किया गया था। घरों की नालियाँ पहले एक हौदी या मलकुंड में खाली होती थी, जिसमें ठोस पदार्थ जमा हो जाता था और गंदा पानी गली की नालियों में बह जाता था। बहुत लंबे नालों में कुछ अंतरालों पर सफाई के लिए हौदियाँ बनाई गई थी। यह पुरातत्व का एक अजूबा ही है कि ''मलबे मुख्यतः रेत के छोटे–छोटे ढेर सामान्यतः निकासी के नालों के अगल–बगल पड़े मिले हैं जो यह दर्शाता है कि नाली की सफाई के बाद कचरे को हमेशा हटाया नहीं जाता था।''

जल निकास प्रणालियाँ केवल बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि ये कई छोटी बस्तियों में भी मिली थी, लोथल में आवासों के निर्माण के लिए कच्ची ईंटों का प्रयोग हुआ था, वहीं नालियाँ पक्की ईंटों से बनाई गई थी।

1. हड़प्पा सभ्यता की जल निकास प्रणाली कोई एक विशेषता बताइए। 1
2. हड़प्पा सभ्यता की जल निकासी को पुरातत्व का अनूठा उदाहरण क्यों कहा गया? 2
3. नालियों के विषय में मैके के क्या विचार थे? 2

2. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए और अंत में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

'पुरावस्तुओं की पहचान कैसे की जाती है'

भोजन तैयार करने की प्रक्रिया में अनाज पीसने के यंत्र तथा उन्हें आपस में मिलाने, मिश्रण करने तथा पकाने के लिए बरतनों की आवश्यकता थी। इन सभी को पत्थर धातु तथा मिट्टी से बनाया जाता था। यहाँ एक महत्वपूर्ण हड़प्पा स्थल मोहनजोदड़ों पर सबसे आरंभिक रिपोर्ट में से कुछ एक **उद्धरण** दिए जा रहे हैं।

अवतल चक्कियां.....बड़ी संख्या में मिली हैं.....और ऐसा प्रतीत होता है कि अनाज पीसने के लिए प्रयुक्त ये एकमात्र साधन थी। साधारणतः ये चक्कियाँ स्थूलतः कठोर, कंकरीले

अग्निज अथवा बलुआ पत्थर से निर्मित थी और आमतौर पर इनसे अत्यधिक प्रयोग के संकेत मिलते हैं। चूंकि इन चक्कियों के तल सामान्यतया उत्तल हैं, निश्चित रूप से इन्हें जमीन में अथवा मिट्टी में जमा कर रखा जाता होगा जिससे उन्हें हिलने से रोका जा सके। दो मुख्य प्रकार की चक्कियाँ मिली हैं। एक वे हैं जिन पर एक दूसरा छोटा पत्थर आगे–पीछे चलाया जाता था, जिससे निचला पत्थर खोखला हो गया था तथा दूसरी वे हैं जिनका प्रयोग संभवतः केवल 'सालन या तरी बनाने के लिए जड़ी–बूटियों तथा मसालों को कूटने के लिए किया जाता था। इन दूसरे प्रकार के पत्थरों को हमारे श्रमिकों द्वारा 'सालन पत्थर' का नाम दिया गया है तथा हमारे बावर्ची ने एक वही पत्थर रसोई में प्रयोग के लिए संग्रहालय से उधार मांगा है। (अर्नेस्ट, मैके, फर्दर एक्सकैलेशन्स एट मोहनजोदड़ो,1937 से उद्धृत)

1. अवतल चक्कियों की एक विशेषता लिखिए। 1

2. चक्कियाँ कौन–कौन से पत्थरों से निर्मित की जाती थी। 2

3. इतिहासकारों के लिए हड़प्पाई बरतनों के महत्व को स्पष्ट कीजिए। 2

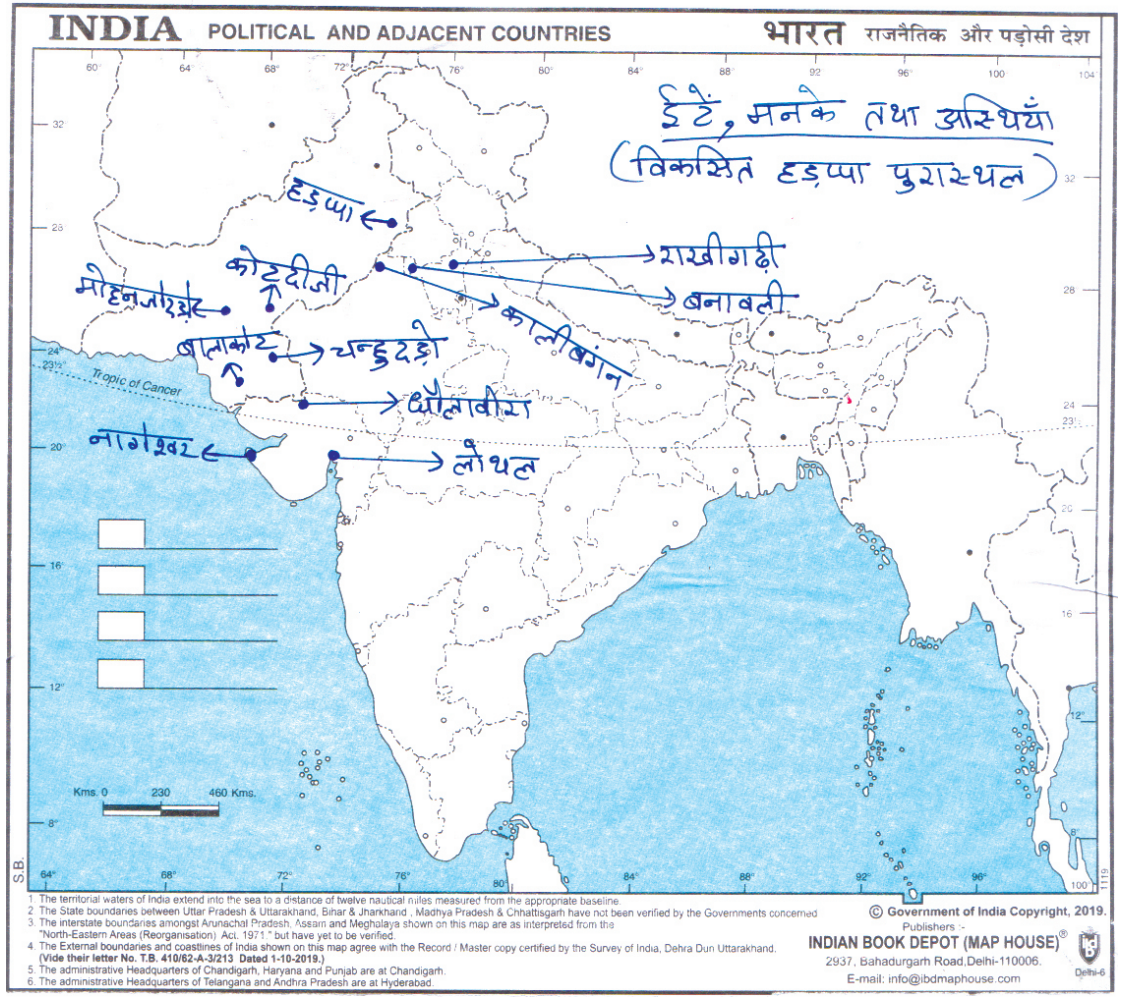
INDIA POLITICAL AND ADJACENT COUNTRIES
भारत राजनैतिक और पड़ोसी देश
ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ
(विकसित हड़प्पा पुरास्थल)
हड़प्पा
कोटदीजी
राखीगढ़ी
मोहनजोदड़ो
बनावली
कालीबंगन
बालाकोट
चन्हुदड़ो
धौलावीरा
नागेश्वर
लोथल
Tropic of Cancer
Kms. 0 230 460 Kms.
S.B.
1. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate baseline.
2. The State boundaries between Uttar Pradesh & Uttarakhand, Bihar & Jharkhand , Madhya Pradesh & Chhattisgarh have not been verified by the Governments concerned
3. The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act, 1971." but have yet to be verified.
4. The External boundaries and coastlines of India shown on this map agree with the Record / Master copy certified by the Survey of India, Dehra Dun Uttarakhand. (Vide their letter No. T.B. 410/62-A-3/213 Dated 1-10-2019.)
5. The administrative Headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh.
6. The administrative Headquarters of Telangana and Andhra Pradesh are at Hyderabad.
© Government of India Copyright, 2019.
Publishers :-
INDIAN BOOK DEPOT (MAP HOUSE)®
2937, Bahadurgarh Road,Delhi-110006.
E-mail: info@ibdmaphouse.com
Delhi-6

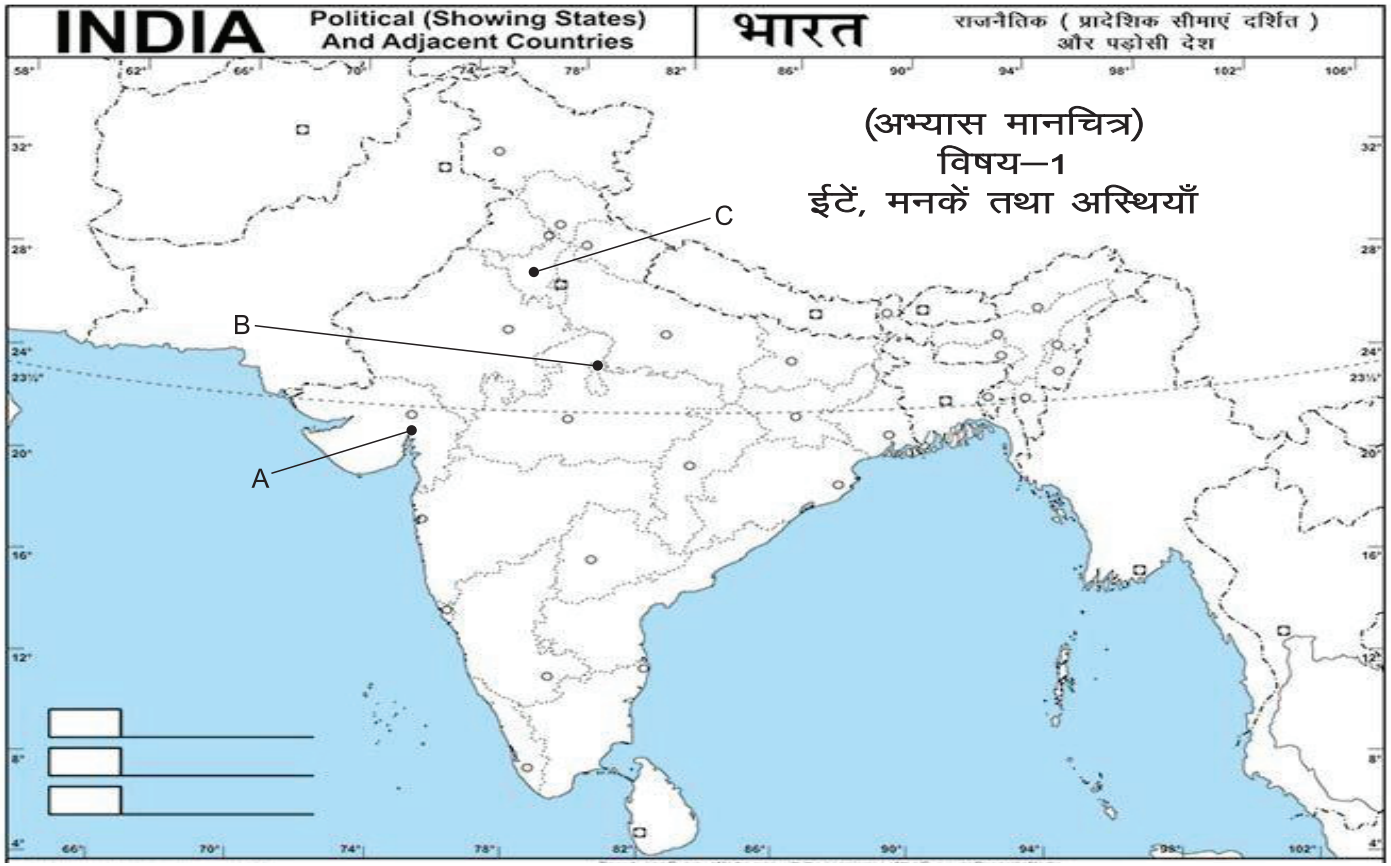

1. भारत के दिए गए राजनीतिक रेखा मानचित्र पर सिंधु घाटी सभ्यता के विकसित पुरास्थल–हडप्पा, मोहनजोदड़ो व कालीबंगन को उपयुक्त चिन्हों से दर्शाइए।

2. भारत के दिए गए इसी राजनीतिक रेखा मानचित्र पर तीन विकसित हडप्पा पुरास्थलों को A,B और C से अंकित किया गया है। इनकी पहचान कीजिए और सही नाम लिखिए।

विषय–2
राजा, किसान और नगर
(आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ)
लगभग 600 ई. पू. से 600 ई.

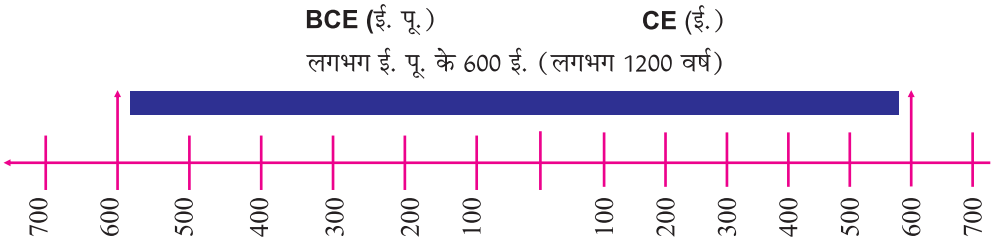

स्मरणीय बिन्दु :–

1. जेम्स प्रिंसेप के द्वारा 1830 के दशक में ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि का अर्थ निकाला गया। जिनसे राजा असोक के अभिलेखों और सिक्कों का पता चला।
2. छठी शताब्दी ई. पूर्व. को एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी काल माना जाता है। इसका कारण आरंभिक राज्यों व नगरों का विकास, लोहे के बढ़ते प्रयोग और सिक्कों का प्रचलन है।
3. इस काल में 16 महाजनपदों का उदय हुआ जिनमें मगध, कौशल, कुरू पांचाल, गांधार, वज्जि, अवंति आदि प्रमुख थे।
4.

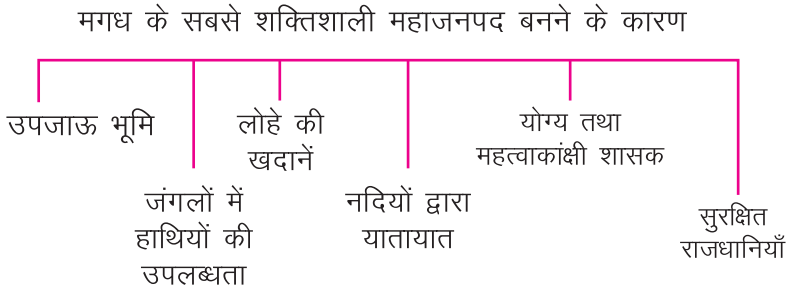

5. बौद्ध ग्रंथों के अनुसार असोक सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक थे।
6. चन्द्रगुप्त मौर्य, मौर्यवंश के संस्थापक थे। मौर्य साम्राज्य भारत का पहला साम्राज्य था।

7. 600 ईसा पूर्व से 600 ईसवी के बीच भारतीय इतिहास के आकलन हेतु इतिहासकारों द्वारा प्रयोग किये जाने वाले स्त्रोत

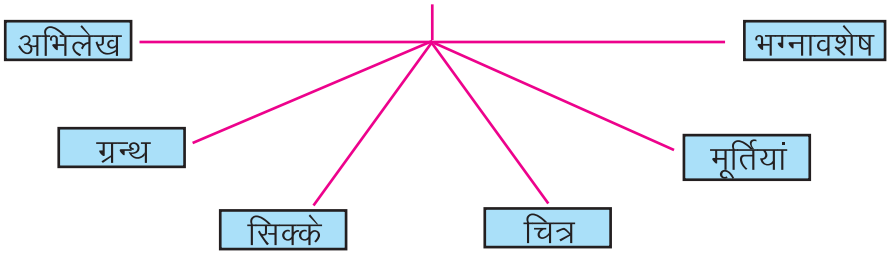

8. **प्रिंसेप और पियदस्सी**

1830 ईसवी में ईस्ट इंडिया कंपनी के एक अधिकारी जेम्स प्रिंसेप द्वारा ब्राहमी तथा खरोष्ठी लिपियों का अर्थ निकला गया। यह दोनों लिपियाँ प्रारंभिक अभिलेखों तथा सिक्कों पर उदृत थीं।

अधिकांश अभिलेखों और सिक्कों पर पियदस्सी, यानी मनोहर मुखाकृति वाले राजा का नाम लिखा था। कुछ अभिलेखों पर असोक (बौद्ध ग्रंथों के अनुसार सर्वाधिक प्रसिद्ध शासकों में से एक था) भी लिखा था।

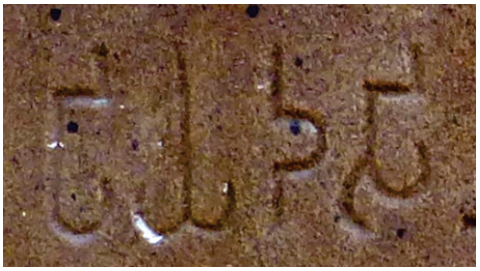

9. **प्रारंभिक राज्य**

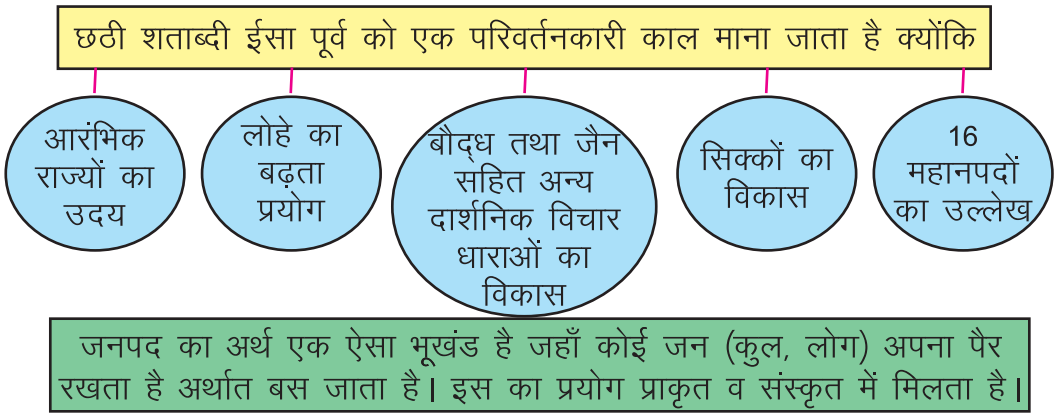

10. मौर्य तथा गुप्त साम्राज्य की जानकारी के स्त्रोत

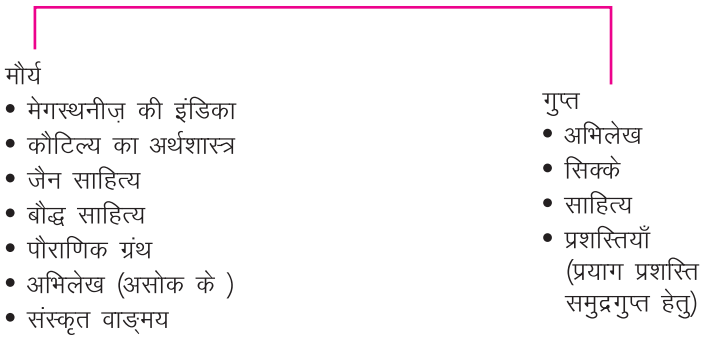

11. मौर्य साम्राज्य में पाँच प्रमुख राजनीतिक केन्द्र थे, राजधानी पाटलिपुत्र और चार प्रांत–तक्षशिला, उज्जयिनी, तोसलि और सुवर्णगिरी।

12. मेगस्थनीज द्वारा सैनिक गतिविधियों के संचालन हेतु एक समिति और छः उपसमितियों का उल्लेख किया गया है। जिनके कार्य नौसेना का, यातायात और खान–पान का, पैदल सैनिकों का, अश्वारोहियों का, स्थारोहियों का तथा हाथियों का संचालन करना था।

13. चौथी शताब्दी ई. में गुप्त साम्राज्य का उदय माना जाता है। सामंतवाद का उदय संभवतः इसी काल से माना जाता है।

14. दक्षिण भारत में चेर और पाण्ड्य जैसे समृद्ध और स्थायी राज्यों का उदय इसी काल में माना जाता है।

15. छठी शताब्दी ई. पूर्व में उपज बढ़ाने के लिए लोहे के फाल वाले हलों का प्रयोग प्रारम्भ किया गया।

16. छठी शताब्दी ई. पूर्व से छठी शताब्दी के काल में व्यापार के लिए सिक्कों के प्रचलन से विनिमय आसान हो गया।

17. उच्च स्थिति प्राप्त करने के लिए राजाओं द्वारा देवी–देवताओं के साथ जुड़ना।

18. द्वितीय शताब्दी के कई नगरों से छोटे दानात्मक अभिलेखों से विभिन्न व्यवसायों की जानकारी मिलता है–जैसे धोबी, बुनकर, लिपिक, बढ़ई, कुम्हार स्वर्णकार, लौहकार, धार्मिक गुरू, व्यापार आदि।

19. उत्पाद का और व्यापारियों के संघ (श्रेणी) का उल्लेख मिलता है। श्रेणियाँ संभवत पहले कच्चे माल को खरीदती थी, फिर उनसे सामान तैयार कर बाजार में बेच देती थी।

20. छठी शताब्दी ई.पू. से उपमहाद्वीप में नदी मार्गों और भूमार्गों का जाल कई दिशाओं में फैला। अरब सागर से उ. अफ्रीका, पश्चिम एशिया तक और बंगाल की खाड़ी से चीन और दक्षिण पूर्व एशिया तक।

21. गुप्त काल के अन्तिम समय सिक्कों में कमी आर्थिक गिरावट की ओर इशारा करती है।

22. अभिलेख साक्ष्य इस काल के इतिहास के जानने के प्रमुख स्रोत है। अभिलेख शास्त्रियों ने अभिलेखों के अध्ययन से बीते काल की भाषा, राजा का नाम, तिथि, संदेश आदि को महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की।

23. अभिलेख साक्ष्यों की सीमाएँ :– अक्षरों का हल्के ढंग से उत्कीर्ण होना, अभिलेखों के टूट जाने से कुछ अक्षरों का लुप्त हो जाना, वास्तविक अर्थ न निकाल पाना, भाषा समझ न आना, दैनिक प्रक्रियाओं व रोजमर्रा की जिंदगी के सुख–दुख का उल्लेख अभिलेखों में न मिलना।

24. प्रस्तर मूर्तियों सहित मौर्यकालीन समस्त पुरातत्व, एक अद्भुत कला के प्रमाण थे। वे मौर्य साम्राज्य की पहचान माने जाते हैं।

25. कुषाण शासकों ने स्वयं को देवतुल्य प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने नाम के आगे ''देवपुत्र'' उपाधि भी धारण की। संभवतः वे चीन के शासकों से प्रेरित थे, जो स्वयं को स्वर्गपुत्र कहते थे।

26. कुषाण शासकों के राजधर्म को जानने के सर्वोत्तम प्रमाण उनके सिक्के और मूर्तियाँ हैं।

27. जनपद का अर्थ एक ऐसा भूखंड है जहाँ कोई जन (लोग, कुल या जनजाति) अपना पाँव रखता है अथवा बस जाता है। इस शब्द का प्रयोग प्राकृत व संस्कृत दोनों में मिलता है।

28. लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व से सस्कृत में धर्मशास्त्र नामक ग्रंथों की रचना शुरू हुई। इनमें शासक व समाज के अन्य वर्गों के लिए नियमों का निर्धारण किया गया।

29. सरदार एक शक्तिशाली व्यक्ति होता था जिसका पद वंशानुगत भी हो सकता था। उसके अधीन क्षेत्र को सरदारी कहा जाता था।

30. प्रयाग प्रशस्ति, जिसे इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख के नाम से भी जाना जाता है, की रचना संस्कृत भाषा में हरिषेण ने की जो सम्राट समुद्रगुप्त के राजकवि थे।

31. सुदर्शन झील का निर्माण मौर्यकाल में एक स्थानीय राज्यपाल के द्वारा किया गया। इसका ज्ञान हमें शक शासक रूद्रदमन के पाषाण अभिलेख से होता है।

32. 'गहपति' घर का मुखिया होता था और घर में रहने वाली महिलाओं, बच्चों, नौकरों पर नियंत्रण करता था। पालि भाषा में इस शब्द का प्रयोग छोटे किसानों और जमींदारों के लिए किया गया है।

33. मुद्राशास्त्र सिक्कों का अध्ययन है। इसके साथ ही उन पर पाए जाने वाले चित्र, लिपि आदि तथा उनकी धातुओं का विश्लेषण भी इसके अन्तर्गत आता है।

34.

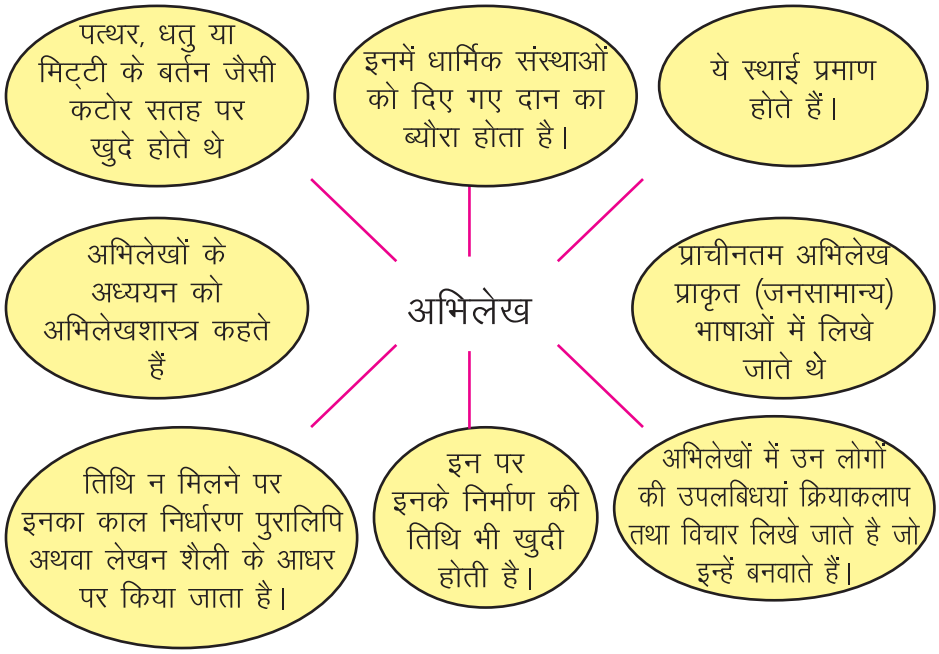

35. अभिलेख साक्ष्य सीमा

तकनीकी सीमा अक्षरों को हल्के ढंग से उत्कीर्ण किया जाता है जिन्हें पढ़ पाना मुश्किल होता है।	कभी–कभी अभिलेख नष्ट भी हो जाते हैं जिनसे अक्षर लुप्त हो जाते हैं।	शब्दों के वास्तविक अर्थ का पूर्व रूप से ज्ञान नहीं होता कुछ किसी विशेष स्थान या समय से संबंधित	कई हजार अभिलेख प्राप्त हुए हैं लेकिन सभी का अर्थ, प्रकाशन या अनुवाद नहीं किया गया है।
प्रायः अभिलेख बड़े और विशेष अवसरों का वर्णन करते हैं	जरूरी नहीं है जिसे आज राजनीतिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मानते हैं उन्हें अभिलेखों में अंकित किया गया हो।	इसके अलावा अभिलेख हमेशा उन्हीं व्यक्तियों के विचार व्यक्त करते हैं जो उन्हें बनवाते थे।	इनमें खेती की दैनिक क्रियाएं प्रक्रियाएं और रोजमर्रा की जिंदगी के दुख सुख का उल्लेख नही है
	अभिलेखों में व्यक्त विचारों की समीक्षा अन्य विचारों के परिप्रेक्ष्य में करनी होगी ताकि अपनी अतीत का बेहतर ज्ञान हो सके	अनेक अभिलेख जो कालांतर में सुरक्षित नहीं बचे जो अभी उपलब्ध हैं वह संभवत अभिलेखों के अंश मात्र हैं	

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक वाले)

1. अभिलेख किसे कहते हैं ?
2. जेम्स प्रिंसेप कौन थे ?
3. संगम ग्रंथ से क्या अभिप्राय है?
4. असोक के अभिलेख मुख्यतः किन लिपियों में मिलते हैं ?
5. 'आहत' सिक्कों से आप क्या समझते हैं ?
6. असोक के अभिलेखों की भाषा क्या है ?
7. 'श्रेणी' क्या थी ?
8. असोक के सिंह शीर्ष को आज क्यों महत्वपूर्ण माना जाता है ?
9. 'अग्रहार' का क्या अर्थ है ?
10. कनिष्क.....वंश के सबसे शक्तिशाली शासक थे।
11. जेम्स प्रिंसेप की मुख्य उपलब्धि थी–
    क) संस्कृत का अर्थ निकालना
    ख) ब्राह्मी एवं खरोष्ठी का अर्थ निकालना
    ग) देवनागरी लिपि का अर्थ निकालना
    घ) उपरोक्त में से कोई नहीं
12. इंडिका किताब के लेखक थे–
    क) कनिंधम
    ख) जॉन मार्शल
    ग) मेगस्थनीज
    घ) कौटिल्य
13. मौर्य साम्राज्य की सैनिक गतिविधि संचालित की जाती थी –
    क) एक समिती व छ उपसमितियों के द्वारा
    ख) दो समिती व पाँच उपसमितियों के द्वारा
    ग) तीन समिती व पाँच उपसमितियों के द्वारा
    घ) चार समिती व तीन उपसमितियों के द्वारा

14. धम्म के सिंद्धात की शुरूआत की –

क) चन्द्रगुप्त मौर्य ने
ख) समुद्रगुप्त ने
ग) चाणक्य ने
घ) अशोक ने

15. जातक कथाएँ जिस महापुरूष से संबधित वह है –

क) महात्मा बुद्व
ख) महावीर
ग) गुरू नानक
घ) कबीर दास

16. हर्षचरित्र की रचना की थी :

क) कौटिल्य ने
ख) मेगास्थनीज ने
ग) बाणभट्ट ने
घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

17. सेठी आमतौर पर होते थे :

क) धनी व्यापारी
ख) शिल्पकार
ग) किसान
घ) सैनिक

18. भारत में सबसे पहले सोने के सिक्के जारी किये थेः

क) शको ने
ख) सातवाहनों ने
ग) गुप्त शासकों ने
घ) कुषाणों ने

19. मगध की आरंभिक राजधानी थी :

क) तक्षशिला
ख) पटना
ग) पाटलिपुत्र
घ) राजगीर

20. प्रसिद्व पुस्तक अष्टाध्यायी की रचना की थी.....

क) पाणिनी ने
ख) पतंजलि ने
ग) चरक ने
घ) आर्यभट्ट ने

21. दिए गए चित्र को ध्यान से देखकर पहचानिए तथा नाम लिखिए –

उद्धरण आधारित प्रश्न (3 अंक वाले)

प्रश्न 1. दिए गए उद्धरण को ध्यान से पढ़िए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

समुद्रगुप्त की प्रशस्ति

यह **प्रयाग प्रशास्ति** का एक अंश है :

धरती पर उनका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं था। अनेक गुणों और शुभकार्यों से संपन्न उन्होंने अपने पैर के तलवे से अन्य राजाओं के यश को मिटा दिया है वे परमात्मा पुरुष हैं, साधु (भले) की समृद्धि और असाधु (बुरे) के विनाश के कारण हैं। वे अज्ञेय हैं। उनके कोमल हृदय को भक्ति और विनय से ही वश में किया जा सकता है। वे करुणा से भरे हुए हैं। वे अनेक सहस्र गायों के दाता हैं। उनके मस्तिष्क की दीक्षा दीन–दुखियों, विरहणियों और पीड़ितों के उद्धार के लिए की गई है। वे मानवता के लिए दिव्यमान उदारता की प्रतिमूर्ति हैं। वे देवताओं में कुबैर (धन–देख), वरुण (समुद्र–देव), इंद्र (वर्षा के देवता) और यम (मृत्यु–देव) के तुल्य हैं।

A) प्रयाग प्रशस्ति की रचना जिसके द्वारा की गई वह है –

(क) बाणभट्ट (ख) हरिषेण
(ग) समुद्रगुप्त (घ) कृष्ण देवराय

B) यह प्रशस्ति किसकी प्रशंसा में लिखी गई है?

(क) चन्द्रगुप्त मौर्य की (ख) कनिष्क की
(ग) समुद्रगुप्त की (घ) असोक की

C) निम्न में से जो कथन सत्य है, वह है।

(क) धरती पर उनके कई प्रतिद्वंद्वी थे।

(ख) वे मानवता के लिए दिव्यमान उदारता की प्रतिमूर्ति है।

(ग) वे हिंसा से भरे हुए हैं।

(घ) उपर्युक्त सभी

D) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) तथा दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है –

कथन (A) – कवियों द्वारा अपने राजा या स्वामी की प्रशंसा में लिखी प्रशस्तियाँ इतिहास लेखन में काफी उपयोगी रही है।

कारण (R) – यद्यपि इतिहासकार इन रचनाओं पर ऐतिहासिक तथ्य निकालने का प्रायः प्रयास करते हैं लेकिन उनके रचयिता तथ्यात्मक विवरण की अपेक्षा उन्हें काव्यात्मक ग्रंथ मानते थे।

(क) केवल कथन (A) सही है।

(ख) केवल कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है परन्तु कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।

प्रश्न 2. दिए गए चित्र को ध्यान से देखए तथा निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

A) ये सिक्के ––––– से संबंधित हैं।

(क) मौर्य साम्राज्य से
(ख) गुप्त साम्राज्य से
(ग) कुषाण साम्राज्य से
(घ) सातवाहन वशं से

B) ये सिक्के जिस धातु से बने होते थे, वह है –

(क) चाँदी
(ख) सोना
(ग) तांबा
(घ) लौहा

C) निम्न कथनों को ध्यान पूर्वक पढ़िए –

(i) कुषाण शासकों ने मध्य एशिया से लेकर पश्चिमोत्तर भारत तक शासन किया
(ii) कुषाण इतिहास की रचना अभिलेखों तथा साहित्य के माध्यम से की गई।
(iii) मथुरा के पास माट के एक देवस्थान पर कुषाण शासकों की विशालकाय मूर्तियाँ लगाई गईं थीं।

सही विकल्प चुनिए –

(क) केवल कथन (i) सही है
(ख) केवल कथन (ii) सही है
(ग) केवल (i) तथा (ii) सही है
(घ) सभी कथन सही है।

D) सिक्कों के अध्ययन को कहा जाता है –

(क) मुद्राशास्त्र
(ख) मानवशास्त्र
(ग) अभिलेखशास्त्र
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक वाले)

1. जेम्स प्रिंसेप कौन थे ? भारतीय इतिहास लेखन में उनकी क्या देन है ?
2. ''छठी शताब्दी से चौथी शताब्दी ई. पूर्व के बीच मगध सबसे शक्तिशाली महाजनपद बन गया।'' कैसे ?
3. असोक के धम्म की मुख्य विशेषताएँ क्या थी ?
4. मेगस्थनीज के विवरणों के अनुसार मौर्य साम्राज्य में सैनिक गतिविधियों के संचालन की क्या व्यवस्था थी ?
5. मौर्य साम्राज्य की जानकारी के प्रमुख स्त्रोतों को विस्तार से बताइए।
6. भारत के राजनीतिक और आर्थिक इतिहास को समझने के लिए अभिलेखीय साक्ष्यों की सीमाओं की परख कीजिए।
7. प्राचीन भारतीय महाजनपदों की तीन प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
8. अभिलेख से हमें क्या जानकारियाँ मिलती है? किन्ही तीन बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट कीजिए।
9. वर्णित काल में प्रचलित ''दैविक राजा'' प्रथा क्या थी? स्पष्ट कीजिए।
10. मौर्य साम्राज्य की कृषि से संबधित तीन विशेषताएं लिखिए।
11. जेम्स प्रिंसेप का भारतीय अभिलेख विज्ञान के विकास में क्या योगदान रहा। विवेचना कीजिए।
12. भारतीय इतिहास में सिक्कों के महत्व पर प्रकाश डालिए।
13. मौर्यकाल के नगर एवं व्यापार के बारे में आप क्या जानते है? स्पष्ट कीजिए।
14. दक्षिण भारत में उभरी सरदारियों के बारे में कोई तीन तथ्य लिखिए।
15. आपके अनुसार प्राचीन भारतीय इतिहास में मौर्य साम्राज्य किस प्रकार महत्वपूर्ण था?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक वाले)

1. भारतीय इतिहास में राजा अशोक के योगदान पर चर्चा कीजिए। (संकेत पृ. सं. 32–34, 47–48 एन.सी.ई.आर.टी)
2. मौर्य साम्राज्य के प्रशासन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (संकेत पृ. सं. 32–34 एन.सी.ई.आर.टी)
3. मौर्य साम्राज्य की आर्थिक व राजनैतिक उपलब्धियों पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (संकेत पृ. सं. 32, 34, 43 एन.सी.ई.आर.टी)
4. अभिलेख क्या होते है? इतिहास लेखन मे इनके महत्व व सीमा पर तर्क सहित व्याख्या दीजिए। (संकेत पृ. सं. 29,47,48 एन.सी.ई.आर.टी)
5. वर्णित काल के दौरान कृषि के तौर तरीकों में कौन से प्रमुख बदलाव आए? स्पष्ट कीजिए। (संकेत पृ. सं. 38–40 एन.सी.ई.आर.टी)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1. भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक के योगदानों को निम्नलिखित बिन्दुओं में समझा जा सकता है।

(1) एक मजबूत साम्राज्य की स्थापना।
(2) केन्द्रीयकृत प्रशासनिक व्यवस्था।
(3) मजबूत सैन्य संगठन।
(4) न्यायालयों की स्थापना।
(5) एक आदर्श राज्य की संकल्पना।
(6) गुप्तचर विभाग की स्थापना।
(7) साम्राज्य का विस्तार।
(8) धर्म की स्थापना।
(9) वाणिज्य व्यापार में वृद्धि।
(10) अच्छी कर प्रणाली।
(11) अच्छी सड़क मार्ग एवं नौसेना का गठन।

(संकेत पृष्ठ सं. 32–34, 47–48, एन.सी.ई.आर.टी)

2. मौर्य साम्राज्य का प्रशासन

(1) एक केन्द्रीयकृत प्रशासनिक व्यवस्था।
(2) सत्ता के पाँच राजनीतिक केन्द्र– पाटलिपुत्र, तक्षशिला, उज्जयिनी, तोसलि और सुवर्णगिरि।
(3) सड़कमार्ग एवं नौसेना का विकास करके सुदूर केन्द्रों तक नियंत्रण।
(4) प्रशासनिक नियंत्रण के लिए संगठित सेना का गठन।
(5) 'धम्म' के द्वारा जनता तक पहुंचना।
(6) न्यायालयों की स्थापना।
(7) उच्च अधिकारियों की नियुक्ति।
(8) वित्त व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने हेतु व्यवस्थित कर प्रणाली।
(9) सैन्य गतिविधियों का उचित संचालन।

(संकेत पृष्ठ सं. 32–34 एन.सी.ई.आर.टी)

3. (1) मौर्य साम्राज्य आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टि से एक मजबूत साम्राज्य था।
(2) अच्छी कर प्रणाली द्वारा वित्तीय स्थिरता।
(3) कृषि में नई तकनीकों का समावेश एवं सिंचाई की अच्छी व्यवस्था।
(4) वाणिज्य एवं व्यापार में सुरक्षा एवं स्थिरता।
(5) सड़क एवं जलमार्ग द्वारा आवागमन अत्यंत सुगम एवं सुरक्षित।
(6) साम्राज्य का विस्तार।
(7) मजबूत सैन्य संगठन द्वारा साम्राज्य की तथा प्रजा की सुरक्षा।
(8) एक आदर्श राज्य की स्थापना।
(9) प्रजा में राजा की दैवीय छवि।
(10) हर प्रकार से एक समृद्ध राज्य की स्थापना।

(संकेत पृष्ठ सं. 32, 33, 43 एन.सी.ई.आर.टी)

4. शिला अथवा धातु पर खुदे हुए लेख, अभिलेख, कहलाते हैं। प्राचीन समय में राजाओं ने अपने कार्यों, उपलब्धियों तथा राजाज्ञों को शिलाओं एवं धातुओं पर खुदवाया था जो इतिहास के एक अच्छे स्त्रोत माने गये हैं। लेकिन इनकी भी कुछ सीमाएँ हैं।
(1) कुछ लिपियों को अब तक नहीं पढ़ा जा सका है।
(2) अक्षरों का मिट जाना अथवा लुप्त हो जाना।
(3) अपठनीय भाषा।
(4) राजाओं का यशोगान, प्रजा से कोई संबंध नहीं।
(5) लिपियों के शब्द/अक्षर टूट–फूट जाना।
(6) अधूरे वाक्य अस्पष्ट अर्थ देते हैं।

इन कमियों के होते हुए भी अभिलेख इतिहास के पुनर्निमाण में अत्यंत सहायक होते हैं।

(संकेत पृष्ठ सं. 29, 47, 48 एन.सी.ई.आर.टी)

5. (1) राजाओं की आय का मुख्य स्त्रोत भूमिकर अथवा लगान ही था।
(2) लगान सख्ती से वसूला जाता था।
(3) प्रजाा एवं शासक द्वारा उपज बढ़ाने के उपाय।

(4) सिंचाई के लिए नहरों, जलाशयों एवं कुँओं का प्रयोग
(5) लोहे के फालयुक्त हल के उपयोग से उपज में वृद्धि।
(6) गाँवों के जमींदारां/प्रधानों का खेतिहर किसानों, श्रमिकों पर नियंत्रण।
(7) तकनीकों के प्रयोग एवं सिंचाई व्यवस्था के उपज में वृद्धि।
(8) राजाओं एवं किसानों की आय में वृद्धि।
(9) राजाओं द्वारा भूमि अनुदान के साक्ष्य।

(संकेत पृष्ठ सं. 38–40 एन.सी.ई.आर.टी)

विषय–2

राजा, किसान और नगर

अनुच्छेदों पर आधारित प्रश्न (5 अंक वाले)

एक छोटे गाँव का जीवन

हर्षचरित संस्कृत में लिखी गई कन्नौज के शासक हर्षवर्धन की जीवनी है, इसके लेखक बाणभट्ट (लगभग सातवीं शताब्दी ई.) हर्षवर्धन के राजकवि थे। यह उस ग्रंथ का एक अंश है। इसमें विंध्य क्षेत्र के जंगल के किनारे की एक बस्ती के जीवन का एक अतिविरल चित्रण किया गया है।

बस्ती के किनारे का अधिकांश क्षेत्र जंगल है और यहाँ धान की उपज वाली, खलिहान और उपजाऊ भूमि के हिस्से को छोटे किसानों ने आपस में बाँट लिया है यहाँ के अधिकांश लोग कुदाल का प्रयोग करते है, क्योंकि घास से भरी भूमि में हल चलाना मुश्किल है। बहुत कम हिस्से साफ हैं, जो है भी उसकी काली मिट्टी काले लोहे जैसी सख्त।

यहाँ लोग पेड़ की छाल के गट्ठर लेकर चलते हैं। फूलों से भरे अनगिनत बोरे अलसी और सन, भारी मात्रा में शहद, मोरपंख, मोम, लकड़ी और घास के बोझ लेकर आते जाते रहते हैं। ग्रामीण महिलाएं रास्ते में बसे गाँवों में जाकर बेचने को तत्पर रहती हैं। उनके सिरों पर जंगल से एकत्र किए गए फलों की टोकरियाँ थी।

1. 'हर्षचरित' के लेखक कौन थे \ 1

2. उस क्षेत्र के लोगों के क्रियाकलापों का वर्णन कीजिए। उस समय के और आज के किसानों के दो मुख्य क्रियाकलापों का उल्लेख कीजिए। 2

3. ऐसे दो क्रियाकलापों का उल्लेख कीजिए जो ग्रामीण महिलाएँ करती थी। 2

प्रभावती गुप्त और दंगुन गाँव

प्रभावती गुप्त ने अपने अभिलेख में यह कहा है :–

प्रभावती ग्राम कुटुंबिनी (गाँव के गृहस्थ और कृषक) ब्राह्मणों और दंगुन गाँव के अन्य वासियों को आदेश देती है।

''आपकों ज्ञात हो कि कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को धार्मिक पुण्य प्राप्ति के लिए इस ग्राम को जल अर्पण के साथ आचार्य चनालस्वामी को दान किया गया है। आपको इनके सभी आदेशों का पालन करना चाहिए।''

एक अग्रहार के लिए उपयुक्त निम्नलिखित रियायतों का निर्देश भी देती हूँ। इस गाँव में

पुलिस या सैनिक प्रवेश नहीं करेंगे। दौरे पर आने वाले शासकीय अधिकारियों को यह गांव घास देने और आसन में प्रयुक्त होने वाली जानवरों की खाल और कोयला देने के दायित्व से मुक्त है। साथ ही वे मदिरा खरीदने और नमक हेतु खुदाई करने के राजसी अधिकार को कार्यान्वित किए जाने से मुक्त है। इस गांव को खनिज–पदार्थ और खदिर वृक्ष के उत्पाद देने से भी छूट है। फूल और दूध देने से भी छूट है। इस गाँव का दान इसके भीतर की संपत्ति और बड़े–छोटे सभी करों सहित किया गया है।

'इस राज्यादेश को 13वें राज्य वर्ष में लिखा गया है और इसे चक्रदास ने उत्कीर्ण किया है।'

1. यह अभिलेख किसने जारी किया ? 1

2. विशिष्ट अग्रहार भूमि पर क्या–क्या छूटें व रियायतें थी? 2

3. यह आदेश किस गांव से संबधित है एवं इसे कब लिखा गया? 2

राजा की वेदना

जब देवानांपिय पियदस्सी ने अपने शासन के आठ वर्ष पूरे किए तो उन्होंने कलिंग (आधुनिक तटवर्ती उड़ीसा) पर विजय प्राप्त की।

डेढ़ लाख पुरुषों को निष्कासित किया गया, एक लाख मारे गए और इससे भी ज्यादा की मृत्यु हुई।

कलिंग पर शासन स्थापित करने के बाद देवानापिय धम्म के गहन अध्ययन, धम्म के स्नेह और धम्म के उपदेश में डूब गए हैं।

यह देवनांपिय के लिए कलिंग की विजय का पश्चाताप है।

देवनांपिय के लिए यह बहुत वेदनादायी और निंदनीय है कि जब कोई किसी राज्य पर विजय प्राप्त करता है तो पराजित राज्य का हनन होता है, वहाँ लोग मारे जाते हैं।

1. 'देवानांपिय पियदस्सी' किसे कहा गया है? 1

2. अभिलेखों के महत्त्व तथा सीमाओं का उल्लेख कीजिए। 2

3. अशोक पर कलिंग युद्ध के पड़े प्रभावों की व्याख्या कीजिए। 2

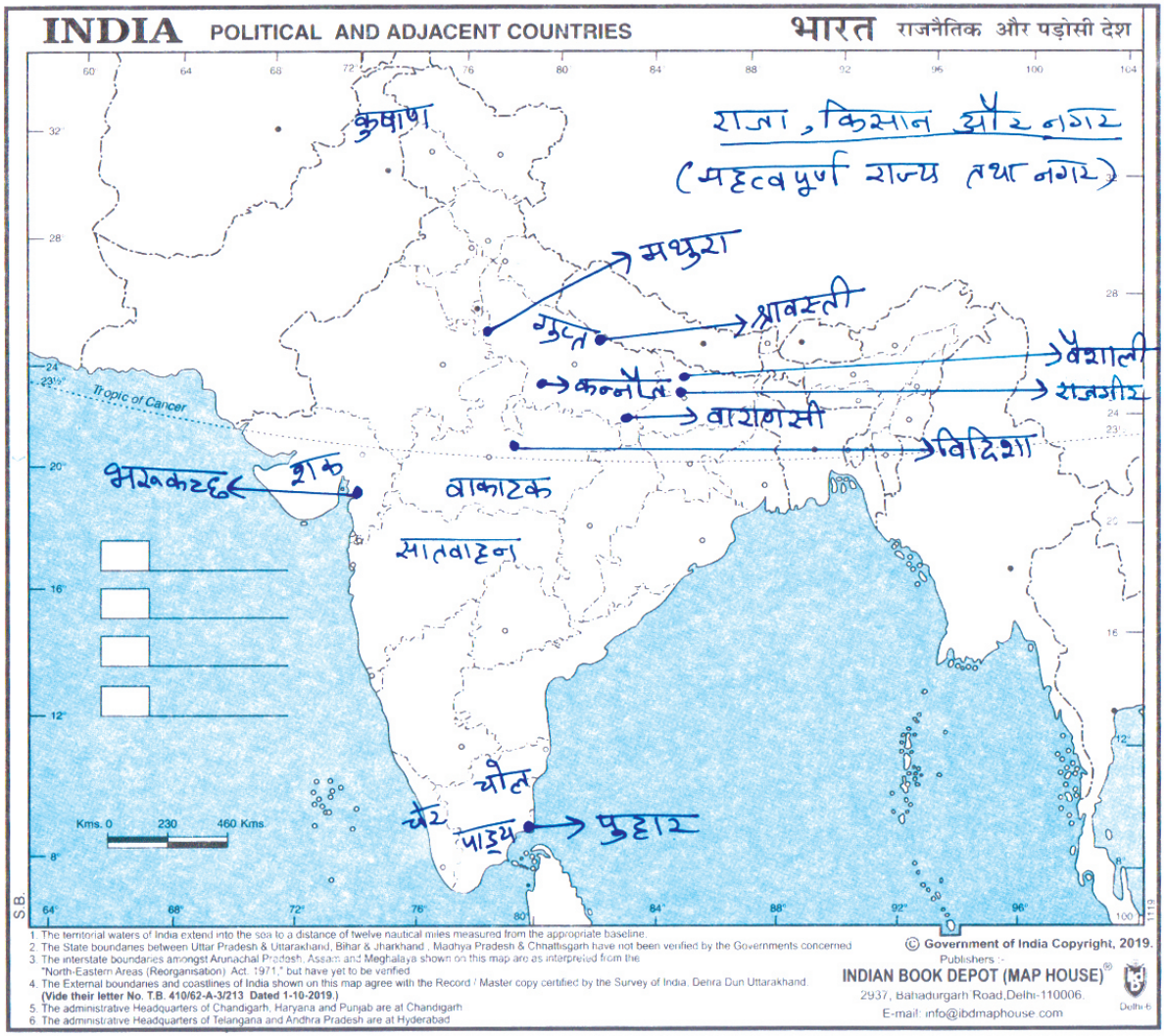
INDIA POLITICAL AND ADJACENT COUNTRIES
भारत राजनैतिक और पड़ोसी देश
राजा, किसान और नगर
(महत्वपूर्ण राज्य तथा नगर)
कुषाण
मथुरा
गुप्त
श्रावस्ती
वैशाली
कन्नौज
राजगीर
वाराणसी
विदिशा
भरुकच्छ
शक
वाकाटक
सातवाहन
चोल
चेर
पांड्य
मुद्दार
Tropic of Cancer
Kms. 0 230 460 Kms
1. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate baseline.
2. The State boundaries between Uttar Pradesh & Uttarakhand, Bihar & Jharkhand , Madhya Pradesh & Chhattisgarh have not been verified by the Governments concerned.
3. The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act, 1971," but have yet to be verified.
4. The External boundaries and coastlines of India shown on this map agree with the Record / Master copy certified by the Survey of India, Dehra Dun Uttarakhand. (Vide their letter No. T.B. 410/62-A-3/213 Dated 1-10-2019.)
5. The administrative Headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh.
6. The administrative Headquarters of Telangana and Andhra Pradesh are at Hyderabad.
© Government of India Copyright, 2019.
Publishers :-
INDIAN BOOK DEPOT (MAP HOUSE)
2937, Bahadurgarh Road, Delhi-110006.
E-mail: info@ibdmaphouse.com
S.B.

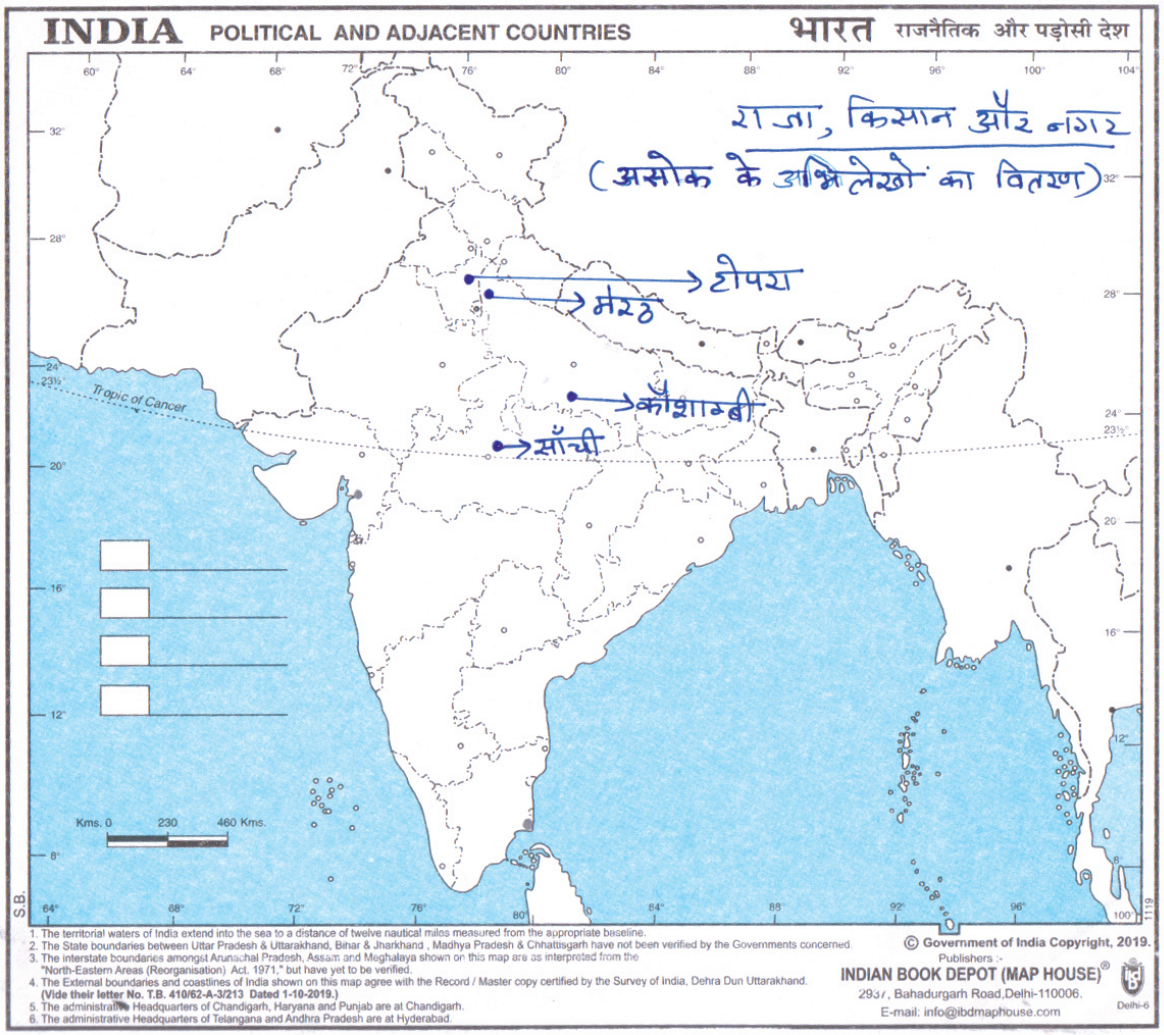
INDIA POLITICAL AND ADJACENT COUNTRIES
भारत राजनैतिक और पड़ोसी देश
राजा, किसान और नगर
(असोक के अभिलेखों का वितरण)
टोपरा
मेरठ
कौशाम्बी
साँची
Tropic of Cancer
Kms. 0 230 460 Kms.
S.B.
1. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate baseline.
2. The State boundaries between Uttar Pradesh & Uttarakhand, Bihar & Jharkhand , Madhya Pradesh & Chhattisgarh have not been verified by the Governments concerned.
3. The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act, 1971," but have yet to be verified.
4. The External boundaries and coastlines of India shown on this map agree with the Record / Master copy certified by the Survey of India, Dehra Dun Uttarakhand. (Vide their letter No. T.B. 410/62-A-3/213 Dated 1-10-2019.)
5. The administrative Headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh.
6. The administrative Headquarters of Telangana and Andhra Pradesh are at Hyderabad.
© Government of India Copyright, 2019.
Publishers :-
INDIAN BOOK DEPOT (MAP HOUSE)®
29/7, Bahadurgarh Road,Delhi-110006.
E-mail: info@ibdmaphouse.com
Delhi-6

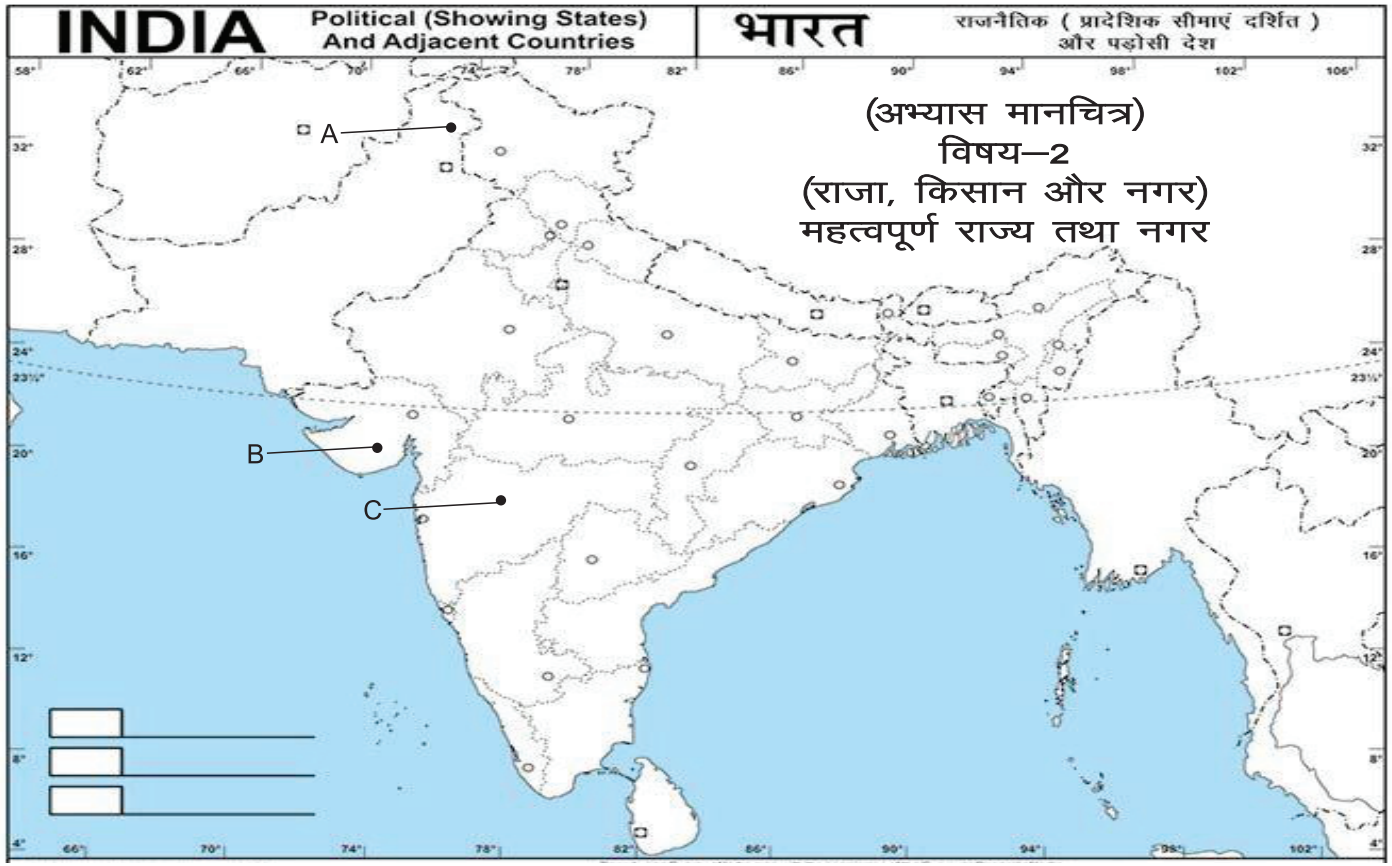

1. भारत के दिए गए राजनीतिक रेखा मानचित्र पर प्राचीन नगरों मथुरा, कन्नौज और पाटलिपुत्र को उपयुक्त चिन्हों से दर्शाइए।
2. भारत के दिए गए इसी राजनीतिक रेखा मानचित्र पर तीन प्राचीन राज्यों/राजवशों को A,B और C से अंकित किया गया है। इनकी पहचान करके सही नाम लिखिए।

विषय–3

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग : आरंभिक समाज लगभग 600 ई. पू. से 600 ई.

स्मरणीय बिन्दु :–

1. समकालीन समाज को समझने के लिए इतिहासकार प्रायः साहित्यिक परम्पराओं व अभिलेखों का उपयोग करते हैं।
2. यदि इन ग्रंथों का प्रयोग सावधानी से किया जाए तो समाज में प्रचलित आचार–व्यवहार और रिवाजों का इतिहास लिखा जा सकता है।
3. उपमहाद्वीप के सबसे समृद्ध ग्रंथों में से एक 'महाभारत' जैसे विशाल महाकाव्य के विश्लेषण में उस समय की सामाजिक श्रेणियों तथा आचार–व्यवहार के मानदंडों को जानने का प्रयास किया गया है।
4. 1919 में प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान वी. एस. सुकथांकर के नेतृत्व में महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने की शुरूआत हुई। इस परियोजना को पूरा करने में सैंतालीस वर्ष लगे।
5. महाभारत की मूल कथा के रचयिता संभवतः भाट सारथी थे जिन्हें सूत कहा जाता था। ये क्षत्रिय योद्धाओं के साथ युद्ध क्षेत्र में जाते थे। साहित्यिक परंपरा के अनुसार इस बृहत रचना के रचयिता ऋषि व्यास थे जिन्होंने श्री गणेश से यह ग्रंथ लिखवाया।
6. धर्म शास्त्रों व धर्मसूत्रों में चारों वर्णों के लिए आदर्श जीविका

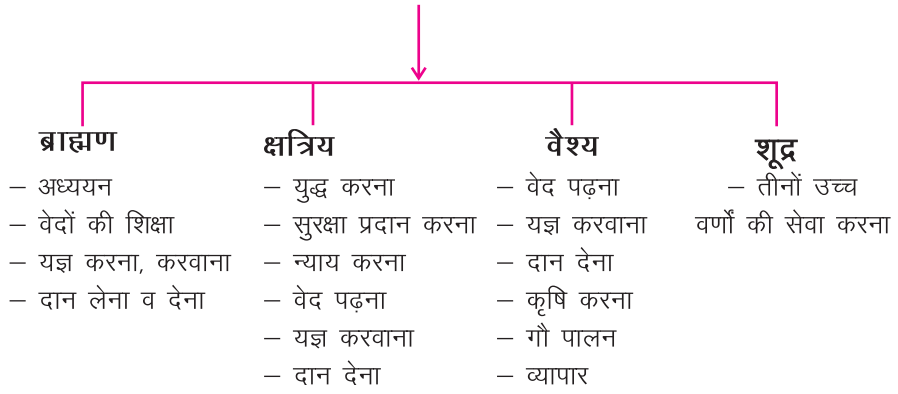

7. पितृवंशिकता का अर्थ उस वंश परंपरा से है जो पिता के बाद पुत्र फिर पौत्र, प्रपौत्र आदि से चलती है। महाभारत की मुख्य कथा वस्तु, पितृवंशिकता के

आदर्श को सुदृढ़ करती है। अधिकतर राजवंश पितृवंशिकता का अनुसरण करते थे।

8. नए नगरों के उद्‌भव से सामाजिक जीवन–अधिक जटिल हुआ। इस चुनौती का जवाब ब्राह्मणों ने समाज के लिए विस्तृत आचार संहिता तैयार करके दिया जैसे – धर्मशास्त्र, मनु स्मृति आदि।

9. ब्राह्मणीय पद्धति में लोगों को गोत्रों में वर्गीकृत किया गया है। प्रत्येक गोत्र एक वैदिक ऋषि के नाम पर होता था।

10. गोत्रों के दो नियम महत्वपूर्ण थे विवाह के पश्चात स्त्रियों को पिता के स्थान पर पति के गोत्र का माना जाता था तथा एक ही गोत्र के सदस्य आपस में विवाह संबंध नहीं रख सकते थे।

11. 'जाति' शब्द इस काल की सामाजिक जटिलताएँ दर्शाता है। ब्राह्मणीय सिद्धांत में वर्ण की तरह जाति भी जन्म पर आधारित थी।

12. उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली कुछ विविधताओं की वजह से कुछ समुदायों जैसे – निषाद, मलेच्छ आदि पर ब्राह्मणीय विचारों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

13. ब्राह्मणों ने समाज में कुछ वर्गों को 'अस्पृश्य' घोषित कर (जैसे चाण्डाल) सामाजिक वैमनस्य को और अधिक प्रखर बनाया।

14. मनु स्मृति में चाण्डालों के कर्तव्यों की सूची मिलती है। मनु समृति की रचना महर्षि मनु द्वारा की गई थी।

15. मनुस्मृति के अनुसार पैतृक जायदाद का माता–पिता की मृत्यु के बाद सभी पुत्रों में समान रूप से बंटवारा किया जाना चाहिए किन्तु ज्येष्ठ पुत्र का विशेष भाग का अधिकार था।

16. धर्मशास्त्र और धर्मसूत्र विवाह के आठ प्रकारों को अपनी स्वीकृति देते हैं। इनमें से पहले चार उत्तम माने जाते थे और बाकियों को निंदित माना गया।

17. ब्राह्मणीय सिद्धांत में वर्ण की तरह जाति भी जन्म पर आधारित थी, किंतु वर्ण जहाँ मात्र चार थे वहीं जातियों की कोई निश्चित संख्या नहीं थी। वस्तुतः जहाँ कहीं भी ब्राह्मणीय व्यवस्था का नए समुदायों से आमना–सामना हुआ, यथा निषाद, सुवर्णकार और उन्हें चार वर्णों वाली व्यवस्था में समाहित करना संभव नहीं था, उनका जाति में वर्गीकरण कर दिया गया।

18. ब्राह्मणीय वर्ण–व्यवस्था की आलोचनाएँ प्रारम्भिक बौद्ध धर्म में विकसित हुई। बौद्ध धर्म ने सामाजिक विषमता की उपस्थिति को स्वीकार किया किंतु यह भेद न तो नैसर्गिक थे और न ही स्थायी। बौद्धों ने जन्म के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा को अस्वीकार किया।

19. नए नगरों के उद्भव से सामाजिक जीवन अधिक जटिल हुआ। नगरीय परिवेश में विचारों का भी आदान–प्रदान होता था। संभवतः इस वजह से आरंभिक विश्वासों और व्यवहारों पर प्रश्नचिन्ह लगाए गए।

20. स्त्रियाँ पैतृक संसाधन में हिस्सेदारी की माँग नहीं कर सकती थी परन्तु स्त्रीधन पर उनका स्वामित्व माना जाता था।

21. इतिहासकार किसी ग्रंथ का विश्लेषण करते समय अनेक पहलुओं पर विचार करते हैं जैसे ग्रंथ की भाषा, काल, प्रकार, ग्रंथ किसने लिखा, क्या लिखा गया और किनके लिए लिखा गया।

22. महाभारत एक गतिशील ग्रंथ है, क्योंकि शताब्दियों तक इस महाकाव्य में अनेक पाठान्तर भिन्न–भिन्न भाषाओं में लिखे गए, क्षेत्र विशेष की कहानियाँ इसमें समाहित कर ली गयी। इसकी अनेक पुनर्व्याख्याएँ की गई। इस महाकाव्य ने मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्यकला व नाटकों के लिए विषय–वस्तु प्रदान की।

23. संस्कृत ग्रंथों में 'कुल' शब्द का प्रयोग परिवार के लिए और 'जाति' का बांधवों के बड़े समूह के लिए होता है।

24. मातृवंशिकता शब्द का प्रयोग हम तब करते हैं जहां वंश परंपरा माँ से जुड़ी होती है।

25. अंतर्विवाह में वैवाहिक संबंध समूह के मध्य ही होते हैं। यह समूह एक गोत्र, कुल अथवा एक जाति या फिर एक ही स्थान पर बसने वालों का हो सकता है।

26. आरंभिक उपनिषदों में से एक बृहदारण्यक उपनिषद में कई लोगों को उनके मातृनामों से निर्दिष्ट किया गया था।

27. शास्त्रों के अनुसार केवल क्षत्रिय राजा हो सकते थे। किंतु अनेक महत्वपूर्ण राजवशों की उत्पत्ति अन्य वर्णों से भी हुई थी।

28. संस्कृत के ग्रंथ और अभिलेखों में व्यापारियों के लिए 'वणिक' शब्द का प्रयोग किया गया है।

29. यायावार पशुपालकों के समुदाय को शंका की दृष्टि से देखा जाता था। यदा कदा उन लोगों को जो असंस्कृत भाषी थे, उन्हें मलेच्छ कहकर हेय दृष्टि से देखा जाता था।

30. इतिहासकार महाभारत की विषय वस्तु को दो मुख्य शीर्षकों आख्यान तथा उपदेशात्मक के अंतर्गत रखते हैं। आख्यान में कहानियों का संग्रह है और उपदेशात्मक भाग में सामाजिक आचार विचार के मानदंडों का चित्रण है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक वाले)

1. महाभारत की कथा वस्तु का संबंध किससे है ?
2. धर्म शास्त्र क्या थे ?
3. मनुस्मृति का संकलन कब हुआ ?
4. पितृवंशिकता और मातृवंशिकता शब्दों का अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. विवाह संबंधी 'बर्हिविवाह पद्धति' का क्या अर्थ है ?
6. ब्राह्मणीय पद्धति के अनुसार गोत्र संबंधी कोई एक नियम लिखिए।
7. धर्म शास्त्रों के अनुसार स्त्रीधन किसे कहा गया ?

खाली स्थान भरो

8. महाभारत के मूल लेखक.....थे।
9. मातृनाम के उदाहरण.....उपनिषद में मिलते हैं।
10. बौद्व धर्म के प्रमुख ग्रंथ.....हैं।
11. वर्ण व्यवस्था में कुल वर्ण थे

    क) तीन　　ख) चार
    ग) पाँच　　घ) छः

12. मनु स्मृति का संकलन हुआ

    क) 500 ईसा पूर्व–500 ईस्वी　　ख) 300 ईसा पूर्व –300 ईस्वी
    ग) 400 ईसा पूर्व–400 ईस्वी　　घ) 200 ईसा पूर्व –200 ईस्वी

13. वणिक शब्द का प्रयोग हुआ

    क) कारीगरों के लिए　　ख) किसान के लिए
    ग) व्यापारी के लिए　　घ) सैनिक के लिए

14. युग्म सुमेलित कीजिएः

सूची I	सूची II
I. रामायण	A. बौद्व ग्रन्थ
II. महाभारत	B. वाल्मीकि
III. अष्टाध्यायी	C. वेदव्यास
IV. त्रिपिटक	D. धर्मशास्त्र
V. मनुस्मृति	E. पाणिनि

(क) I-B, II-C, III-E, IV-A, V-D
(ख) I-B, II-E, III-C, IV-A, V-D
(ग) I-B, II-A, III-C, IV-D, V-E
(घ) I-C, II-B, III-A, IV-D, V-E

15. क्रम दर्शाइएः

I. 500–200 ई. पू. प्रमुख धर्म सूत्र
II. 300 ई. भरतमुनि का नाट्यशास्त्र
III. 500 ई. पू. संस्कृत व्याकरण अष्टाध्यायी
IV. 300 से 600 ई. अन्य धर्मशास्त्र

निम्न में से उचित क्रम चुनिएः

(क) III, II, I, IV
(ख) II, IV, III, I
(ग) I, II, III, IV
(घ) III, I, II, IV

16. निम्न में से उचित क्रम चुनिए

I. खगोल व गणित पर आर्यभट्ट का काम
II. महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण
III. चरक के ग्रंथ
IV. त्रिपिटक ग्रंथ

निम्न में से उचित क्रम चुनिएः

(क) IV, II, III, I
(ख) IV, III, I, II
(ग) IV, III, II, I
(घ) I, II, III, IV

17. मेरठ के हस्तिनापुर में खुदाई शुरू की गई–

क) 1941–42 ई. में ख) 1951–52 ई. में
ग) 1961–62 ई. में घ) 1971–72 ई. में

18. आख्यान से अभिप्राय है–

क) कहानियों का संग्रह ख) कविताओं का संग्रह
ग) गजलों का संग्रह घ) लोकगीतों का संग्रह

19. बौद्व धर्म के पवित्र ग्रंथ है–

क) उपनिषद ख) धर्मशास्त्र
ग) पुराण घ) त्रिपिटक

20. चरक और सुश्रुत संहिता का सम्बन्ध है –

(क) विज्ञान से (ख) गणित से

(ग) आयुर्वेद से (घ) पाक शास्त्र से

21. उपर्युक्त चित्र को ध्यान से देखिए तथा चित्रांकित घटना का नाम बताइए।

उद्धरण आधारित प्रश्न (3 अंक वाले)

I. 'एक दैवीय व्यवस्था' पर आधारित इस उद्धरण को ध्यान से पढ़िए तथा निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

एक दैवीय व्यवस्था?

अपनी मान्यता को प्रमाणित करने के लिए ब्राह्मण बहुध ऋग्वेद के पुरुषसूक्त मंत्र को उद्धत करते थे जो आदि मानव पुरुष की बलि का चित्रण करता है। जगत के सभी तत्व जिनमें चारों वर्ण शामिल हैं, इसी पुरुष के शरीर से उपजे थे।

ब्राह्मण उसका मुँह था, उसकी भुजाओं से क्षत्रिय निर्मित हुआ।

वैश्य उसकी जंघाथी, उसके पैर से शूद्र की उत्पत्ति हुई।

(A) वर्ण व्यवस्था का वर्णन जिस ग्रंथ में किया गया है, वह है –

(क) ऋग्वेद (ख) सामवेद

(ग) अथर्ववेद (घ) यजुर्वेद

B) वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण के कार्य बताए गए हैं –

(क) यज्ञ करना व करवाना (ख) युद्ध करना

(ग) कृषि करना (घ) तीनों उच्च वर्णों की सेवा करना

C) आदि पुरुष के पैरों से जिसकी उत्पत्ति मानी जाती हैं, वह है –

(क) क्षत्रिय (ख) ब्राह्मण

(ग) शूद्र (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

D) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक कथन (A) तथा दूसरा कारण (R) दिया गया है।

कथन (A) – ब्राह्मणों ने लोगों को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया कि उनकी प्रतिष्ठा जन्म पर आधारित हैं।

कारण (R) – ब्राह्मणों का यह मानना था कि यह व्यवस्था जिसमें उन्हें पहला दर्जा प्राप्त है, एक दैवीय व्यवस्था है।

(क) केवल कथन (A) ही सही है।

(ख) केवल कारण (R) ही सही है।

(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है परन्तु कारण (R) कथन (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) का सही पष्टीकरण भी देता है।

II. 'महाभारत का एक दृश्य' नामक इस चित्र को ध्यान से देखिए तथा निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

A) महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण तैयार किया गया –

(क) 1917 ई. में (ख) 1918 ई. में
(ग) 1919 ई. में (घ) 1920 ई. में

B) महाभारत की मूल कथा के रचयिता ———— है?

(क) वी.एस. सुकथंकर (ख) भाट / सारथी
(ग) गणेश जी (घ) महर्षि वेद व्यास

C) महाभारत के विषय में निम्न कथनों को ध्यान से पढ़िए –

(i) इस ग्रंथ की रचना एक हजार वर्ष तक होती रही।
(ii) यह दो परिवारों के बीच के युद्ध का चित्रण है।
(iii) इस ग्रंथ के मुख्य पात्र सामाजिक मानदंडों का अनुसरण हमेशा ही करते दिखते हैं।

(क) केवल (i) सही है (ख) केवल (i) तथा (ii) सही है
(ग) केवल (ii) तथा (iii) सही है (घ) चारों (I) तथा (ii) सही है।

D) नीचे दो कथन दिए गए हैं जिनमें एक कथन (A) है तथा दूसरा कारण (R) है –

कथन (A) – महाभारत के समालोचनात्मक संस्करण के बाद यह पाया गया कि उसके प्रषणों में अनेक क्षेत्रीय प्रभेद सामने आए हैं।

कारण (R) – ये प्रभेद उन शूद्र प्रक्रियाओं के द्योतक है जिन्होंने प्रभावशाली परम्पराओं और लचीले स्थानीय विचार और आचरण के बीच संवाद कायम करके सामाजिक इतिहासों को रूप दिया था। यह संवाद द्वंद्व और मतैक्य दोनों को ही चित्रित करता है।

(क) केवल कथन (A) ही सही है।
(ख) केवल कारण (R) ही सही है।
(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) का सही स्पष्टीकरण है।
(घ) न तो कथन (A) सही है तथा न ही कारण (R) सही है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक वाले)

1. 600 ई. पूर्व से 600 ई. तक के काल में सामाजिक जीवन अधिक जटिल हुआ। इस चुनौती की प्रतिक्रिया में ब्राह्मणों ने क्या किया ?
2. ''किस प्रकार महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण एक अत्यंत महत्वाकांक्षी परियोजना मानी गई'' स्पष्ट कीजिए।
3. ब्राह्मणीय पद्धति में स्त्रियों का गोत्र कैसे निर्धारित किया जाता था ?
4. आरंभिक समाज में नए नगरों के उदय ने सामाजिक–जीवन को किस तरह जटिल बना दिया ?
5. सामाजिक इतिहास के पुर्ननिर्माण में आदर्श मूलक संस्कृत ग्रंथों की भूमिका स्पष्ट करो।
6. मंदसौर अभिलेख जटिल सामाजिक प्रक्रियाओं की झलक किस प्रकार देता है।
7. मनुस्मृति में वर्णित चाण्डालों के कर्तव्यों का वर्णन कीजिए।
8. महाभारत कालीन समाज पुरूष प्रधान था'' कोई तीन तर्क देकर समझाइये
9. महाभारत के बारे में प्रख्यात इतिहासकार मौरिस विंटरनिट्ज की राय क्या थी? स्पष्ट कीजिए।
10. महाभारत के मूल व प्रचालित लेखक कौन थे? व्याख्या कीजिए
11. महाभारत कालीन समाज में विवाह से संबधित कोई तीन नियम लिखिए।
12. वर्णित काल की जाति व्यवस्था की कोई तीन विशेषताएं लिखिए।
13. क्या महाभारत के समय स्त्री एवं पुरूष संपति पर समान अधिकार रखते थे? तर्क सहित समझाइये।
14. आप कैसे कह सकते हैं कि महाभारत एक गतिशील ग्रंथ है। अपने उत्तर के पक्ष में कोई तीन तर्क दीजिए।
15. वर्णित काल की वर्ण व्यवस्था की कोई तीन विशेषताएं लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक वाले)

1. महाभारत काल में स्त्रियों तथा पुरूषों के संदर्भ में संपत्ति के अधिकार से क्या अभिप्राय था ? (संकेत पृ.स. 68–69, एन.सी.ई.आर.टी)
2. क्या यह संभव है कि महाभारत का एक ही रचयिता था ? महाभारत को एक गतिशील ग्रंथ क्यों कहा जाता है ? (संकेत पृ.स. 74–77, एन.सी.ई.आर.टी)
3. उन साक्ष्यों की चर्चा कीजिए जो यह दर्शाते है कि बंधुत्व और विवाह संबंधी ब्राह्मणीय नियमों का सर्वत्र अनुसरण नहीं होता था। (संकेत पृ.स. 55–56, 58, 60 एन.सी.ई.आर.टी)
4. महाभारत कालीन भारतीय सामाजिक जीवन की प्रमुख विशेषताओं पर एक निबंध लिखिए। (संकेत पृ.स. 61–64 एन.सी.ई.आर.टी)
5. भारत के प्रसिद्व महाकाव्य–महाभारत की मूल विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (संकेत पृ.स. 53–54, 73–74, 77 एन.सी.ई.आर.टी)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1. (1) धर्मसूत्र एवं धर्मशास्त्रों में इस संदर्भ में वर्णन हैं।
   (2) मनुस्मृति के अनुसार पैतृक जायदाद माता–पिता की मृत्यु के बाद सभी पुत्रों में बराबर बंटती थी, किन्तु ज्येष्ठ पुत्र का विशेष अधिकार था।
   (3) स्त्रीधन पर स्त्रियों का स्वामित्व।
   (4) सामान्यतः भूमि, पशु एवं धन पर पुरुषों का नियंत्रण था।
   (5) उच्च वर्ग की महिलाएँ संसाधनों पर अपना अधिकार रखती थीं।
   (6) संपत्ति पर अधिकर का एक आधार वर्ण भी था।
   (7) ब्राह्मण एवं क्षत्रीय एक धनी वर्ण था।
   (8) यदा कदा निर्धन ब्राह्मण एवं धनाढ्य शूद्र का भी वर्णन है।
   (9) स्त्री एवं पुरुषों के संपत्ति अर्जित करने के अलग–अलग तरीके थे।
   (10) माता–पिता, एवं पति से मिली। भेंट अथवा उपहार पर स्त्री का अधिकार था।

   (संकेत पृष्ठ सं. 68, 69 एन.सी.ई.आर.टी)
2. (1) यह ग्रंथ किसने लिखा है? इस प्रश्न के कई उत्तर है।

(2) संभवतः मूल कथा के रचयिता भाट सारथी थे जिन्हें सूत कहा जाता था।
(3) ये लोग योद्धाओं के साथ युद्ध क्षेत्र में जाते थे।
(4) पाँचवी ई. पू. से पूर्व ब्राह्मणों ने इस कथा परंपरा पर अपना अधिकार प्राप्त कर लिया और इसे लिखा।
(5) लगभग 200 ई. पू. से 200 ई. तक विष्णु एक मुख्य आराध्य बने, श्री कृष्ण को इनका अवतार बताया जा रहा था जो इस कथा के मुख्य नायक हैं।
(6) 200–400 ई. के बीच मनुस्मृति के उपदेशात्मक प्रकरण जोड़े गये।
(7) साहित्य परंपरा में इस वृहत् रचना के रचयिता ऋषि वेद व्यास माने जाते हैं।
(8) महाभारत एक गतिशील ग्रंथ है क्योंकि इसकी विभिन्न घटनाएँ एवं कथाएँ चित्र, संगीत, नाटक अथवा चलचित्र के माध्यम से समय–समय पर हमें परिलक्षित होती रहती हैं।
(9) महाभारत विभिन्न भाषाओं में लिखा गया।
(10) समय समय पर कई कहानियों को इसमें समाहित कर लिया गया।

(संकेत पृष्ठ सं. 74, 77 एन.सी.ई.आर.टी)

3. (1) सामान्यतः बंधुत्व एवं विवाह संबंधी नियमों का पालन सर्वत्र होता था। लेकिन कई ऐसे उदाहरण एवं साक्ष्य हैं। जिससे ज्ञात होता है कि इन नियमों का अनुसरण सर्वत्र नहीं भी होता था।
(2) कभी पुत्र के न होने पर एक भाई अपने भाई का उत्तराधिकारी बन जाता था। जैसे थानेश्वर का राजा हर्षवर्द्धन अपने भाई का उत्तराधिकारी बना।
(3) प्रभावती गुप्त जैसी स्त्रियाँ भी सत्तासीन हुई।
(4) चंद्रगुप्त विक्रमादित्य अपने भाई रामगुप्त के अधिकारी बने।
(5) सामान्यतः खून के रिश्तों में विवाह वर्जित थे परंतु दक्षिण के कई समुदायों में अंतर्विवाह देखा गया।
(6) सात वाहनों में कई बार पत्नियाँ पति के गोत्र के बदले अपने पिता का ही गोत्र अपनाती थी जैसे गौतमी पुत्र सिरी सातकर्णि।
(7) विवाह के भी कई प्रकारों को बाद में मान्यताएं दे दी गयीं।

(संकेत पृष्ठ सं. 55–56, 58, 60 एन.सी.ई.आर.टी)

4. (1) वर्ण–व्यवस्था पर आधारित समाज।

(2) वर्ण के अनुसार सामाजिक कार्यों का बंटबारा।
(3) पितृ प्रधान समाज।
(4) विवाह के नियमों की सर्वमान्यता।
(5) स्त्री के गोत्र संबंधी नियम।
(6) समाज में पुत्र कामना पर बल।
(7) सामाजिक विषमताएँ।
(8) अस्पृश्यता।

(संकेत पृष्ठ सं. 61–64 एन.सी.ई.आर.टी)

5. (1) महाभारत के मूल रचयिताओं के संबंध में कई उत्तर।
(2) मौखिक रूप से भाट सारथियों ने इसकी शुरूआत कीं।
(3) कालांतर में पहले ब्राह्मणों ने फिर महाकाव्य को ऋषि वेदव्यास ने लिखा।
(4) सबसे वृहत् महाकाव्य।
(5) बंधुत्व, विवाह एवं पितृवंशिकता का एक स्त्रोत।
(6) कालांतर में नई कहानियों एवं घटनाओं का समावेश।
(7) एक गतिशील ग्रंथ।
(8) विभिन्न भाषाओं में अनुवाद

(संकेत पृष्ठ सं. 53–54, 73–74, 77 एन.सी.ई.आर.टी)

विषय–3

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग

अनुच्छेद आधारित प्रश्न (5 अंक)

1. स्त्री और पुरुष किस प्रकार संपत्ति अर्जित कर सकते थे?

पुरुषों के लिए मनुस्मृति कहती है कि धन अर्जित करने के सात तरीके हैं– विरासत, खोज, खरीद, विजित करके, निवेश, कार्य द्वारा तथा सज्जनों द्वारा दी गई भेंट को स्वीकार करके।

स्त्रियों के लिए संपत्ति अर्जन के छः तरीके हैं–वैवाहिक अग्नि के सामने तथा वधूगमन के समय मिली भेंट। स्नेह के प्रतीक के रूप में भ्राता, माता और पिता द्वारा दिए गए उपहार। इसके अतिरिक्त परवर्ती काल में मिली भेंट तथा वह सब कुछ जो 'अनुरागी' पति से उसे प्राप्त हो।

1. मनुस्मृति की रचना किसके द्वारा की गई? 1

2. महिलाओं द्वारा किस प्रकार धन अर्जित किया जा सकता था? स्पष्ट कीजिए। 2

3. क्या आप धन अर्जित करने के तरीकों में विभाजन से सहमत हैं या नहीं? कोई दो कारण बताइए। 2

2. माता की सलाह

महाभारत में उल्लेख मिलता है कि जब कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध अवश्यभावी हो गया तो गांधारी ने अपने ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन से युद्ध न करने की विनती की :

शांति की संधि करके तुम अपने पिता, मेरा तथा अपने शुभेच्छुकों का सम्मान करोगे.....विवेकी पुरुष जो अपनी इंद्रियों पर नियत्रंण रखता है वही अपने राज्य की रखवाली करता है। लालच और क्रोध आदमी को लाभ से दूर खदेड़कर ले जाते हैं, इन दोनों शत्रुओं को पराजित कर राजा समस्त पृथ्वी को जीत सकता है.....हे पुत्र विवेकी और वीर पांडवों के साथ सानंद इस पृथ्वी का भोग करोगे....युद्ध में कुछ भी शुभ नहीं होता, ना धर्म और अर्थ की प्राप्ति होती है और न ही प्रसन्नता की युद्ध के अंत में सफलता मिले यह भी जरूरी नहीं.....अपने मन को युद्ध में लिप्त मत करो.....

दुर्योधन ने माँ की सलाह नहीं मानी, वह युद्ध में लड़ा और हार गया।

1. गांधारी ने दुर्योधन से क्या विनती की, संक्षेप में बतलाइये। 1

2. क्या आप गांधारी द्वारा दुर्योधन को दी गई सलाह से सहमत हैं? अपने उत्तर की पुष्टि के लिए दो तर्क दीजिए। 2

3. दुर्योधन ने अपनी माता की सलाह क्यों नहीं मानी? इससे आपको महाभारत काल में स्त्रियों की स्थिति के विषय में क्या पता चलता है? 2

पाठ-4
विचारक, विश्वास और इमारतें (सांस्कृतिक विकास)
लगभग 600 ई. पू. से 600 ई.

स्मरणीय बिन्दु :–

1. महान दार्शनिकों के विचार भौतिक और लिखित परम्पराओं में संग्रहित हुए तथा स्थापत्य और मूर्तिकला के माध्यम से अभिव्यक्त हुए।
2. बौद्ध धर्म के विश्वासों और विचारों को जानने का प्रमुख स्रोत है साँची का स्तूप।
3. 19 वीं शताब्दी में अंग्रेज़ों व फ्रांसीसियों ने साँची के स्तूप में विशेष दिलचस्पी दिखाई।
4. आरंभ में स्तूप वस्तुतः टीले होते थे। यह पवित्र बौद्ध स्थल है, जहाँ आँगन के बीच चबूतरों पर बुद्ध से जुड़े अवशेषों को गाड़ा जाता था।
5. साँची के स्तूप समूह के संरक्षण में भोपाल की शासक शाहजहाँ बेगम और सुल्तान जहाँ बेगम का बहुत योगदान था।
6. शाहजहाँ बेगम ने यूरोपियनों को केवल स्तूप के तोरण द्वार की प्लास्टर प्रतिकृति ही लेकर जाने दी, सुल्तानजहाँ बेगम ने रख रखाव के लिए धन दिया, संग्रहालय व अतिथिशाला बनवाई।
7. ई. पूर्व प्रथम सहस्त्राब्दि में जीवन के रहस्यों को समझने के लिए जरथुस्त्र, खुंगत्सी, सुकरात, प्लेटो, अरस्तु महावीर, बुद्ध आदि चिंतकों का उदय हुआ।
8. पूर्व वैदिक परंपरा के ऋग्वेद में अग्नि, इंद्र, सोम आदि कई देवताओं की स्तुति है तथा यज्ञों का विशेष महत्व दर्शाया गया है।
9. बुद्ध और महावीर जैसे चिंतकों ने वेदों पर प्रश्न उठाया और जीवन का अर्थ तथा पुर्नजन्म आदि के बारे में जानने का प्रयास किया।
10. बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन 'त्रिपिटक' में है। (सुत्तपिटक, विनयपिटक, अभिधम्म पिटक)
11. जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर ने अवधारणा प्रस्तुत की कि संपूर्ण विश्व प्राणवान है।
12. जैन धर्म के पाँच प्रमुख व्रत हैं – सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह व ब्रह्मचर्य। हत्या न करना, चोरी न करना, झूठ न बोलना, ब्रह्मचर्य (अमृषा) और धन संग्रह न करना।

13. जैन विद्वानों ने प्राकृत, संस्कृत, तमिल भाषाओं में साहित्य का सृजन किया।

14. बुद्ध के संदेश सैकड़ों वर्षों के दौरान पूरे उपमहाद्वीप में और उसके बाद मध्य एशिया होते हुए चीन, कोरिया और जापान, श्रीलंका से समुद्र पार कर म्याँमार, थाइलैंड और इंडोनेशिया तक फैले।

15. बुद्ध के शिष्यों के दल ने संघ की स्थापना की। बुद्ध के अनुयायी कई सामाजिक वर्गों से थे परन्तु संघ में आने पर सब बराबर माने जाते थे।

16. बुद्ध की उपमाता महाप्रजापति गौतमी संघ में आने वाली प्रथम भिक्खुनी बनी। ऐसी स्त्रियाँ जो संघ में आई वे धम्म की उपदेशिकाएँ बनी। भविष्य में वे थेरी बनी, जिसका अर्थ है ऐसी महिलाएं जिन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया हो।

17. बौद्ध संघ में समाहित होने पर सभी को बराबर माना जाता था क्योंकि भिक्खु और भिक्खुनी बनने पर उन्हें अपनी पुरानी पहचान को त्याग देना पड़ता था।

18. बौद्ध धर्म में 'निर्वाण' का अर्थ है, अहं और इच्छा को समाप्त होना।

19. प्रारंभिक मूर्तिकारों ने बुद्ध को मानव रूप में न दिखाकर उनकी उपस्थिति प्रतीकों के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया।

20. साँची के स्तूप में शालभंजिका की मूर्ति इस बात को इंगित करती है कि जो लोग बौद्ध धर्म में आए उन्होंने बुद्ध–पूर्व और बौद्ध धर्म से इत्र दूसरे विश्वासों, प्रथाओं और धारणाओं से बौद्ध धर्म को समृद्ध किया।

21. वैष्णव धर्म हिंदु धर्म की वह परंपरा थी जिसमें विष्णु को सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता माना जाता था। वैष्णववाद में विष्णु के कई अवतारों के आस–पास पूजा पद्धतियाँ विकसित हुई। इस परंपरा के अनुसार विष्णु के दस अवतार थे।

22. शैव परंपरा में शिव को सर्वोच्च परमेश्वर माना गया।

23. महिलाएं और शूद्र साहित्य पढ़ने–सुनने से वंचित थे जबकि वे पुराणों को सुन सकते थे।

24. ऋगवेद अग्नि, इंद्र, सोम आदि कई देवताओं की स्तुति का संग्रह है। यज्ञों के समय इन स्त्रोतों का उच्चारण किया जाता था और लोग मवेशी, बेटे, स्वास्थ्य तथा लंबी आयु के लिए प्रार्थना करते थे।

25. समकालीन बौद्व ग्रंथों में हमें 64 संप्रदायों या चिंतन परम्पराओं का उल्लेख मिलता है। इससे हमें जीवंत चर्चाओं और विवादों की एक झांकी मिलती है।

27. सुत्त पिटक महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का संग्रह है।

28. अभिधम्म पिटक दर्शन शास्त्र से जुडे विषयों का संग्रह है।

29. संतचरित्र किसी संत या धार्मिक नेता की जीवनी है। इसमें संत की उपलब्धियों का गुणगाान किया जाता है जो तथ्यामक रूप से पूरी तरह सही नही होते।

30. बौद्व धर्म में चिन्तन की नई परंपरा को महायान की संज्ञा दी गई ये लोग दूसरे बौद्व परंपराओं के सर्मथकों को हीनयान कहते थे। लेकिन पुरातन पंरपरा के अनुयायी खुद का थेरवादी कहते थे।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक वाले)

1. स्तूप की कोई एक विशेषता बताइए।

2. प्राचीन भारत में किन दो धर्मों का उत्थान हुआ?

3. छठी शताब्दी ई. पूर्व से भारत में जैन और बौद्ध धर्म के उदय के दो कारण बताइए।

4. त्रिपिटक क्या है? संख्या में कितने हैं?

5. 'नियति वादी' और 'भौतिक वादी' विचारकों की मुख्य विशेषताओं में से एक विशेषता लिखिए।

6. 'चैत्य' से आप क्या समझते हैं ?

7. 'विहार' किसे कहते हैं ?

8. 'स्तूप' से आप क्या समझते हैं ?

9. जेम्स फर्गुसन किस प्रकार साँची को समझने में भूल कर गए ?

रिक्त स्थान भरिए।

10. मध्यप्रदेश में भोपाल के पास प्रसिद्व..... का स्तूप है।

11. ईसा की प्रथम सदी के बाद बौद्व धर्म बंट गयाः

    क) अलवार और नयनार में
    ख) हीनयान और व्रजयान में
    ग) महायान और व्रजयान में
    घ) हीनयान और महायान में

12. त्रिपिटक का शाब्दिक अर्थ हैः

क) चार टोकरियां
ख) तीन पत्ते
ग) तीन टोकरियां
घ) तीन फूल

13. बुद्धचरित के रचयिता थे।

क) गौतम बुद्ध
ख) अश्वघोष
ग) महावीर
ग) पार्श्वनाथ

14. बुद्ध के उपदेश शामिल है

क) सुत्त पिटक में
ख) विनय पिटक में
ग) अभिधम्म पिटक में
ग) इनमें से कोई नहीं

15. कलकता में इंडियन म्यूज़ियम की स्थापना कब हुई

क) 1614 में
ख) 1714 में
ग) 1814 में
ग) 1914 में

16. सांची को विश्वकला दाय स्थान घोषित किया गया

क) 1889 में
ख) 1950 में
ग) 1850 में
ग) 1989 में

17. उचित क्रम चुनिए

I. राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली की नींव रखी गई
II. इंडियन म्यूजियम कलकता की स्थापना
III. कनिंधम ने भिलसा टोप्स किताब लिखी
IV. गवर्नमेंट म्यूजियम मद्रास की स्थापना

निम्न में से उचित क्रम चुनिएः

(क) II, IV, III, I
(ख) III, IV, II, I
(ग) II, IV, I, III
(घ) I, II, III, IV

18. उचित क्रम चुनिए

I. सबसे पुराने मंदिर
II. बौद्व एवं जैन धर्म का आगमन
III. प्रारंभिक वैदिक परंपराए
IV. आंरभिक स्तूप

उचित क्रम हैं

(क) III, II, I, IV
(ख) III, II, IV, I
(ग) III, I, IV, II
(घ) II, I, III, IV

19. युग्म सुमेलित कीजिए

सूची I	सूची II
I. वैदिक देवता	1. 64
II. चिंतन परंपराएं	2. हर्मिका
III. स्तूप	3. तीर्थंकर
IV. जैन धर्म	4. अग्नि सोम

सही युग्म है

(क) I-4, II-I, III-2, IV-3
(ख) I-2, II-3, III-4, IV-1
(ग) I-2, II-1, III-3, IV-4
(घ) I-1, II-2, III-3, IV-4

20. युग्म सुमेलित कीजिए

I. जैन धर्म	1. महात्मा बुद्ध
II. बौद्व धर्म	2. बौद्ध ग्रंथ
III. प्रथम तीर्थंकर	3. ऋषभनाथ
IV. त्रिपिटक	4. वर्धमान महावीर

सही युग्म है

(क) I-1, II-2, III-3, IV-4
(ख) I-3, II-2, III-1, IV-4
(ग) I-1, II-3, III-2, IV-4
(घ) I-4, II-1, III-3, IV-2

21. उपर्युक्त चित्र को ध्यान से देखिए तथा चित्रांकित घटना का नाम बताइए।

उद्धरण आधारित प्रश्न (3 अंक वाले)

I. दिए गए उद्रण के ध्यान से पढ़िए तथा नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

भिक्षुओं और भिक्खुनियों के लिए नियम

ये नियम विनय पिटक में मिलते हैं :

जब कोई भिक्खु एक नया कंबल या गलीचा बनाएगा तो उसे इसका प्रयोग कम से कम छः वर्षों तक करना पड़ेगा। यदि छः वर्ष से कम अवधि में वह बिना भिक्खुओं की अनुमति के एक नया कंबल या गलीचा बनवाता है तो चाहे उसने अपने पुराने कंबल/गलीचे को छोड़ दिया हो या नहीं – नया कंबल या गलीचा उससे ले लिया जाएगा और इसके लिए उसे अपराध स्वीकरण करना होगा।

यदि कोई भिक्खु किसी गृहस्थ के घर जाता है और उसे टिकिया या पके अनाज का भोजन दिया जाता है तो यदि उसे इच्छा हो तो वह दो से तीन कटोरा भर ही स्वीकार कर सकता है। यदि वह इससे ज़्यादा स्वीकार करता है तो उसे अपना 'अपराध' स्वीकार करना होगा। दो या तीन कटोरे पकवान स्वीकार करने के बाद उसे इन्हें अन्य भिक्खुओं के साथ बाँटना होगा। यही सम्यक आचरण है।

यदि कोई भिक्खु जो संघ के किसी विहार में ठहरा हुआ है, प्रस्थान के पहले अपने द्वारा बिछाए गए या बिछवाए गए बिस्तरे को न ही समेटता है, न ही समेटवाता है, या यदि वह बिना विदाई लिए चला जाता है तो उसे अपराध स्वीकरण करना होगा।

(A) महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन किया गया है –

(क) रामायण में (ख) त्रिपिटक में
(ग) गीता में (घ) मनुस्मृति में

(B) बौद्ध भिक्षु तथा भिक्षुवियों सम्बन्धी नियम प्राप्त होते हैं –

(क) विनय पिटक में (ख) सुत्त पिटक में
(ग) अमिधम्क (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(C) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) तथा दूसरो को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है।

कथन (A) – यदि कोई भिक्षु आवश्यकता से अधिक भोजन भिक्षा में प्राप्त करता है तो उसे अपना 'अपराध' स्वीकार करना होगा तथा उसे अन्य भिक्षुओं में बाँटना होगा।

कारण (R) – बौद्ध भिक्षुओं से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे सम्यक आचरण ही करें।

(क) केवल कथन (A) ही सही है।
(ख) केवल कारण (R) ही सही है।
(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है परन्तु कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ही सही है और कारण (R) कथन (A) का सही स्पष्टीकरण देता है।

(D) बौद्ध धर्म में चिन्तन की नई परम्परा को कहा गया है –

(क) महायान (ख) हीनयान
(ग) बौद्धमत (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

II. मथुरा में प्राप्त बुद्ध के इस चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

A) बौद्ध धर्म में जीवन का परम लक्ष्य माना गया है :

(क) बोद्धिसत्त बनना (ख) सत्य के मार्ग पर चलना

(ग) पुनर्जन्म (घ) निर्वाण प्राप्त करना

B) बौद्ध शिक्षाओं के अनुसार एक व्यक्ति निर्वाण प्राप्त कर सकता है :

(क) ज्ञान प्राप्त करके (ख) बोद्धिसत्त बन कर

(ग) अहिंसा के मार्ग द्वारा (घ) व्यक्तिगत प्रयासों द्वारा

C) बौद्ध धर्म की पुरानी परम्पराओं को अपनाने वाले कहलाए :

(क) हीनयान (ख) महायान

(ग) बोद्धिसत्त (घ) निर्वाण

D) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में और दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है –

कथन (A) – बुद्ध ने व्यक्तिगत प्रयास से प्रबोधन और निब्बान प्राप्त किया।

कारण (R) – बोद्धिसत्त अपने पुण्यों का प्रयोग दूसरों की सहायता करने के के लिए करते थे।

(क) केवल कथन (A) ही सही है।
(ख) केवल कारण (R) ही सही है।
(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण देता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक वाले)

1. भोपाल की बेगमों ने साँची के स्तूप के संरक्षण में क्या योगदान दिया ? तीन बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट कीजिए।
2. बौद्ध धर्म के तेजी से प्रसार के कारणों का विवरण दीजिए।
3. जैन धर्म के संस्थापक कौन थे ? भारतीय समाज पर जैन धर्म का क्या प्रभाव पड़ा ?
4. गौतम बुद्ध द्वारा दिए गए मध्यम मार्ग के लिए मुख्य सिद्धान्त क्या थे ? किन्हीं तीन का वर्णन कीजिए।
5. 'हीनयान' और 'महायान' के बीच प्रमुख अंतर स्पष्ट कीजिए।
6. बौद्ध कालीन मूर्तिकला की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं ? किन्हीं तीन का उल्लेख कीजिए।
7. स्तूप की रचना किस प्रकार की जाती थी ?
8. छठी शताब्दी ई. पूर्व को भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण क्यों माना जाता है ?
9. बौद्ध संघ में भिक्खुओं और भिक्खुनियों को किन नियमों का पालन करना पड़ता था ?
10. जैन धर्म की कोई तीन महत्वपूर्ण शिक्षाएँ लिखिए।
11. आप कैसे कह सकते हैं कि सांची की मूर्तिकला की चाबी बौद्व साहित्य में मिलती है। कोई तीन कारण लिखिए।
12. वैष्णववाद विचारधारा की तीन महत्वपूर्ण विशेषताएं लिखिए।
13. स्तूप किस धर्म से संबधित होते थे? इन्हें क्यों बनाया जाता था? कोई दो कारण दीजिए।
14. 600 ई.पू. से 600 ईस्वी तक के भारतीय दर्शन की कोई तीन प्रमुख विशेषताएं बताइए।
15. बौद्व ग्रंथ किस प्रकार तैयार एवं संरक्षित किए जाते थे?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक वाले)

1. जैन धर्म की उत्पत्ति, शिक्षाओं तथा विस्तार की जानकारी दीजिए। (संकेत–पृ.स. 88–89 एन.सी.ई.आर.टी)
2. पौराणिक हिन्दू धर्म का उदय किस प्रकार हुआ ? इसकी मुख्य विशेषताएँ बताओ। (संकेत–पृ.स. 104–106 एन.सी.ई.आर.टी)
3. बौद्ध धर्म की भारतीय समाज एवं संस्कृति को क्या देन हैं ? स्पष्ट कीजिए। (संकेत–पृ.स. 89–91 एन.सी.ई.आर.टी)
4. बौद्ध धर्म के संगठन एवं नियमों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए। (संकेत–पृ.स. 92–94 एन.सी.ई.आर.टी)
5. स्तूप क्यों बनाए जाते थे? इनकी संरचना से संबधित विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (संकेत–पृ.स. 96–97 एन.सी.ई.आर.टी)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1. (1) जैन धर्म के मूल सिद्धांत वर्द्धमान महावीर के जन्म से पूर्व छठी ई. पू. में प्रचलित थे।
   (2) महावीर के पहले 23 तीर्थंकर हो चुके थे। पहले तीर्थंकर ऋषभदेव तथा 23वें पार्श्वनाथ थे।
   (3) प्राप्त साक्ष्यों के अनुसार जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर ने जैन धर्म को तथा इसकी शिक्षाओं को जन मानस तक पहुँचाया।
   (4) जैन धर्म के पाँच व्रत थे– हत्या न करना, चोरी न करना, झूठ न बोलना, ब्रह्मचर्य और धन संग्रह न करना।
   (5) जैन मान्यताओं के अनुसार जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म के द्वारा निर्धारित होता है।
   (6) इंसानों, जीव–जन्तुओं, पेड़ पौधों एवं कीड़े मकोड़ों को न मारना जैन दर्शन का केन्द्र बिन्दु है।
   (7) धीरे–धीरे यह भारत के कई हिस्सों में फैला।
   (8) जैन विद्वानों ने संस्कृत, प्राकृत एवं तमिल जैसी भाषाओं में साहित्य का सृजन किया।

   (संकेत पृष्ठ सं. 88–89 एन.सी.ई.आर.टी)

2. (1) मुक्तिदाता की कल्पना केवल बौद्ध धर्म तक ही सीमित नहीं थी।
(2) एक अलग ढंग का विश्वास उन परंपराओं में भी विकसित हो रहे थे जिसे आज हिन्दू धर्म के नाम से जाना जाता है।
(3) मुख्य रूप से दो परंपराएँ– वैष्णव एवं शैव।
(4) समर्पण के भाव को ही भक्ति कहते हैं।
(5) वैष्णववाद में ईश्वर के दस अवतारों का वर्णन हैं।
(6) विश्व रक्षा का काम विष्णु का है।
(7) कई अवतारों को मूर्तियों में दिखाया गया है।
(8) शिव के प्रतीक के रूप में लिंग की पूजा होती है।
(9) वेदों एवं पुराणों में हिन्दू धर्म के नियम मौजूद हैं।
(10) महिलाओं एवं शूद्रों को प्राचीन काल में वेद श्रवण का अधिकार नहीं था।
(11) भारत के विभिन्न भागों में मंदिरों के निर्माण हुए।

(संकेत पृष्ठ सं. 104–106 एन.सी.ई.आर.टी)

3. (1) बौद्ध धर्म की स्थापना गौतम बुद्ध ने की। 563 ई. पू. में इनका जन्म लुम्बिनी नेपाल में हुआ था।
(2) वे शाक्य कबीले के सरदार के पुत्र थे।
(3) उनका बचपन सुखों में बीता लेकिन बोधगया में ज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् विश्व को एक नया मार्ग दिखाने का कार्य किया।
(4) अहिंसा और शांति का संदेश पूरे विश्व को दिया।
(5) बुद्ध की शिक्षाओं को सुत पिटक में दी गई कहानियों के आधार पर लिखा गया। बौद्ध दर्शन के अनुसार संसार नश्वर है।
(6) मध्यम मार्ग अपनाकर संसार के दुःखों से हम छुटकारा पा सकते हैं।
(7) बुद्ध ने सबको निर्देश दिया कि अपना दीपक खुद बनो।
(8) बौद्ध धर्म के चार सत्य है।
(9) अष्टागिंक मार्ग बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का सार है।
(10) जीवन का उद्देश्य है मोक्ष की प्राप्ति।

(संकेत पृष्ठ सं. 89–91 एन.सी.ई.आर.टी)

4. (1) बौद्ध के अनुयायियों ने संघ की स्थापना की।
(2) वे सभी धम्म के शिक्षक बन गए।

(3) शुरू में केवल पुरुषों को ही संघ में आने की अनुमति थी।

(4) बाद में महिलाओं को भी प्रवेश मिल गया।

(5) बुद्ध के अनुयायी समाज के भिन्न वर्गों से आए थे।

(6) वे एक साथ मठों में रहते थे।

(7) मठों में रहने वाले सभी लोगों को बराबर माना जाता था।

(8) पन्द्रह वर्ष आयु से कम का व्यक्ति संघ में प्रवेश नहीं कर सकता था।

(9) गृह त्याग करने से पूर्व माता–पिता का आदेश जरूरी था।

(संकेत पृष्ठ सं. 92–94 एन.सी.ई.आर.टी)

5. (1) बुद्ध से जुड़े अवशेषों जैसे अस्थियाँ, उनके द्वारा प्रयुक्त वस्तुओं को गाड़कर इसे संरक्षित करने के लिए एक टीलानुमा निर्माण कर दिया जाता था जिसे स्तूप कहते हैं।

(2) अशोक ने बौद्ध के अवशेषों को सुरक्षित रखने के सांची, सारनाथ एवं बरहुत में स्तूप बनवाए।

(3) स्तूप एक गोलार्द्ध मिट्टी के टीले को कहा गया, बाद में इसकी संरचना जटिल हो गयीं। इसे अंड कहा गया। इसके ऊपर हर्मिका होती थी। इससे एक मस्तूल निकलता था जिसे यष्टि कहा गया। इस पर अक्सर एक छत्री लगी होती थी।

(4) टीले के चारों ओर एक वेदिका होती थी जो इसे सामान्य दुनिया से अलग करती थी।

(5) बाद में वेदिकाओं को अलंकृत किया गया एवं तोरणद्वार बनाये गये।

(6) स्तूप के टीले पर भी नक्काशी एवं अलंकरण किये जाने लगे।

(संकेत पृष्ठ सं. 94–97 एन.सी.ई.आर.टी)

विषय–4

(विचारक, विश्वास और इमारतें)

अनुच्छेदों पर आधारित प्रश्न (5 अंक वाले)

1. **स्तूप क्यों बनाए जाते थे**

यह उद्धरण महापरिनिब्बान सुत्त से लिया गया है जो 'सुत्त पिटक' का हिस्सा है: परिनिर्वाण से पूर्व आनंद ने पूछा–

भगवान् हम तथागत (बुद्ध का दूसरा नाम) के अवशेषों का क्या करेंगे? बुद्ध ने कहा, ''तथागत के अवशेषों को विशेष आदर देकर खुद को मत रोको। धर्मोत्साही बनो अपनी भलाई के लिए प्रयास करो।''

लेकिन विशेष आग्रह करने पर बुद्ध बोले–

''उन्हें तथागत के लिए चार महापथों के चौक पर थूप (स्तूप का पाली रुप) बनाना चाहिए। जो भी वहाँ धूप या माला चढ़ाएगा, या वहाँ सिर नवाएगा वह वहाँ पर हृदय में शांति लाएगा, उन सबके लिए वह चिर काल तक सुख और आनंद का कारण बनेगा।

1. यह उद्धरण किस मूल पाठ से लिया गया है? 1
2. 'स्तूप' क्या होते है? आनंद को स्तूप बनाने की सलाह किसने दी थी? 2
3. तथागत कौन थे? उन्होंने स्तूप का क्या महत्व बताया था? 2

2. **उपनिषद की कुछ पंक्तियाँ**

निम्नलिखित दो श्लोक संस्कृत भाषा में रचित लगभग छठी सदी ईसा पूर्व के छांदोग्य उपनिषद से लिए गए है :

आत्मा की प्रकृति

मेरी यह आत्मा धान या यव या सरसों के बीज की गिरी से भी छोटी है। मन के अंदर छुपी मेरी यह आत्मा पृथ्वी से भी विशाल, क्षितिज से भी विस्तृत, स्वर्ग से भी बड़ी है और इन सभी लोकों से भी बड़ी हैं।

सच्चा यज्ञ

यह (पवन) जो बह रहा है, निश्चय ही एक यज्ञ है.....बहते–बहते यह सबको पवित्र करता है, इसीलिए यह वास्तव में यज्ञ है।

1) उपरोक्त दो श्लोक किस ग्रंथ से लिए गए हैं? 1
2) सच्चा यज्ञ श्लोक में पवन को एक यज्ञ क्यों कहा गया है 2
3) इस उपनिषद में आत्मा की प्रकृति के विषय में क्या लिखा गया है? 2

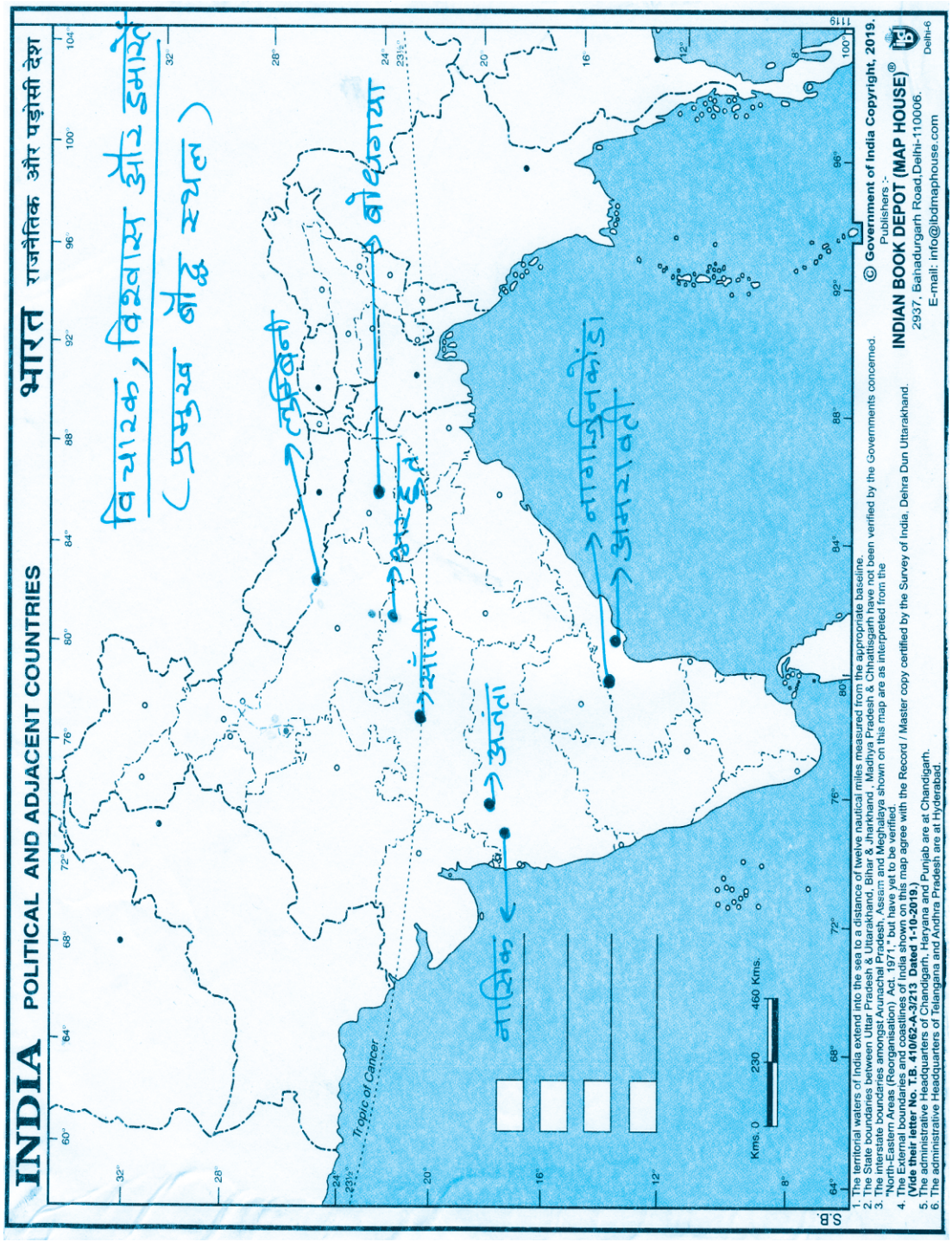

विषय–चार

INDIA POLITICAL AND ADJACENT COUNTRIES
भारत राजनैतिक और पड़ोसी देश
विचारक, विश्वास और इमारतें
(प्रमुख बौद्ध स्थल)
लुम्बिनी
बोधगया
सांची
अजंता
नासिक
नागार्जुनकोंडा
अमरावती
Tropic of Cancer
INDIAN BOOK DEPOT (MAP HOUSE)
© Government of India Copyright, 2019.

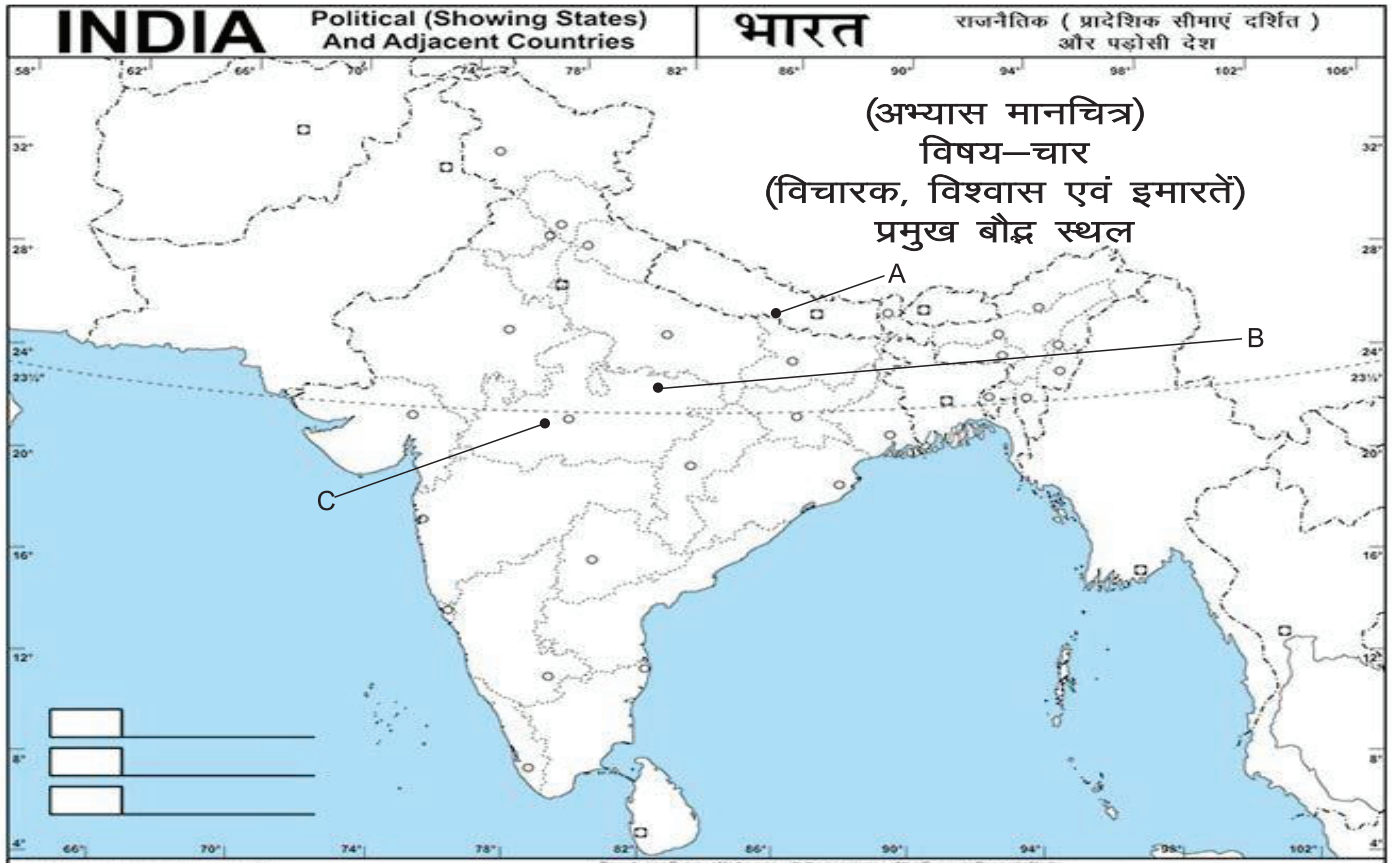

1. भारत के दिए गए राजनीतिक रेखा मानचित्र पर बौद्ध धर्म से संबधित प्रमुख स्थलों – सारनाथ, अमरावती और बोध गया को उपयुक्त चिन्हों से दर्शाइए।

2. भारत के दिए गए इसी राजनीतिक रेखा मानचित्र पर तीन प्रमुख बौद्ध स्थलों को A,B और C से अंकित किया गया है। इनकी पहचान करके सही नाम लिखिए।

विषय–5

यात्रियों के नजरिए–समाज के बारे में उनकी समझ
(लगभग दसवीं सदी से सत्रहवीं सदी तक)

स्मरणीय बिन्दु :–

1. महिलाओं और पुरूषों द्वारा यात्रा करने के अनेक कारण थे। जैसे कार्य की तलाश में, प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए, व्यापारियों, सैनिकों, पुरोहितों और तीर्थ यात्रियों के रूप में या फिर साहस की भावना से प्रेरित होकर यात्राएं की गईं।
2. उप महाद्वीप में आए यात्रियों द्वारा दिए गए सामाजिक विवरण अतीत की जानकारी में सहायक सिद्ध हुए।
3. 10वीं सदी से 17वीं सदी तक तीन प्रमुख यात्री भारत में आये।

	यात्री	आगमन	जन्म स्थान	लिखित ग्रंथ	ग्रंथ की भाषा
1.	अल–बिरूनी	11वीं शताब्दी	उज्बेकिस्तान (ख्वारिज्म)	किताब–उल–हिन्द	अरबी
2.	इब्न–बतूता	14वीं शताब्दी	मोरक्को (अफ्रीका महाद्वीप)	रिह्ला (यात्रा वृतत्त)	अरबी
3.	फ्रांस्वा बर्नियर	17वीं शताब्दी	फ्रांस	ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर	फ्रेन्च

4. अलबिरुनी का आधुनिक उज्बेकिस्तान में जन्म 973 ई. में हुआ। वह कई भाषाओं का ज्ञाता था जिनमें सीरियाई, फारसी, हिब्रू और संस्कृत भाषा शामिल हैं।
5. अल–बिरूनी को भारत में अनेक अवरोधों का सामना करना पड़ा जैसे संस्कृत भाषा से वह परिचित नहीं था, धार्मिक अवस्था और प्रथा में भिन्नता, तथा अभिमान।
6. 1017 ई. में सुल्तान महमूद, अलबिरुनी को अपने साथ गजनी ले गया।
7. **अलबिरुनी–पुस्तक किताब– उल हिन्द**

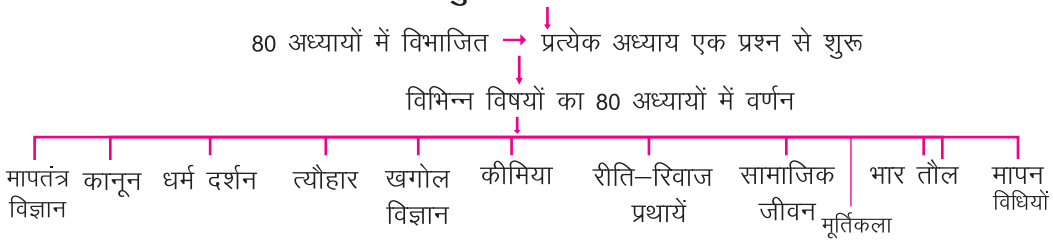

8. अल–बिरूनी संस्कृत, पाली तथा प्राकृत ग्रंथों के अरबी भाषा में अनुवादों तथा रूपांतरणों से परिचित था। इनमें दंतकथाओं से लेकर खगोल–विज्ञान और चिकित्सा संबंधी कृतियों भी शामिल थी।

9.

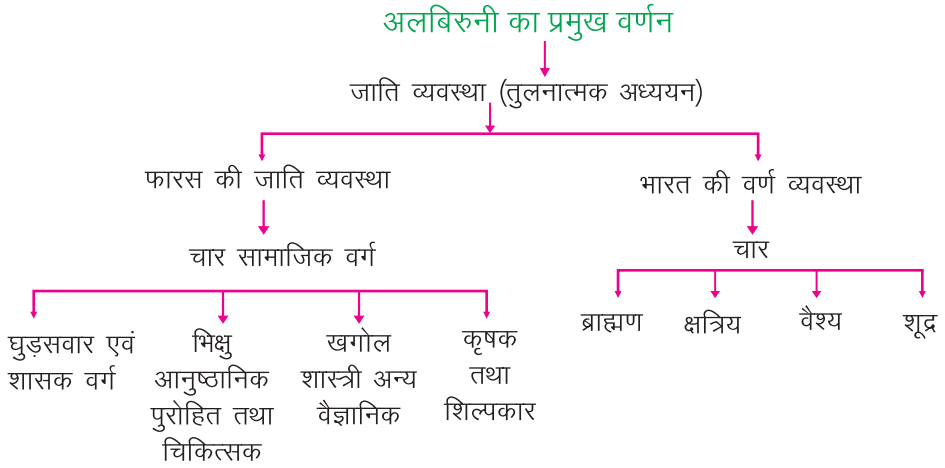

10. इब्न बतूता 1333 ई. में सिन्ध पहुँचा। वह दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के समय में भारत आया।

11. इब्न बतूता ने भारतीय शहरों का जीवन्त विवरण किया है जैसे–भीड़–भाड़ वाली सड़कें, चमक–दमक वाले बाजार, बाजार आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र, डाक व्यवस्था, दिल्ली एवं दौलताबाद, पान और नारियल ने इब्न बतूता को आश्चर्य चकित किया। उसने दास–दासियों के विषय में भी लिखा।

12. इब्नबतूता के विवरण के अनुसार उस काल में सुरक्षा व्यवस्था समुचित नहीं थी।

13. बर्नियर के अनुसार भारत में निजी भू–स्वामित्व का अभाव था जिससे बेहतर भूधारक वर्ग का उदय न हो सका। बर्नियर के अनुसार भारत में मध्यवर्ग के लोग नहीं थे। बर्नियर ने सती प्रथा का विस्तृत वर्णन किया है।

14. फ्रांस्वा बर्नियर एक चिकित्सक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक तथा एक इतिहासकार भी था। वह 1656 में भारत आया तथा शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह के चिकित्सक के रूप में मुगल दरबार में रहा।

15. बर्नियर ने पूर्व और पश्चिम की तुलना की।

16. बर्नियर के विवरणों ने अठारहवीं–उन्नीसवीं शताब्दी के पश्चिमी विचारकों को प्रभावित किया यथा मांटेस्क्यू एवं कार्ल मार्क्स। मांटेस्क्यू ने बर्नियर के वृतान्त का प्रयोग प्राच्य निरंकुशवाद के सिद्धान्त को विकसित करने में किया।

17. बर्नियर ने मुगलकालीन शहरों को शिविर नगर बताया जो राजकीय दरबार के आगमन के साथ अस्तित्व में आते और दरबार के चले जाने के बाद पतनोन्मुख हो जाते।

18. भूस्वामित्व के प्रश्न की तरह भारतीय नगरों के बारे में भी बर्नियर ने अति सरलीकृत चित्र प्रस्तुत किया।

19. महिलाओं का जीवन सती प्रथा के अलावा कई और चीजों के चारो ओर घूमता था। उनका श्रम कृषि तथा कृषि के अलावा होने वाले उत्पादन, दोनों में महत्वपूर्ण था। व्यापारिक परिवारों से आनेवाली महिलाएँ व्यापारिक गतिविधियों में हिस्सा लेती थीं।

20. दासों और दासियों का इस्तेमाल घरेलू श्रम, पालकी और डोला उठाने, मुखबिरी और मनोरंजनात्मक कार्यों के लिए किया जाता था।

21. बर्नियर ने पश्चिम को पूर्व से बेहतर दर्शाने के लिए भारतीय कुरीति–सती प्रथा को एक महत्वपूर्ण संकेतक के रूप में प्रयोग किया।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक वाले)

1. इब्न–बतूता का नारी दासो के बारे में कोई एक विचार लिखिए
2. अल विरूनी को संस्कृतवादी परंपरा को समझने में भाषा अवरोध क्यों लगी?
3. अल विरूनी का जन्म सन्.....में ख्वारिज्म में हुआ था।
4. उदाहरण देकर दर्शाइए कि भारतीय सूती वस्त्रों की मांग पश्चिम व दक्षिण एशिया में बहुत अधिक क्यों थी
5. बर्नियर ने मुगल शासन के अंतर्गत शिल्पकारों की जटिल सामाजिक वास्तविकता का वर्णन किस प्रकार किया है? कोई एक कारण स्पष्ट कीजिए।
6. प्रसिद्ध यूरोपीय लेखक दुआर्ते बरबोस का यात्रा वृतांत किसके संदर्भ में है?
7. इब्न बतूता द्वारा वर्णित दो प्रकार की डाक व्यवस्था के नाम बताइए
8. मार्कोपोलो कौन था?
9. बर्नियर का शिविर नगर से क्या अभिप्राय था?
10. इब्न बतूता ने भारत आने से पूर्व किन–किन देशों की यात्रा की?
11. 17वीं शताब्दी में निम्न में से जोयूरोपीय यात्री भारतीय उपमहाद्वीप में आया था वह है –
    क) अल विरूनी
    ख) इब्न बतूता
    ग) अबुल फजल
    घ) फ्रांस्वा बर्नियर
12. रिह्ला के अनुसार उपमहाद्वीप का सबसे बड़ा शहर थाः
    क) सूरत
    ख) दिल्ली
    ग) दौलताबाद
    घ) आगरा

13. दसवीं से सत्रहवीं सदी के बीच लोग निम्न उदेश्यों से प्रेरित होकर यात्राएं करते थे

क) कार्य की तलाश में
ख) साहस की भावना से प्रेरित होकर
ग) व्यापारियों, सैनिकों, पुरोहितों और तीर्थयात्रियों के रुप में
घ) उपरोक्त सभी

14. बर्नियर का विवरण उपमहाद्वीप की जिस जटिल सामाजिक सच्चाई की ओर इशारा करता हैं, वह है –

क) यद्यपि शिल्पकारों को अपने उत्पादों को बेहतर बनाने के लिए राज्य द्वारा कोई प्रोत्साहन नहीं था तथापि पूरे विश्व में भारतीय उत्पादों की बहुत मांग थी।
ख) उपमहाद्वीप के शहर विनष्ट तथा खराब हवा से दूषित थे।
ग) भारत में मध्य की स्थिति के लोग नही थे।
घ) उपरोक्त में से कोई नहीं।

15. अल–विरूनी की कृति किताब–उल–हिन्द के संबध में असत्य कथन है–

क) इसकी भाषा सरल और स्पष्ट है।
ख) इसमें भारतीय धर्म, दर्शन, त्यौहारों, खगोल–विज्ञान, कीमिया, मूर्तिकला आदि के विषय में जानकारी दी गई है।
ग) यह फारसी भाषा में लिखी गई है।
घ) विभिन्न विषयों के आधार पर अस्सी अध्यायों में विभाजित है।

16. इब्न–बतूता के संबध में जो कथन सत्य है, वह है –

क) इब्न–बतूता के यात्रा वृतांत का नाम 'ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर' है।
ख) इनका जन्म तैजियर के सबसे सम्मानित तथा शिक्षित परिवार में हुआ
ग) 1017 ई. में सुल्तान महमूद कई अन्य विद्वानों और कवियों के साथ इब्न–बतूता को गजनी ले आया।
घ) उपरोक्त में से कोई नहीं।

17. फ्रांस्वा बर्नियर के संबंध में जो कथन असत्य है, वह है –

क) वह यूरोप का रहने वाला था।
ख) वह मुगल दरबार के संग चिकित्सक, बुद्विजीवी तथा वैज्ञानिक के रुप में जुडा रहा।
ग) उसने भारत का चित्रण द्वि–विपरीतता के नमूने के आधार पर किया।
घ) उसने अपने वृतांत में दास प्रथा का विवेचन किया।

18. युग्म सुमेलित कीजिए

सूची I	सूची II
I. उलुक	A. सती बालिका का विवरण
ii. दावा	B. अश्व डाक व्यवस्था
iii. बर्नियर	C. अपवित्रता की मान्यता को अस्वीकृत करना
iv. अल–विरूनी	D. पैदल डाक व्यवस्था

निम्न युग्मों मे से सही युग्म चुनिए

क) I-A, II-C, III-D, IV-B
ख) I-B, II-A, III-D, IV-C
ग) I-B, II-D, III-A, IV-C
घ) I-D, II-B, III-A, IV-C

19. युग्म सुमेलित कीजिए

सूची I	सूची II
I. अल–विरूनी	A. नारियल और पान का विवरण
ii. इब्न–बतूता	B. भारत में राज्य ही भूमि का एकमात्र स्वामी
iii. बर्नियर	C. भारत में जाति व्यवस्था को प्रतिरूपों के माध्यम से समझने का प्रयास

निम्न युग्मों मे से सही युग्म चुनिए

क) I-C, II-A, III-B
ख) I-A, II-C, III-B
ग) I-C, II-B, III-A
घ) I-B, II-C, III-A

20. कथन : अल–विरूनी अपने लिए निर्धारित उद्देश्य में निहित समस्याओं से परिचित था।

कारण : अवरोध थे भाषा, धार्मिक अवस्था और प्रथा में भिन्नता तथा अभिमान

क) केवल कथन सही है।
ख) केवल कारण सही है।
ग) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन का स्पष्टीकरण करता है।
घ) कथन और कारण दोनों सही है किंतु कारण कथन का स्पष्टीकरण नहीं करता है।

21. नीचे दिए गए चित्र में यूरोपीय पोशाक पहने यात्री को पहचानिए और उसका नाम लिखिए :

उद्धरण आधारित प्रश्न (3 अंक वाले)

I. नीचे दिए गए उद्धरण को ध्यान से पढ़िए और दिए गए किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

इब्न बतूता के पदचिह्नों पर

1400 से 1800 के बीच भारत आए यात्रियों ने फ़ारसी में कई यात्रा वृतांत लिखे। उसी समय भारत से मध्य एशिया, ईरान तथा ऑटोमन साम्राज्य की यात्रा करने वालों ने भी कभी–कभी अपने अनुभव लिखे। इन लेखकों ने अल–विरूनी और इब्न बतूता के पदचिह्नों का अनुसरण किया। इनमें से कुछ ने इन पूर्ववर्ती लेखकों को पढ़ा भी था।

इनमें से सबसे प्रसिद्ध लेखकों में अब्दुर रज़्ज़ाक समरकंदी जिसने 1440 के दशक में दक्षिण भारत की यात्रा की थी, महमूद वली बल्खी, जिसने 1620 के

दशक में व्यापक रूप से यात्राएँ की थी तथा शेख़ अली हाज़िज जो 1740 के दशक में उत्तर भारत आया था, शामिल है। इनमें से कुछ लेखक भारत से सम्मोहित थे, और यहाँ तक कि उनमें से एक महमूद बल्ख़ी तो कुछ समय के लिए सन्यासी भी बन गया था। कुछ अन्य जैसे कि हाज़िन भारत से निराश हुए और यहाँ तक कि घृणा भी करने लगे। वे भारत में अपने लिए एक उत्सवीय स्वागत की आशा कर रहे थे। उनमें से अधिकांश ने भारत को अचंभों के देश के रूप में देखा।

(A) निम्न में से कौन से प्रसिद्ध लेखक ने 1440 के दशक में दक्षिण भारत की यात्रा की

(क) अब्दुर रज़्जाक समरकन्दी (ख) फ्रांस्वा बर्नियर
(ग) मिर्जा अबु तालिब (घ) जल–बिरुनी

(B) 1400 से 1800 के बीच भारत आए यात्रियों ने मुख्यतः किस भाषा में कई यात्रा वृतांत लिखे –

(क) फारसी (ख) हिन्दी
(ग) हिब्रू (घ) संस्कृत

(C) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में तथा दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है।

कथन (A) – शेख़ अली हाज़िन भारत से निराश हुए।

कारण (R) – वह भारत से अपने लिए एक उत्सवीय स्वागत की आशा कर रहे थे।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोंनों सही है और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोंनों सही है पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।
(ग) केवल कथन (A) सही किन्तु कारण (R) सही नहीं है।
(घ) केवल कारण (R) सही किन्तु कथन (A) सही नहीं है।

(D) दिए गए कथनों को पढ़ें –

(i) कुछ लेखक यात्री भारत से सम्मोहित थे
(ii) अधिकांश यात्रियों ने भारत को अचंभों के रूप में देखा।

सही विकल्प चुनें –

(क) दोनों (i) और (ii) सही हैं (ख) केवल (ii) सही है
(ग) केवल (i) सही है (घ) दोनों (i) और (ii) सही नहीं हैं

II. बंगाल के एक मंदिर की बस मृण मूर्तिकला को ध्यान से देखें और किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दें।

A) लोग समुद्री यात्राएँ किया करते थे?

(क) व्यापार करने के लिए (ख) रोमांचकारी अनुभव के लिए
(ग) नए स्थानों की खोज में (घ) उपर्युक्त सभी

B) दिए गए कथनों को पढ़ें –

(a) यात्रा वृतांत हमें किसी क्षेत्र के भौतिक परिवेश की जानकारी देते हैं
(b) इनसे हमें किसी क्षेत्र की स्थापत्य कला और स्मारकों के बारे में पता चलता है

(क) कथन (a) और (b) दोनों सही हैं (ख) सिर्फ कथन (b) सही हैं

C) रिह्ला जिस यात्री का यात्र–वृतांत है, वह है –

(क) अल बिरूनी (ख) इब्न बतूता
(ग) मार्को पोलो (घ) मेगस्थनीज

D) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में और दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है –

कथन (A) – भारतीय उपमहाद्वीप में आए यात्रियों ने यहाँ के सामाजिक विषयों पर लिखा।

कारण (R) – वे यहाँ के विषयों की तुलना अपने मुल्कों से करना चाहते थे।

(क) दोनों कथन (A) और कारण (R) सही हैं और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।
(ग) केवल कथन (A) ही सही है।
(ख) केवल कारण (R) ही सही है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक वाले)

1. मध्यकालीन इतिहास लेखन में यात्रा वृत्तांत का क्या महत्व है? अपने उत्तर की पुष्टि उदाहरण देकर कीजिए।
2. भारत सम्बन्धी विवरण को समझने में अल बिरूनी के समक्ष कौन–सी बाधाएं थी? तीन बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट कीजिए।
3. इब्नबतूता के विवरण से गाँव की कृषि अर्थव्यस्था तथा उपमहाद्वीपीय व्यापार एवं वाणिज्य के बारे में क्या झलक मिलती है?
4. बर्नियर 17वीं शताब्दी के नगरों के बारे में क्या कहते हैं? उनका यह विवरण किस प्रकार संशय पूर्ण हैं?
5. 'सती प्रथा' के संबंध में बर्नियर के क्या दृष्टिकोण थे?
6. अबुल फजल ने भूमि राजस्व को ''राजत्व का पारिश्रमिक'' क्यों बताया है? स्पष्ट कीजिए।
7. इब्नबतूता के वृतांत के आधार पर तत्कालीन संचार प्रणाली की अनूठी व्यवस्था की व्याख्या कीजिए।
8. 'किताब–उल–हिन्द' पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
9. इब्नबतूता के अनुसार यात्रा करना अधिक असुरक्षित क्यों था?
10. ''इब्न बतूता ने दिल्ली शहर को व्यापक अवसरों से भरपूर पाया। अपने उत्तर की पुष्टि, उसके द्वारा दिए गए तथ्यों के आधार पर कीजिए।
11. इब्न बतूता और बर्नियर ने 16वीं व 17वीं शताब्दी की महिलाओं के जीवन की किस प्रकार रोचक झांकी प्रस्तुत की है? स्पष्ट कीजिए।
12. ''बर्नियर के शाही भू–स्वामित्व के विवरण ने पश्चिमी विचारकों जैसे कि फ्रांसीसी दार्शनिक मान्टेस्क्यू और जर्मन कार्ल मार्क्स को प्रभावित किया।'' इस कथन की न्याय संगत पुष्टि कीजिए।
13. बर्नियर ने भू–स्वामित्व के विषय में क्या वर्णन किया है?
14. बर्नियर के विवरणों ने अठारहवीं शताब्दी के पश्चिमी विचारकों को किस प्रकार प्रभावित किया।
15. बर्नियर अपने विवरणों में यूरोपीय शासकों को क्या चेतावनी देता है?
16. मध्यकालीन भारत आने वाले विदेशी यात्रियों के विवरण की कोई तीन विशेषताएं लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक वाले)

1. जाति व्यवस्था के संबंध में अलबिरुनी की व्याख्या पर चर्चा कीजिए।
2. आप किस प्रकार मानते है कि विदेशी यात्रियों के वृतांतों द्वारा 10वीं से 17वीं सदी के इतिहास निर्माण में मदद मिलती है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
3. इब्नबतूता ने अपने विवरण में भारत का किस प्रकार वर्णन किया है?
4. बर्नियर ने अपनी पुस्तक में 'पूर्व एवं पश्चिम' की तुलना किस प्रकार की है?

अथवा

ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर में फ्रांसीसी यात्री ने किन–किन विषयों का वर्णन किया है?

6. इब्न बतूता द्वारा दास प्रथा के संबंध में दिए गए साक्ष्यों का विवेचन कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1. (1) भारत में चार सामाजिक वर्ण– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र

   (2) फारस में भी 4 सामाजिक वर्णों को मान्यता थी।

   1. घुड़सवार तथा शासक वर्ग
   2. भिक्षु–पुरोहित तथा चिकित्सक
   3. खगोलशास्त्री तथा अन्य वैज्ञानिक
   4. कृषक तथा शिल्पकार

   (3) जाति व्यवस्था में निहित अपवित्रता की अवधारणा प्रकृति के नियमों के विरुद्ध हैं।

   (4) अपवित्र वस्तु अपनी पवित्रता की मूल स्थिति को प्राप्त करने का प्रयास करती है।

   (5) सूर्य हवा को स्वच्छ करता है और समुद्र में नमक पानी को गंदा होने से बचाता है।

(संकेत पृष्ठ सं. 124–125 एन.सी.ई.आर.टी)

1. 10वीं से 17वीं सदी के इतिहा निर्माण में विदेशी यात्रियों के वृत्तांत निम्नवत सहायक है–

   (1) दरबार की गतिविधियों की जानकारी।

   (2) धार्मिक विषयों, स्थापत्य के तत्त्वों और स्मारकों की जानकारी।

   (3) लोकप्रिय प्रथाओं, जनकर्ताओं तथा परम्पराओं की जानकारी।

   (4) स्थान विशेष के लोगों की आस्थाएँ, भाषाएँ तथा व्यवहार की जानकारी।

   (5) सामाजिक जीवन की जानकारी।

   (6) उदाहरण के लिए– अब्दुल रज्जाक द्वारा प्रस्तुत विजयनगर के विवरण, अल–बिरुनी, इबनबतूता तथा फ्रांस्क बर्नियर

3.

इब्नबतूता द्वारा किया गया भारत का वर्णन

(i) भारतीय शहर अवसरों से भरपूर

(ii) धनी आबादी वाले समृद्ध शहर तथा रंगीन बाजार

(iii) बाजार सामाजिक तथा आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र

(iv) संचार की अनूठी प्रनाली

दावा (पैदल) उलूक (अश्व)

(v) बाजार सामाजिक तथा आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र

पान नारियल

(vi) भारतीय सामान की मध्य तथा दर्वक्षण एशिया में बहुत मॉग

(संकेत पृष्ठ सं. 126–129 एन.सी.ई.आर.टी)

4. ''ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर'' में वर्णित विषय–

(1) भारतीय स्थिति को यूरोप में हुए विकास की तुलना में दयनीय बताया।

(2) भारत को यूरोप के प्रतिलोम के रूप में प्रस्तुत किया।

(3) भारत में निजी भूस्वामित्व का अभाव जबकि यूरोप में नहीं।

(4) भारतीय समाज को यूरोप की तुलना में दरिद्र लोगों का जनसमूह बताया।

(5) यूरोप में बेहतर भूधारक वर्ग का उदय जबकि भारत में इसका अभाव।

(6) भारत में यूरोप कीत तुलना में शासक वर्ग को छोड़कर समाज के सभी वर्गों के जीवन स्तर में अनवरत पतन।

(संकेत पृष्ठ सं. 130–135 एन.सी.ई.आर.टी)

5. इब्नबतूता के अनुसार दास प्रथा का वर्णन–

(1) दासों का खुले आम बेचा जाना।

(2) दासों का भेंटस्वरूप दिया जाना।

(3) इब्नबतूता ने मुहम्मद बिन तुगलक के लिए भेंटस्वरूप घोड़े–ऊँट तथा दास खरीदे।

(4) दासों में विविधता थी।

(5) दासों को सामान्यता घरेलूकामों के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

(6) घरेलू श्रम वाले दासों की कीमत कम होती थी।

(7) दासियाँ संगीत तथा गायन में निपुण होने के साथ–साथ गुप्तचर का भी काम करती थीं।

(संकेत पृष्ठ सं. 135–136 एन.सी.ई.आर.टी)

विषय–5

अनुच्छेद आधारित प्रश्न (5 अंक वाले)

1. **घोड़े पर और पैदल**

डाक–व्यवस्था का वर्णन इब्नबतूता इस प्रकार करता है।

भारत में दो प्रकार की डाक–व्यवस्था है। अश्व डाक–व्यवस्था जिसे 'उलुक' कहा जाता है, हर चार मील की दूरी पर स्थापित राजकीय घोड़ों द्वारा चालित होती है। पैदल डाक–व्यवस्था के प्रति मील तीन अवस्थान होते हैं, इसे 'दावा' कहा जाता है, और यह एक मील का एक तिहाई होता है अब, हर तीन मील पर घनी आबादी वाला एक गांव होता है, जिसके बाहर तीन मंडप होते हैं जिनमें लोग कार्य आरंभ के लिए तैयार बैठे रहते हैं। उनमें से प्रत्येक के पास दो हाथ लंबी एक छड़ी होती है जिसके ऊपर ताँबे की घंटियाँ लगी होती है। जब संदेशवाहक शहर से यात्रा आरंभ करता है तो एक हाथ में पत्र तथा दूसरे में घंटियों सहित छड़ लिए वह क्षमतानुसार तेज़ भागता है। जब मंडप में बैठे लोग घंटियों की आवाज सुनते है तो वे तैयार हो जाते हैं। जैसे ही संदेशवाहक उनके पास पहुँचता है, उनमें से एक उसके हाथ से पत्र लेता है और वह छड़ी हिलाते हुए पूरी ताकत से दौड़ता है, जब तक वह अगले दावा तक नहीं पहुँचाता। पत्र के अपने गंतव्य स्थान तक पहुँचने तक यही प्रक्रिया चलती रहती है। यह पैदल डाक–व्यवस्था अश्वडाक व्यवस्था से अधिक–तीव्र होती है, और इसका प्रयोग अकसर खुरासान के फलों के परिवहन के लिए होता है, जिन्हें भारत में बहुत पसंद किया जाता है।

1) इब्नबतूता द्वारा वर्णित दो प्रकार की डाक–व्यवस्था का वर्णन कीजिए। 1

2) क्या आपको लगता है कि पैदल डाक–व्यवस्था पूरे उप–महाद्वीप में संचालित की जाती होगी? व्याख्या कीजिए। 2

3) पैदल डाक–व्यवस्था का प्रयोग अक्सर किस लिए किया जाता था? दोनो डाक व्यवस्थाओं में से अधिक तीव्र डाक व्यवस्था कौन सी थी? 2

2. **वर्ण–व्यवस्था**

अलबिरुनी वर्ण–व्यवस्था का इस प्रकार उल्लेख करता है–

सबसे ऊँची जाति ब्राह्मणों की है जिनके विषय में हिंदुओं के ग्रंथ हमें बतातें है कि वे ब्रह्मा के सिर से उत्पन्न हुए थे और क्योंकि ब्रह्म, प्रकृति नामक शक्ति का ही दूसरा नाम है, और सिर.....शरीर का सबसे ऊपरी भाग है, इसलिए ब्राह्मण पूरी प्रजाति के सबसे चुनिंदा भाग है। इसी कारण हिंदू उन्हें मानव जाति में सबसे उत्तम मानते हैं। अगली जाति क्षत्रियों की है जिनका सृजन, ऐसा कहा जाता है, ब्रह्मा के कंधों और हाथों से हुआ था। उनका दर्जा

ब्राह्मणों से अधिक नीचे नहीं है।

उनके पश्चात् वैश्य आते हैं जिनका उद्भव ब्रह्मा की जंघाओं से हुआ था। शूद्र जिनका सृजन उनके चरणों से हुआ था।

अंतिम दो वर्गों के बीच अधिक अंतर नहीं है। लेकिन इन वर्गों के बीच भिन्नता होने पर भी ये एक साथ ही शहरों और गांवों में रहते हैं, समान घरों और आवासों में मिल–जुलकर।

1) अलबरुनी द्वारा वर्णित वर्ण–व्यवस्था का उल्लेख कीजिए। **2**

2) अलबरुनी ने भारत की वर्ण–व्यवस्था की तुलना कहाँ की वर्ण व्यवस्था से की है एवं वहाँ कितने सामाजिक वर्ग माने हैं? 2

3) अलबरुनी द्वारा वर्णित भारतीय वर्ण व्यवस्था का विवरण किस वेद में हैं? 1

विषय–6

भक्ति–सूफी परंपराएँ धार्मिक विश्वासों में बदलाव और श्रद्धा ग्रंथ

(लगभग आठवीं से अठारहवीं सदी तक)

स्मरणीय बिन्दु :–

1. इस काल के नूतन साहित्यिक स्रोतों में संत कवियों की रचनाएँ हैं।
2. इतिहासकार इन संत कवियों के अनुयायियों (जो उनके संप्रदाय से थे) द्वारा लिखी गई उनकी जीवनियों का भी इस्तेमाल करते हैं।
3. भक्ति आंदोलन का प्रमुख उद्देश्य असमानता, ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, छोटे–बड़े की भावना को समाप्त करना।
4. पुरी, उड़ीसा में मुख्य देवता को बारहवीं शताब्दी तब आते–आते जगन्नाथ (शाब्दिक अर्थ में संपूर्ण विश्व का स्वामी) विष्णु के स्वरूप के रुप में प्रस्तुत किया गया।
5. देवी की उपासना अधिकतर सिंदूर से पोते गए पत्थर के रुप में ही की जाती थी।
6. इस काल में बहुत सी भक्ति परम्पराओं में ब्राह्मण, देवताओं और भक्तजनों के बीच महत्त्वपूर्ण बिचौलिए बने रहे।
7. प्रारंभिक भक्ति आन्दोलन (लगभग छठी शताब्दी) अलवारों (विष्णु भक्त) और नयनारों (शिवभक्त) के नेतृत्व में हुआ। इन्होंने जाति प्रथा और ब्राह्मणों की प्रभुता के विरोध में आवाज उठाई। इन्होंने स्त्रियों को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। अंडाल एक स्त्री अलवार संत थी तथा अम्मइयार करइक्काल एक नयनार स्त्री संत थी। नलयिरादिव्यप्रबंधम्अलवार संतो का मुख्य संकलन है। इस ग्रंथ को तमिल में पंचम वेद का स्थान प्राप्त है।
8. धर्म के इतिहासकार भक्ति पंरपरा को दो मुख्य वर्गों में बाँटते हैं–
   (1) सगुण–शिव, विष्णु तथा उनके अवतार व देवियों की आराधना की जाती है।
   (2) निर्गुण–अमूर्त, निराकार ईश्वर की उपासना की जाती है।
9.

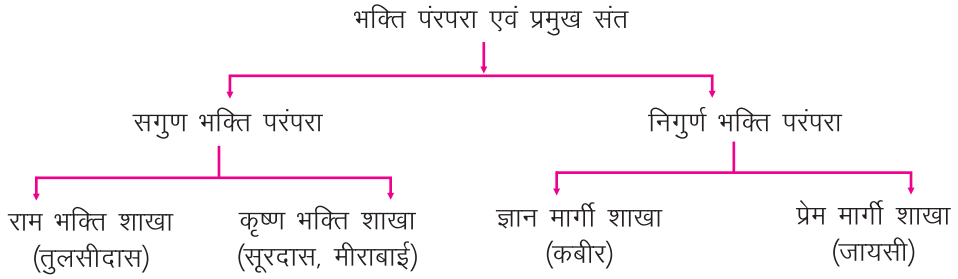

10. बारहवीं शताब्दी में कर्नाटक में एक नवीन आंदोलन का उद्‌भव हुआ जिसका नेतृत्व बासवन्ना (1106–68) नामक एक ब्राह्मण ने किया। इसे वीर शैव या लिंगायत आन्दोलन कहते हैं। इन्होंने पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर प्रश्न चिन्ह् लगाया। वयस्क व विधवा विवाह को मान्यता प्रदान की। ये शिव की अवधारणा लिंग रूप में करते हैं।

11. 'जिम्मी' वे लोग थे जो उद्‌घटित धर्मग्रंथ को मानने वाले थे जैसे इस्लामी शासकों के क्षेत्र में रहने वाले यहूदी और ईसाई।

12. जिन्होंने इस्लाम धर्म कबूल किया उन्होंने सैद्धान्तिक रुप से इसकी पाँच मुख्य बातें मानी।

    (1) 'अल्लाह' एकमात्र ईश्वर है।

    (2) पैगम्बर मोहम्मद उनके दूत (शाहद) है।

    (3) खैरात (ज़कात) बाँटनी चाहिए।

    (4) रमज़ान के महीने में रोज़ा रखना चाहिए।

    (5) हज के लिए मक्का जाना चाहिए।

13. सोलहवीं शताब्दी तक आते–आते अजमेर की ख्वाज़ा मोइनुद्‌दीन चिश्ती की दरगाह बहुत ही लोकप्रिय हो गई। इन्होंने भारत में चिश्ती संप्रदाय (सिलसिला) की शुरूआत की। यह पीर (गुरु) मुरीद (शिष्य) परम्परा पर आधारित था। इसमें खानकाह (पीर के रहने के स्थान) का काफी महत्त्व था।

14. बा–शरिया शरियत को पसंद करने वाले सूफी थे। बे–शरिया शरियत की अवहेलना करने वाले सूफी संत थे।

15. प्रमुख सूफी सिलसिले

    1. चिश्ती
    2. सुहरावर्दी
    3. कादिरी
    4. नक्शबंदी

16. कबीर की बानी तीन विशिष्ट परिपाटियों में संकलित हैं–

    (1) कबीर बीजक (2) कबीर ग्रंथावली

    (3) आदि ग्रंथ साहिब

17. बाबा गुरु नानक (1469–1539) ने निर्गुण भक्ति का प्रचार–प्रसार किया। ये किसी नवीन धर्म की स्थापना नहीं करना चाहते थे। इनकी शिक्षाओं को आदि ग्रंथ साहब में संकलित किया गया है।

18. गुरु नानक के उत्तराधिकारी तथा दसवें गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की नींव डाली तथा सिक्खों को एक सैन्य बल के रूप में संगठित किया।

19. मीरा बाई भक्ति परंपरा की सबसे सुप्रसिद्ध कवयित्री हैं। इनके गुरु संत रविदास नीची जाति से थे। गुजरात और राजस्थान के गरीब परिवार में मीरा प्रेरणा की स्रोत हैं।

20. चिदंबरम, तंजावुर और गंगैकोडा चोलपुरम के विशाल शिव मन्दिर चोल सम्राटों की मदद से निर्मित हुए।

21. चोल सम्राट परांतक प्रथम ने कवि अप्पार, संबदर और सुंदरार की धातु प्रतिमाएँ एक शिव मन्दिर में स्थापित करवाई।

22. नाथ, जोगी, सिद्ध जैसे धार्मिक नेता रूढ़िवादी ब्राह्मणीय सांचे के बाहर थे इन्होंने वेदों की सत्ता को चुनौती दी तथा अपने विचार आम लोगों की भाषा में लिखे।

23. सैद्धान्तिक रूप से मुसलमान शासकों को उलमा के मार्गदर्शन पर चलना होता था, तथा उनसे आशा की जाती थी कि वे शासन में शरियत के नियमों का पालन करवाएँगे।

24. म्लेच्छ शब्द प्रवासी समुदाय के लिये था। यह वर्ण नियमों का पालन नहीं करते थे। संस्कृत से भिन्न भाषाएं बोलते थे।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक वाले)

1. उलमा कौन थे?
2. सूफीवाद से क्या तात्पर्य है?
3. बाबा फरीद ने किस भाषा में काव्य रचना की और वह किस में संकलित है?
4. 'पद्मावत' के रचयिता कौन थे?
5. मुस्लिम संतो की दरगाहों पर भक्त लोग क्यों आते है? कोई एक कारण दीजिए।
6. कबीर को भक्ति का मार्ग दिखाने वाले.....थे।
7. अलवारों और नयनारो का जाति प्रथा के प्रति कोई एक दृष्टिकोण बताइए।
8. लिंगायतों के किसी एक धार्मिक विश्वास एवं व्यवहार का वर्णन कीजिए।
9. खालसा पंथ का क्या अर्थ है?
10. 'चिश्ती' उपासना पद्वति का संक्षेप मे वर्णन कीजिए।
11. सूफियों ने भारत में इन स्थानीय परंपराओं को आत्मसात् किया :
    i. दीक्षितों के सर का मुंडन
    ii. यौगिक व्यायाम
    iii. मिलने वालों को पानी पिलाना
    iv. शेख के सामने झुकना
    v. आध्यात्मिक संगीत की महफिल के द्वारा ईश्वर की उपासना

निम्न युग्मों मे से सही युग्म चुनिए

क) I,II,III, V
ख) I,III,IV,V
ग) II,III,IV,V
घ) I,II,III,IV,V

12. अमीर खुसरो मिलने जाते थे
क) बाबा फरीद से
ख) ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती से
ग) शेख नसीरूद्दीन चिराग–ए–देहली से
घ) शेख निजामुद्दीन औलिया से

13. नयनारों और अलवारों ने प्रचार किया
क) इष्टदेव के प्रति प्रेमपूर्ण समर्पण का
ख) कठोर तपस्या का
ग) जाति व्यवस्था का समर्थन
घ) ज्ञान मार्ग

14. गुरू नानक के बाद गुरू पद पर आसीन हुए
क) गुरू गोबिन्द सिंह
ख) गुरू अंगद
ग) गुरू अर्जन देव
घ) गुरू तेग बहादुर

15. सूफी पथ का संबंध है
क) हिन्दू धर्म से
ख) सिक्ख धर्म से
ग) इस्लाम से
घ) इसाई धर्म से

16. सगुण भक्ति हैः
i. ईश्वर की मूर्त रुप में उपासना
ii. ईश्वर की अमूर्त रुप में उपासना
iii. शिव, विष्णु, उनके अवतार व देवियों की आराधना
iv. विशेषण विहीन

क) I,III ख) II,IV
ग) III,IV घ) I,IV

17. निम्न में से कौन–कौन नयनार संत थे?

i. अप्पार
ii. संबंदर
iii. सुदरार
iv. अंडाल

क) I,II,IV　　ख) II,III,IV
ग) I,II,III　　घ) I,III,IV

18. वीरशैव परंपरा का उद्‌भव हुआ था

क) कर्नाटक में
ख) तमिलनाडु में
ग) आन्ध्र प्रदेश में
घ) केरल में

19. युग्म सुमेलित कीजिए

सूची I	सूची II
i. सिलसिला	A. शरिया की अवहेलना करने वाले
ii. खानकाह	B. सूफी संगठन
iii. बे–शरिया	C. शरिया का पालन करने वाले
iv. बा–शरिया	D. सूफी मठ

निम्न युग्मों में से सही युग्म चुनिए

क) I-B,II-D,III-A,IV-C　　ख) I-D,II-B,III-A,IV-C
ग) I-B-II-D,III-C,IV-A　　घ) I-D,II-A,III-B,IV-C

20. युग्म सुमेलित कीजिए

सूची I	सूची II
i. कृष्ण भक्ति संत	A. अंडाल
ii. निर्गुण भक्ति संत	B. मीराबाई
iii. अलवार संत	C. करइक्काल अम्मइयार
iv. नयनार संत	D. कबीर

निम्न युग्मों में से सही युग्म चुनिए

क) I-A,II-B,III-C,IV-D　　ख) I-B,II-D,-III-C,IV-A
ग) I-D,II-B,III-A,IV-C　　घ) I-B,II-D,III-A,IV-C

21. नीचे दिए गए चित्र में दर्शायी गयी देवी को पहचानीए तथा वह जिस धर्म से सम्बन्धित हैं लिखिए।

उद्धरण आधारित प्रश्न (3 अंक वाले)

I. **तमिलनाडु के अलवार और नयनार संत**

प्रारंभिक भक्ति आंदोलन (लगभग छठी शताब्दी) अलवारों (विष्णु भक्ति में तन्मय) और नयनारों (शिवभक्त) के नेतृत्व में हुआ। वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए तमिल में अपने ईष्ट की स्तुति में भजन गाते थे।

अपनी यात्राओं के दौरान अलवार और नयनार संतों ने कुछ पावन स्थलों को अपने इष्ट का निवासस्थल घोषित किया। इन्हीं सिलों पर बाद में विशाल मंदिरों का निर्माण हुआ और वे तीर्थस्थल माने गए। संत–कवियों के भजनों को इन मंदिरों में अनुष्ठानों के समय गाया जाता था और साथ ही इन संतों की प्रतिमा की भी पूजा की जाती थी।

(A) दक्षिण के अलवार संत ——— देवता के उपासक थे –

(क) शिव (ख) ब्रह्मा

(ग) विष्णु (घ) गणेश

(B) शिव की स्त्रीभक्त थीं

(क) अंडाल (ख) करइक्काल अम्मइयार

(ग) दोनों (घ) दोनों में से कोई नहीं

(C) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में तथा दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है।

कथन (A) – अलवार और नयनार संतों ने जाति प्रथा व ब्रह्मणों की प्रभुता के विरोध में आवाज उठाई।

कारण (R) – भक्ति संत विभिन्न समुदायों से थे जैसे ब्राह्मण, शिल्पकार, किसान तथा अन्य निम्न मानी जाने वाली जातियाँ।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोंनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोंनों सही हैं पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।

(ग) केवल कथन (A) सही है।

(घ) केवल कारण (R) सही है।

(D) अलवार संतों के किस काव्य संकलन का वर्णन तमिल वेद के रूप में किया जाता था –

(क) नलयिरादिव्यप्रबंधम् (ख) मेघदूतम

(ग) किरातर्जुनीयम् (घ) शिल्पादिकारम

II. उड़ीसा के इस प्रमुख देवता के चित्र को ध्यान से देखें और दिए गए किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दें।

A) इसमें जिस प्रमुख देवता का चित्र है उनका नाम है –

(क) राम (ख) शिव

(ग) जगन्नाथ (घ) विठ्ठल

B) इस चित्र में जगन्नाथ सुभद्रा और बलराम के साथ हैं। सुभद्रा जगन्नाथ की ———— थीं –

(क) माता (ख) विमाता

(ग) पत्नी (घ) बहन

C) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में और दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है –

कथन (A) – यह चित्र 'लघु'' और ''महान'' परम्परा का एक विशिष्ट उदाहरण हैं।

कारण (R) – ''लघु'' और ''महान'' परम्परा शब्द 20वीं शताब्दी के सामाजिकषास्त्री राबर्ट रेडफील्ड द्वारा प्रतिपादित किए गए।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।

(ग) केवल कथन (A) सही है।

(ख) केवल कारण (R) सही है।

C) कृष्णभक्ति ––––– परम्परा का उदाहरण है –

(क) ''लघु'' परम्परा (ख) ''महान'' परम्परा

(ग) दोनों (घ) दोनों में से कोई नहीं

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंकों वाले)

1. चिश्ती सिलसिला का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. भक्ति आन्दोलन के उदय के क्या कारण थे?
3. भारत की सामाजिक व्यवस्था पर भक्ति आंदोलन के क्या प्रभाव पड़े? लिंगायत सम्प्रदाय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो?
4. सूफीमत में 'खानकाह' का विवरण दीजिए।
5. अलवार और नयनार कौन थे? जाति के प्रति उनका क्या दृष्टिकोण था?
6. शासकों और शासितों के धार्मिक विश्वासों में क्या भिन्नता थी? शासकों द्वारा इसके लिए क्या प्रयत्न किये गये।
7. भक्ति संतों के राज्य के साथ संबंध बताइए?
8. कबीर द्वारा वर्णित परम सत्य को बताइए?
9. वीर शैव कौन थे? समाज में प्रचलित किन बुराईयों का उन्होंने विरोध किया?
11. इस्लाम धर्म की उन विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए, जिनकी मदद से यह धर्म समूचे उप–महाद्वीप में फैल गया।
12. राज्य के सूफी संतों के साथ किस प्रकार के संबंध थे?
13. अंडाल और करइक्काल अम्मइयार कौन थीं? उनका क्या योगदान था?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक वाले)

1. सूफीमत के मुख्य सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए। (संकेत–पृ.स. 152–153 एन.सी.ई.आर.टी)
2. भक्ति परम्परा में स्त्रियों के योगदान की व्याख्या कीजिए।
3. कबीर, एक समाज सुधारक थे। कबीर की शिक्षाओं के सन्दर्भ में इसकी समीक्षा कीजिए।
4. सूफी संतों के राज्य के साथ सम्बन्धों पर प्रकाश डालिए।
5. कबीर की प्रमुख शिक्षाओं को बताएँ तथा उनका संप्रेषण किस प्रकार हुआ?

6. बाबा गुरु नानक की शिक्षाओं पर प्रकाश डालिए? क्या वे कोई नवीन धर्म स्थापित करना चाहते थे?

7. लिंगायत कौन थे? जाति प्रथा के विशेष संदर्भ में सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में उनके योगदान का वर्णन कीजिए। (संकेत–पृ.स. 146–147 एन.सी.ई.आर.टी)

8. . खानाकाह में जीवन की मुख्य विशेषताएं लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1. सूफीमत के प्रमुख सिद्धान्त–

(1) ऐकेश्वरवाद।

(2) आत्मा में विश्वास।

(3) अल्लाह ने जगत की सृष्टि की।

(4) सभी जीवों में मानव श्रेष्ठ है।

(5) कुरान एक महान ग्रन्थ है।

(6) रहस्यवाद एवं वैराग्य।

(7) गुरु अथवा पीर का महत्त्व।

(8) प्रेम साधना पर बल।

(9) परमात्पा (अल्लाह) की प्राप्ति जीवन का परम लक्ष्य।

(संकेत पृष्ठ सं. 152–153 एन.सी.ई.आर.टी)

2. भक्ति परम्परा में स्त्रियों का योगदान–

(1) मीराबाई– (सगुण भक्ति शाखा की कवयित्री) कृष्ण भक्ति में लीन मेबाड़ की रानी (15वीं तथा 16वीं शताब्दी) पति का राजमहल तथा ऐश्वर्य को त्याग कर वह कृष्ण भक्ति में लीन हो गई।

(2) अंडाल– विष्णु की प्रियसी तथा प्रेम भावनाओं को छंदों में व्यक्त करने वाली एक अलवार स्त्री भक्त थीं।

(3) करइक्काल अम्मइसार–

1. नयनार स्त्री भक्त (शिव की उपासक)
2. घोर तपस्या का मार्ग अपनाया।
3. सामाजिक कर्त्तव्यों का परित्याग किया।

इन सभी स्त्री भक्तों ने अपनी जीवन पद्धति तथा रचनाओं द्वारा पितृसत्तात्मक आदर्शों को चुनौती दी।

(संकेत पृष्ठ सं. 144, 163–164 एन.सी.ई.आर.टी)

3.

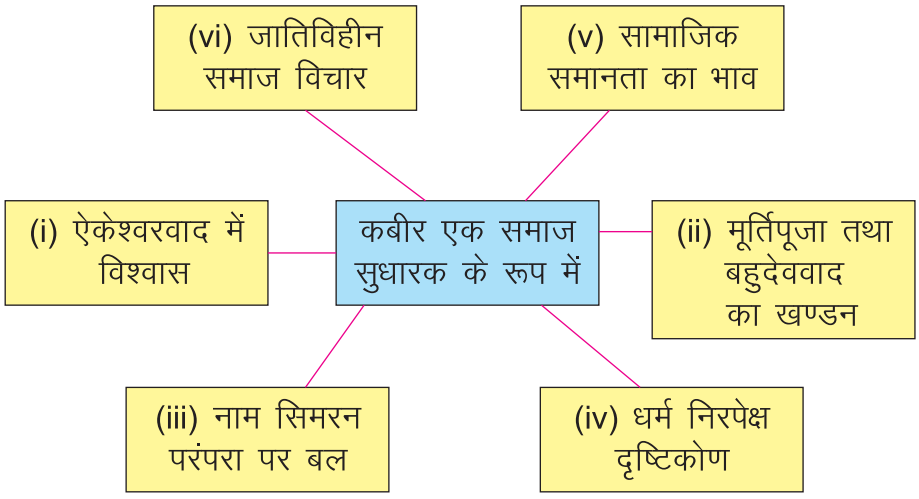

(संकेत पृष्ठ सं. 160–162 एन.सी.ई.आर.टी)

4. **सूफी संतों के राज्य के साथ सम्बंध–**

(1) सत्ता से दूर रहने पर बल।

(2) सूफी सन्तों द्वारा, विशिष्ट वर्गों द्वारा बिना माँगे दिए गए अनुदान को स्वीकार करना।

(3) सुल्तानों द्वारा खानकारों को करमुक्त भूमि अनुदान में देना।

(4) दान सम्बंधी न्यास की स्थापना।

(5) सूफी सन्तों की लोकप्रियता के कारण शासक भी उनका समर्थन चाहते थे।

(6) शासक अपनी कब्र सूफी सन्तों की दरगाहों तथा खानकों के नजदीक बनाना चाहते थे।

(7) सुल्तानों तथा सूफियों के बीच तनाव के उदाहरण भी मिलते हैं।

(8) अपने–अपने आचारों पर बल जैसे झुककर प्रणाम तथा कदम चूमना आदि।

(संकेत पृष्ठ सं. 155, 158–159 एन.सी.ई.आर.टी)

5. कबीर की शिक्षाएँ– प्रश्न 4 के अनुसार

कबीर की शिक्षाओं का संप्रेषण–

(1) कबीर बीजक, कबीर ग्रंथावली तथा आदिग्रंथ साहिब में संकलित करके।

(2) कबीर के विचार संभवतः अवध (उत्तर प्रदेश) की सूफी और योगी परम्परा के साथ हुए संवाद और विवाद के माध्यम से धनीभूत हुई।

(3) अनुयायी संतों द्वारा गा–गाकर इन रचनाओं का सम्प्रेषण

(4) उलटबांसी विधा के द्वारा।

(5) बंगाल, गुजरात तथा महाराष्ट्र में मुद्रांकित पद संग्रह।

(संकेत पृष्ठ सं. 162–163 एन.सी.ई.आर.टी)

6. गुरुनानक देव जी की शिक्षाएँ–

(1) उनके संदेश भजनों तथा उपदेशों में निहित हैं।

(2) निर्गुण भक्ति का प्रचार तथा ईश्वर सब जगह विद्यमान।

(3) परम पूर्ण रब का कोई लिंग या आकार नहीं।

(4) सभी धर्मों ग्रंथों को नकारा।

(5) बाहरी आडम्बरों का विरोध।

(6) नाम सिमरन तथा जाप पर बल।

(7) किसी भी जाति या सम्प्रदाय पर जोर नहीं।

(8) गृहस्थ तथा आध्यात्मिक जीवन की तारतम्यता को बनाते हुए मध्यम मार्ग को अपनाने पर बल।

(9) शबद के माध्यम से ईश्वर का गुणगान करना।

(10)वे किसी भी नवीन धर्म की स्थापना नहीं करना चाहते थे।

(संकेत पृष्ठ सं. 162–163 एन.सी.ई.आर.टी)

1. लिंगायत–

(1) 12वीं शताब्दी में कर्नाटक में बसवन्ना नामक ब्राह्मण द्वारा चलाए गए नवीन भक्ति आन्दोलन के अनुयायी वीरशैव (शिव के वीर) अथवा लिंगायत कहलाए।

(2) शिव की आराधना लिंग के रूप में।

(3) वामस्कन्ध पर चाँदी के एक पिटारे में लघु लिंग को घारण करते हैं।

(4) जंगम अथवा मायावर भिक्षु भी है।

जाति–प्रथा, धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र में योगदान–

(1) मृत्योपरांत भक्त शिव में लीन होंगे।

(2) श्राद्ध संस्कार का विरोध।

(3) कुछ समुदायों दूषित होने की ब्राह्मणीय अवधारणा का विरोध।

(4) पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर प्रश्नवाचक चिन्ह्।

(5) वयस्क विवाह तथा विधवा पुनर्विवाह को मान्यता।

(संकेत पृष्ठ सं. 146–146 एन.सी.ई.आर.टी)

8.

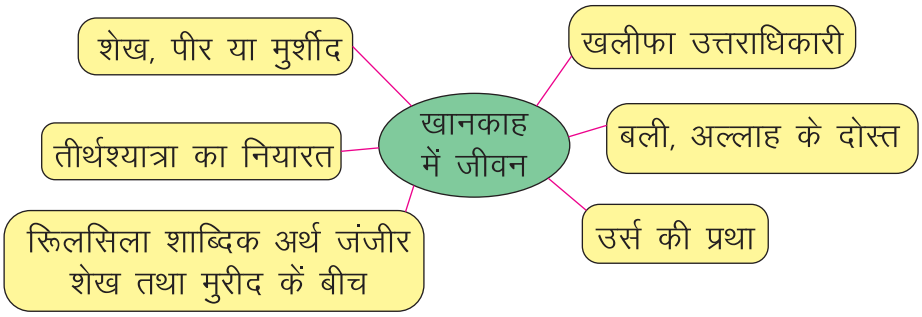

(संकेत पृष्ठ सं. 153–154 एन.सी.ई.आर.टी)

विषय–6

अनुच्छेद आधारित प्रश्न (5 अंक वाले)

1. मुगल शहज़ादी जहाँआरा की तीर्थ यात्रा, 1643

निम्नलिखित गद्यांश जहाँआरा द्वारा रचित मुइनुद्दीन चिश्ती की जीवनी मुनिस–अल–अखाह (यानी आत्मा का विश्वस्त) से लिया गया है।

अल्लाहताला की तारीफ के बाद यह फकीरा जहाँआरा राजधानी आगरा से अपने पिता (बादशाह शाहजहाँ) के संग पाक और बेजोड़ अजमेर के लिए निकली मैं इस बात के लिए वायदापरस्त थी कि हर रोज और हर मुकाम पर मैं दो बार की अख्तियारी नमाज अदा करूँगी बहुत दिन मैं रात को बाघ के चमड़े पर नहीं सोई और अपने पैर मुकद्दस दरगाह की तरफ नहीं फैलाए, न ही मैंने अपनी पीठ उनकी तरफ की। मैं पेड़ के नीचे दिन गुजारती थी।

वीरवार को रमजान के मुकद्दस महीने के चौथे रोज मुझे चिराग और इतर में डूबे दरगाह की जियारत की खुशी हासिल हुई.....चूँकि दिन की रोशनी की एक घड़ी बाकी थी मैं दरगाह के भीतर गई अपने जर्द चेहरे को उसकी चौखट की धूल से रगड़ा। दरवाजे से मुकद्दस दरगाह तक मैं नंगे पांव वहां की जमीन को चूमती हुई गई। गुम्बद के भीतर रोशनी से भरी दरगाह में मैंने मजार के चारों ओर सात फेरे लिए। आखिर में अपने हाथों से मुकद्दस दरगाह पर मैंने सबसे उम्दा इतर छिड़का। चूँकि गुलाबी दुपट्टा जो मेरे सिर पर था मैं उतार चुकी थी इसलिए उसे मैंने मुकद्दस मजार के ऊपर रखा।.....

1) जहाँआरा ने यात्रा के दौरान किन नियमों का पालन किया। 2

2) जहाँआरा द्वारा दरगाह के दर्शन के दृश्य का वर्णन करें? 2

3) जियारत से क्या अभिप्राय है? 1

2. यह उद्धरण सूफी ग्रंथ से हैं जो शेख निजामुद्दीन औलिया ने खानकाह में 1313 में हुई, घटना का वर्णन करता है मेरी (अमीर हसन सिज़जी) अच्छी किस्मत थी कि मैं उनके (निजामुद्दीन औलिया) कद्म चूम सका....इस समय एक स्थानीय शासक ने दो बगीचे और बहुत सी जमीन का पट्टा शेख साहब को भेजा है। साथ ही इनके रखरखाव के लिए औजार व आवश्यक वस्तुएँ भेजी हैं, शासक ने यह भी साफ किया है कि वह बगीचों और जमीन पर अपना हक कहते हैं ''इस जमीन, खेत और बगीचे का मुझे क्या करना है? हमारे कोई भी आध्यात्मिक गुरु ने इस तरह का काम नहीं किया।''

फिर उन्होंने एक उचित कहानी सुनाई.....सुल्तान गियासुद्दीन जो उस समय उलुग खान के नाम से जाने जाते थे, शेख फरीदुद्दीन से मिलने आए। उन्होंने शेख को कुछ धनराशि और चार गाँवों का पट्टा भेंट किया। धन, दरवेशों के लिए था और जमीन शेख के अपने इस्तेमाल के लिए थी। मुस्कुराते हुए शेख–अल–इस्लाम (फरीदउद्दीन) ने कहा : मुझे धन दे दो मैं इसे दरवेशों में बाँट दूँगा, पर जहाँ तक जमीन के पट्टे का सवाल है उसे उन लोगों को दे दो जिन्हें उनकी कामना है....!

1. सुल्तान गियासुददीन ने धन किन लोगों के लिए दिया? 1
2. निजामुद्दीन औलिया को स्थानीय शासक ने कौन–सी वस्तुएँ भेंट की? 2
3. प्रस्तुत उदाहरण के आधार पर शासक और सूफी संतों के संबंधों की व्याख्या कीजिए। 2

विषय–7

एक साम्राज्य की राजधानी : विजयनगर

(लगभग चौदहवीं से सोलहवीं सदी तक)

स्मरणीय बिन्दु :–

1. विजयनगर अथवा 'विजय का शहर' साम्राज्य की स्थापना 14वीं शताब्दी में की गई थी।
2. यह कृष्णा तुंगभद्रा दोआब क्षेत्र में स्थित था। इसके प्रमुख शासक कृष्ण देव राय थे। (शासन काल 1509–1529)
3. हम्पी के भग्नावशेष 1800 ई. में एक अभियंता तथा पुराविद कर्नल कॉलिन मैकेन्जी द्वारा प्रकाश में लाए गए थे।
4. मैकेन्जी, जो ईस्ट इंडिया कंपनी में कार्यरत थे, ने इस स्थान का पहला सर्वेक्षण मानचित्र तैयार किया था।
5. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना दो भाईयों–हरिहर और बुक्का द्वारा 1336 में की गई थी।
6. विजयनगर साम्राज्य के शासक अपने आप को 'राय' कहते थे।
7. विजयनगर शासकों के दक्कन के सुल्तान तथा उड़ीसा के गजपति शासकों के साथ संघर्ष हुए।
8. इस काल में शासक अश्व सेना के घोड़ों के लिए अरब व्यापारियों पर निर्भर थे।
9. विजयनगर मसालों, वस्त्रों तथा रत्नों के बाजारों के लिए प्रसिद्ध था।
10. व्यापार से प्राप्त राजस्व राज्य की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देता था।
11. विजयनगर पर संगम, सुलुव, तुलुव व अराविदु वंशों ने शासन किया।
12. विजयनगर के सर्वाधिक प्रसिद्ध राजा कृष्णदेव राय 'तुलुव वंश' से संबंधित थे। इनके शासन की चारित्रिक विशेषता विस्तार और सुदृढ़ीकरण था। इन्होंने शासनकाल के विषय में अमुक्त मल्यद नामक तेलुगु भाषा में एक कृति लिखी।
13. विजयनगर शहर की विशाल किलेबन्दी की गयी थी। अब्दुल रज्जाक के अनुसार इसे सात दीवारों से घेरा गया था। इनसे शहर, कृषि क्षेत्र तथा जंगलो को भी घेरा गया था ।
14. कुएँ, बरसात के पानी वाले जलाशय तथा मंदिरों के जलाशय आदि संभवतः सामान्य नगर निवासियों के लिए पानी के स्रोत का कार्य करते थे।
15. सबसे प्रभावशाली दो मंच है –'सभा मंडप' और 'महानवमी डिब्बा'।
16. राजकीय केन्द्र में सबसे सुन्दर भवनों में एक है 'लोटस महल'।

17. 'नायक' सेना प्रमुख थे। उनके पास सशस्त्र समर्थक सैनिक होते थे।

18. 'अमर नायक' सेना के सैनिक कमांडर थे।

19. विजयनगर में दो प्रसिद्ध मन्दिर विरुपाक्ष मन्दिर एवं विट्ठल मन्दिर।

20. 'हजारा राम मन्दिर' विजयनगर के राजकीय केन्द्र में स्थित है।

21. दक्षिण के मंदिरों के ऊँचे द्वारों को 'गोपुरम' कहा जाता है।

22. महानवमी डिब्बा–एक विशालकाय मंच है जो लगभग 11000 वर्ग फीट के आधार से 40 फीट की ऊँचाई तक जाता है।

23. शहरी केन्द्र–शहरी केन्द्र की सड़कों पर सामान्य लोगों के आवासों के कम साक्ष्य मिले हैं। पुरातत्वविदों को कुछ स्थानों में परिष्कृत चीनी मिट्टी मिली है। उनका सुझाव है कि यहाँ पर अमीर व्यापारी रहते होंगे।

24. पुर्तगाली यात्री बारबोसा के अनुसार सामान्य लोगों के आवास छप्पर के है पर फिर भी सुदृढ़ है, व्यवसाय के आधार पर कई खुले स्थानों वाली लम्बी गलियों में व्यवस्थित है।

25. जल सम्पदा–तुंगभद्रा नदी उत्तर–पूर्व दिशा में बहती है। विजयनगर की भौगोलिक स्थिति के विषय में सबसे चौंकाने वाला तथ्य इस नदी द्वारा निर्मित प्राकृतिक कुंड है। शहर के चारों ओर ग्रेनाइट की पहाड़ियाँ हैं जो करधनी का निर्माण करती प्रतीत होती है।

26. ए) कमलपुरम जलाशय एक महत्वपूर्ण हौज है जिसका निर्माण 15वीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में हुआ इसे नहर के माध्यम से राजकीय केन्द्र तक भी ले जाया जाता था।

    बी) हिरिया नहर महत्वपूर्ण जल सम्पदाओं में से एक है जिसे भग्नावेषों के बीच देखा जा सकता है।

27. राक्षसी–तांगड़ी (तालीकोट) का युद्ध 1565 में विजयनगर की सेना प्रधानमंत्री रामराय के नेतृत्व में राक्षसी–तांगड़ी के युद्ध में उतरी जहां उसे बीजापुर, गोलकुंडा एवं अहमदनगर की संयुक्त सेनाओं द्वारा शिकस्त मिली।

    विजयनगर साम्राज्य में आने वाले यात्री।

	यात्री	देश
1.	अब्दुर रज्जाक	फारस
2.	निकोलो कोन्ती	इटली
3.	डोमिंगो पेस	पुर्तगाल
4.	फर्नाओ नूनिज़	पुर्तगाल
5.	बरबोसा	पुर्तगाल
6	निकितिन	रूस

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक वाले)

1. विजयनगर के कमलपुरम जलाशय हौज का एक महत्व बताइए।
2. 'गोपुरम' व 'मण्डप' में कोई एक अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. विजयनगर की स्थापना कब और किसके द्वारा की गई।
4. विजयनगर के शासकों ने कौन सी उपाधि धारण की?
5. अश्वपति और नरपति में अंतर बताइए।
6. विजयनगर की राजधानी का नाम क्या था? किसके नाम पर इसका नाम रखा गया था?
7. राक्षसी–तांगड़ी का युद्ध किनके बीच में हुआ और इसमें कौन विजयी रहा?
8. कृष्णदेव राय के शासन की चारित्रिक विशेषता क्या थी।
9. कृष्णदेव राय कौन से वंश से संबद्व थे?
10. ''यवन राज्य की स्थापना करने वाला'' विरूद किसने और क्यों धारण किया? कोई एक कारण दीजिए।

11. विजयनगर के शासकों ने शक्तिशाली सेना रखी ताकिः
क) वे जनता पर कठोर नियन्त्रण स्थापित कर सकें
ख) वे ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोजगार दे सकें।
ग) दक्कन सल्तनतों के शासकों के आक्रमण से साम्राज्य की रक्षा कर सकें।
घ) निम्न में से कोई नही।

12. विजयनगर और दक्कन सल्तनतों के बीच लगातार संघर्ष के कारण थे :
क) राजनैतिक और आर्थिक कारण
ख) राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक कारण
ग) सांस्कृतिक और आर्थिक कारण
घ) राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारण

13. अमर नायक निम्न में से जो कार्य नहीं करते थे, वह था –
क) वे किसानों, शिल्पकर्मियों तथा व्यापारियों से कर वसूल करते थे।
ख) वे साम्राज्य की व्यापार संबंधी नीतियाँ बनाने में सक्रिय भूमिका निभाते थे।
ग) वे शासकों को एक प्रभावी सैनिक शक्ति प्रदान करते थे।
घ) वे अपने क्षेत्र में मन्दिरों तथा सिंचाई के साधनों के रख रखाव के लिए खर्च करते थे।

14. कृष्णदेव राय द्वारा लिखित कृति थी
क) अमुक्तमल्यद
ख) नलयिरादिव्यप्रंबधम्
ग) तवरम
घ) गुरू ग्रंथ साहिब

15. विजयनगर साम्राज्य पर जितने वंशों का शासन रहा, वह है –
क) दो
ख) पाँच
ग) तीन
घ) चार

16. कृष्णदेव राय का शासनकाल थाः
क) 1485 ईस्वी से 1505 ईस्वी तक
ख) 1509 ईस्वी से 1529 ईस्वी तक
ग) 1533 ईस्वी से 1545 ईस्वी तक
घ) 1550 ईस्वी से 1565 ईस्वी तक

17. विजयनगर के शासकों ने कृषि को प्रोत्साहित कियाः
क) बाँध, हौज और नहरों के विकास द्वारा।
ख) कृषि क्षेत्रों पर कर घटाकर।
ग) कृषि उपज के विक्रय हेतु बाजार के प्रंबधन द्वारा।
घ) सेना के लिए खाद्य सामग्री खरीदकर।

18. कृष्णदेव राय के संबध में निम्न में से जो कथन असत्य है, वह है –
क) उसने रायचूर दोआब हासिल किया।
ख) उसने अपनी मां के नाम पर नगलपुरम् नामक उपनगर की स्थापना की।
ग) कई महत्वपूर्ण दक्षिण भारतीय मंदिरों में भव्य गोपुरमों को जुड़वाया।
घ) उसने बलि प्रथा पर रोक लगवाई।

19. युग्म सुमेलित कीजिए

सूची I	सूची II
i. अब्दुर रज्जाक	A. सामान्य लोगों के आवासों का विवरण
ii. डोमिंगो पेस	B. विजयनगर की किलेबंदी का विवरण
iii. फर्नाओ नुनिज	C. कृष्णदेव राय का वर्णन
iv. बरबोसा	D. विजयनगर के बाजार में बिकने वाले मांस का विवरण

निम्न युग्मों में से सही युग्म चुनिए:

क) I-C,II-B,III-D,IV-A ख) I-B,II-C,III-D, IV-A
ग) I-B,II-C,III-A,IV-D घ) I-B,II-D,III-C,IV-A

20. कथन : 1542 तक विजयनगर का शासन अराविदु वंश के हाथों में चला गया।
कारण : 1565 का राक्षसी–तांगडी के युद्ध में करारी शिकस्त के बाद विजयनगर साम्राज्य एक शक्तिशाली साम्राज्य नहीं रह गया।
क) केवल कथन सही है
ख) केवल कारण सही है
ग) कथन और कारण दोनों सही है और कारण कथन का स्पष्टीकरण करता है।
घ) कथन और कारण दोनों सही है किन्तु कारण कथन का स्पष्टीकरण नहीं करता।

21. विजयनगर में स्थित यह भव्य संरचना है–

उद्धरण आधारित प्रश्न (3 अंक वाले)

I. **जल–संपदा**

विजयनगर की भौगोलिक स्थिति के विषय में सबसे चौंकाने वाला तथ्य तुंगभद्रा नदी द्वारा यहाँ निर्मित एक प्राकृतिक कुण्ड है। यह नदी उत्तर–पूर्व दिशा में बहती है। आस–पास का भूदृश्य रमणीय ग्रेनाइट की पहाड़ियों से परिपूर्ण है जो शहर के चारों ओर करधनी का निर्माण करती सी प्रतीत होती हैं। इन पहाड़ियों से कई जल–धाराएँ आकर नदी से मिलती है।

लगभग सभी धाराओं के साथ–साथ बाँध बनाकर अलग–अलग आकारों के हौज़ बनाए गए थे। चूँकि वह प्रायद्वीप के सबसे शुष्क क्षेत्रों में से एक था इसलिए पानी के संचयन और इसे शहर तक ले जाने के व्यापक प्रबंध करना आवश्यक था। ऐसे सबसे महत्त्वपूर्ण हौजों में एक का निर्माण पंद्रहवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में हुआ जिसे आज कमलपुरम् जलाशय कहा जाता है। इस हौज़ के पानी से न केवल आस–पास के खेतों को सींचा जाता था बल्कि इसे एक नहर के माध्यम से ''राजकीय केंद्र'' तक भी ले जाया गया था।

सबसे महत्त्वपूर्ण जल संबंधी संरचनाओं में से एक, हिरिया नहर को आज भी भग्नावशेषों के बीच देखा जा सकता है। इस नहर में तुंगभद्र पर बने बाँध से पानी लाया जाता था और इसे ''धार्मिक केंद्र'' से ''शहरी केंद्र'' को अलग करने वाली घाटी को सिंचित करने में प्रयोग किया जाता था। संभवतः इसका निर्माण संगम वंश के राजाओं द्वारा करवाया गया था।

(A) विजयनगर के राजाओं ने बाँधों और नहरों का निर्माण करवाया क्योंकि –

(क) विजयनगर अर्ध–शुष्क क्षेत्र था (ख) कृषि क्षेत्र की सिंचाई के लिए

(ग) घरेनू उपयोग के लिए (घ) उपर्युक्त सभी

(B) जिस यात्री के वृतांत में कृष्णदेव राय द्वारा बनाए गए जलाशय का उल्लेख है, वह है –

(क) डोमिंगो पेस (ख) मार्को पोलो

(ग) इब्न बतूता (घ) फ्रांसवा बर्नियर

(C) कमलपुरम जलाशय का निर्माण कराया गया –

(क) पंद्रहवीं शताब्दी में (ख) सोलहवीं शताब्दी में

(ग) तेरहवीं शताब्दी में (घ) बारहवीं शताब्दी में

(C) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में तथा दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है।

कथन (A) – तुंगभद्रा नदी की धराओं के साथ–साथ बाँध बनाकर अलग–अलग आकारों के हौज बनाए गए थे।

कारण (R) – यह क्षेत्र प्रायद्वीप के सबसे शुष्क क्षेत्रों में से था, इसलिए पानी का संचयन और प्रबंधन आवश्यक था

(क) दोनों कथन (A) और कारण (R) सही हैं और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) सही हैं पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।
(ग) केवल कथन (A) सही है।
(घ) केवल कारण (R) सही है।

II. विजयनगर में स्थित इस मंदर को ध्यान से देखिए और किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए।

A) यह चित्र विजयनगर के ––––– मंदिर का हैं

(क) कमल महल
(ख) हजारा राम मंदिर
(ग) विरुपाक्ष मंदिर
(घ) विठ्ठल मंदिर

B) यह मंदिर जिस देवता को समर्पित है वह है –

(क) गणेश (ख) विष्णु

(ग) शिव (घ) इनमें से कोई नहीं

C) मंदिर के **सभागारों** (मंडप) का प्रयोग जिस काम के लिए किया जाता था वह है–

(क) देवी देवताओं को झूला झुलाने के लिए

(ख) तीर्थयात्रियों के विश्राम के लिए

(ग) लोगों के विवाह के लिए

(घ) खाद्य सामग्री के भण्डारण के लिए

D) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में और दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है –

कथन (A) – राजाओं द्वारा मंदिरों में मण्डप व गोपुरम बनवाए गए।

कारण (R) – 'मंदिरों में इन परिवर्तनों के कारण देवालय मंदिर के छोटे से भाग में सिमित हो गया था।

(क) दोनों कथन (A) और कारण (R) सही हैं और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।

(ख) दोनों कथन (A) और कारण (R) सही हैं पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।

(ग) केवल कथन (A) सही है।

(ख) केवल कारण (R) सही है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंकों वाले)

1. कॉलिन मैकेन्जी कौन था तथा उसने इतिहास से सम्बन्धित परम्पराओं और स्थलों का अध्ययन क्यों आरम्भ किया?
2. पुर्तगालियों ने विजय नगर में अपने व्यापारिक और सामरिक केन्द्र स्थापित करने के प्रयास क्यों किए?
3. मन्दिर के सभागारों का प्रयोग किस प्रकार के कार्यों के लिए किया जाता था?
4. विजयनगर साम्राज्य में जल की आपूर्ति किस प्रकार की जाती थी? इसका विकास सिंचाई उद्देश्यों के लिए किस प्रकार किया गया?
5. कृष्णदेव राय के शासन काल में विजयनगर साम्राज्य के विस्तार और सुदृढ़ीकरण को स्पष्ट कीजिए।

6. विजयनगर में किलेबन्द क्षेत्रों में कृषि क्षेत्रों को भी रखा गया था। इसके क्या फायदे तथा क्या नुकसन थे?

7. विजयनगर शहर तथा साम्राज्य के इतिहास का पुनर्निमाण किस प्रकार हुआ था। स्पष्ट कीजिए?
8. हम्पी के भग्नावशेष किस प्रकार और कब प्रकाश में लाए गए, संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
9. विजय नगर की अमरनायक प्रणाली की विशेषताएँ बताइये।
10. आपके विचार में महानवमी डिब्बा से संबंद्ध अनुष्ठानों का क्या महत्त्व है?
11. गोपुरम् की विशेषतायें बताइयें।
12. 15वीं शताब्दी के दौरान फारसी राजदूत अब्दुल रज्जाक विजयचार की किलेबन्दी से किन कारणों से प्रभावित था?

दीर्घ प्रश्न (8 अंक वाले)

1. विजयनगर प्रशासन में अमरनायक प्रणाली एक प्रमुख राजनीतिक खोज थी। इसका मूल्यांकन कीजिए।
2. विजयनगर के महलों, मंदिरों तथा बाजारों का पुन : अंकन किस प्रकार संभव हो सका? स्पष्ट कीजिए।
3. दक्कन सल्तनतों और विजयनगर के मध्य संघर्ष के क्या कारण थे?
4. विजयनगर साम्राज्य के मंदिरों की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करो।
5. विजय नगर की भौगोलिक स्थिति के विषय में चौंकाने वाले तथ्य, इसकी जल सम्पदा तथा किलेबंदियों की व्याख्या कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1. अमरनायक (सैनिक कमाण्डर) (इक्ता प्रणाली के समान)
   (1) इनको राय द्वारा प्रशासन के लिए क्षेत्र दिए जाते थे। अमरनायक उन क्षेत्रों में किसानों, शिल्पकर्मियों और व्यापारियों से कर वसूलते थे।
   (2) राजस्व का कुछ भाग अमरनायक अपने व्यक्तिगत उपयोग तथा घोड़े और हाथियों के दल के रख–रखाव के लिए अपने पास रख लेते थे।
   (3) प्रभावी सैनिक शक्ति प्रदान करने में सहायक।
   (4) राजस्व का बचा हुआ भाग मंदिर तथा सिंचाई के साधनों के रखरखाव के लिए।

(5) अमरनायक राजका को वर्ष में एक बार भेंट देते थे।
(6) स्वामी भक्ति दर्शाने के लिए दरबार में उपहारों के साथ स्वयं उपस्थित रहते थे।
(7) 179ीं शताब्दी में इनमें से कई ने अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित किए थे।
(8) राजा द्वारा समय–समय पर अमरनायकों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित कर दिया करते थे।

(संकेत पृष्ठ सं. 175 एन.सी.ई.आर.टी)

2. महलो, मंदिरो तथा बाजारों का पुनः अंकन
(1) हम्पी के भवनाशेषों को कौलिन मैकेन्जी द्वारा 1800 ई. में प्रकाश में लाया गया।
(2) आरम्भिक सर्वेक्षणों के बाद यात्रा वृत्तांतो तथा अभिलेखों से प्राप्त जानकारी को एक साथ जोड़ा गया।
(3) 980 के आरम्भिक दशक से विजयनगर से मिले भौतिक अवशेषों के सूक्ष्मता से प्रलेखन की महत्त्वपूर्ण परियोजना का आरम्भ।
(4) तमिल, तेलूगू, कन्नड़ तथा संस्कृत में लिखे साहित्य के गहन अध्ययन से क्षेत्र की जानकारी प्राप्त की गई।
(5) इस विशद प्रक्रिया का एक चरण था मानचित्र–निर्माण।
(6) सम्पूर्ण क्षेत्र को 25 वर्गाकार भागों में बाँटा गया। इनको आगे छोटे वर्गों में तथा उनको फिर आगे और छोटे वर्गों में बाँटा गया।
(7) इनसे हजारों संरचनाओं के अंशो–छोटे देवस्थलों और आश्रमों से लेकर विशाल मंदिरों तक को पुनः उजागर किया गया।
(8) सड़कों, रास्तों तथा बाजारों को भी इसी प्रकार से मानचित्र पर अंकित किया गया।
(9) इन सभी की स्थिति की पहचान स्तम्भ आधारों तथा मंचों के माध्यम से की गई है।
(10) एक समय के जीवंत बाजारों के बस अब यही अवशेष बचे हैं।

(संकेत पृष्ठ सं. 188 एन.सी.ई.आर.टी)

3. दक्कन सल्तनतों तथा विजयनगर के मध्य संघर्ष के कारण
(1) विजयनगर शासकों और साथ ही दक्कन सल्तनतों के शासकों को सामरिक महत्त्वाकांक्षाओं के चलते समीकरण बदलते रहे।
(2) कृष्णदेव राय के द्वारा 1520 में बीजापुर को बुरी तरह हराया गया।
(3) सुल्तानों तथा विजयनगर केबीच अपरिहार्य रूप से शत्रुता नहीं थी।
(4) रामराय की एक सुल्तान को दूसरे के विरुद्ध करने की कोशिश ने विपरीतात्मक

रूप से उन्हें एक कर दिया।

(5) 1565 में विजयनगर पर तीनों सुल्तानों ने मिलकर आक्रमण किया। (अहमदनगर, बीजापुर तथा गोलकुण्डा) तथा तालीकोटा (राक्षस–तांगडी) के युद्ध में विजयनगर को शिकस्त दी।

(संकेत पृष्ठ सं. 174 एन.सी.ई.आर.टी)

4. विजयनगर के मंदिरों की प्रमुख विशेषताएँ

(1) विजयनगर के शासकों ने अपने आपको ईश्वर से जोड़ने के लिए मंदिर–निर्माण को प्रोत्साहन मिला।

(2) मंदिरों के रखरखाव व कुशल संचालन के लिए भूमि–अनुदान व धन–दौलत आदि दान देने की व्यवस्था।

(3) पल्लव, चालुक्य, होयसाल और चोल राजवंशों के राजाओं द्वारा बनवाए गए मंदिरों के पुरावशेष भी मिले हैं।

(4) हेमकूट की पहाड़ियों से कई धर्मों के पूजास्थलों के अवशेष मिले हैं।

(5) मंदिर धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक तथा आर्थिक केन्द्रो के रूप में।

(6) शिक्षा केन्द्रों के रूप में मंदिरों को पहचान मिली।

(7) मंदिरों में गोपुरम का निर्माण राजाओं की शानोशौकत के प्रमाण।

(8) मंदिर स्थापत्य कला की अन्य प्रमुख विशेषता– मंडप व विशाल स्तम्भों वाले गलियारे।

(9) बिरूपाक्ष मंदिर – यूनेस्कों की वर्ल्ड हैरिटेज लिस्ट में शामिल।

(10) विट्ठल मंदिर – राजा कृष्णदेव राय ने 16वीं शताब्दी में बनवाया।

(11) हम्पी के रथ मंदिर को आर. वी. आई. ने 50 रुपये के नोट पर अंकित किया है।

(12) विट्ठल मंदिर को भी यूनेस्को के वर्ल्ड हैरिटेज लिस्ट में शामिल किया गया है।

(संकेत पृष्ठ सं. 185–188 एन.सी.ई.आर.टी)

5. विजयनगर की भौगोलिक स्थिति –

(1) यह नगर कृष्णा तथा तुंगभद्रा नदी के बीच रायचूर दोआब में फैला है।

(2) तुंगभद्रा नदी द्वारा निर्मित यहाँ एक प्राकृतिक कुण्ड भी है।

(3) ग्रेनाइट की पहाड़ियाँ शहर के चारों ओर करघनी के सादृश्य।

(4) पहाड़ियों से कई जलधाराएँ आकर नदी में मिलती है।

जलसम्पदा

(1) विजयनगर का क्षेत्रा प्रायद्वीप के सबसे शुष्क क्षेत्रों में से एक है।
(2) कृत्रिम जलसम्पदा की व्यवस्था की गई।
(3) जल धाराओं के साथ बांध बनाकर अलग–अलग आकार के हौज बनाए गए।
(4) कमलपुरम् जलाशय।
(5) हिरिया नहर।
(10) कृष्णा तथा तुंगभद्रा का प्राकृतिक जलाशय।

किलेबन्दी

(1) दुर्गों की सात पंक्तियाँ।
(2) खेतों का घेराव।
(3) नगरीय केन्द्र व शासकीय केन्द्र को घेरना।
(4) दुर्ग में प्रवेश द्वार तथा सड़कें भी होती थी।
(5) अब्दुल रज्जाक समरकंदी द्वारा किलेबन्दी का वर्णन किया गया है।
(6) बाहरी दीवार शहर के चारों ओर बनी पहाड़ियों को आपस में जोड़ती थी।
(7) विशल राजगिरी संरचना थोड़ी सी शुंडाकार थी।
(8) ईंटों फनाकार थी अतः जोड़ने के लिए किसी भी मिट्टी या गारे का इस्तेमाल नहीं किया गया।
(9) विशाल अन्नागार भी किलेबन्द थे।
(10) पहली, दूसरी तथा तीसरी दीवारों के बीच जुते हुए खेत, बगीचे तथा आवास हैं।
(11) दूसरी किलेबन्दी नगरीय केन्द्र के आन्तरिक भाग के चारों ओर बनी हुई थी।
(12) तीसरी किलेबन्दी से राजकीय केन्द्र को घेरा गया था। महत्त्वपूर्ण इमारतों को भी घेरा गया।
(13) कृषि क्षेत्र की किलेबन्दी –
लाभ – युद्ध के समय शत्रु द्वारा घेराबन्दी कई महीनों या वर्षों तक चलती थी। कृषि भू–भाग को शत्रुओं से बचाने के लिए।
हानि – यह एक खर्चीली प्रणाली थी।

(संकेत पृष्ठ सं. 177–178 एन.सी.ई.आर.टी)

विषय–7

अनुच्छेद आधारित प्रश्न– (5 अंक वाले)

निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उनके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. **हौजों / जलाशयों का निर्माण किस प्रकार होता था?**

कृष्णदेव राय द्वारा बनवाए गए जलाशय के विषय में पेस लिखता है– राजा ने एक जलाशय बनवाया.....दो पहाड़ियों के मुख–विबर पर जिससे दोनों में से किसी पहाड़ी से आने वाला सारा जल यहाँ इकट्ठा हो, इसके अलावा जल 9 मील (लगभग 15 किमी.) से भी अधिक की दूरी से पाइपों से आता है जो बाहरी श्रृंखला के निचले हिस्से के साथ–साथ बनाए गए थे। यह जल एक झील से लाया जाता है जो छलकाव से खुद एक छोटी नदी में मिलती है। जलाशय में तीन विशाल स्तंभ बने हैं जिन पर खूबसूरती से चित्र उकेरे गए है, ये ऊपरी भाग में कुछ पाईपों से जुड़े हुए हैं जिनसे ये अपने बगीचों तथा धान के खेतों की सिंचाई के पानी लाते हैं। इस जलाशय को बनाने के लिए इस राजा ने एक पूरी पहाड़ी को तुड़वा दिया जलाशय में मैंने इतने लोगों को कार्य करते देखा कि वहाँ पन्द्रह से बीस हजार आदमी थे चींटियों ही तरह...

1) राजा ने जलाशयों का निर्माण क्यों कराया एवं जलाशयों में जल की आपूर्ति कैसे की जाती थी? 2

2) विजयनगर की जल संरचनाओं का उल्लेख कीजिए। 2

3) कृष्णदेव राय द्वारा कहाँ जलाशयों का निर्माण कराया गया। 1

2. **राजा और व्यापारी**

विजयनगर के सबसे प्रसिद्ध शासक कृष्णदेवराय (शासनकाल 1509–29) ने शासनकाल के विषय में अमुक्तमल्यद नामक तेलगु भाषा में एक कृति लिखी। व्यापारियों के विषय में उसने लिखाः

एक बार को अपने बंदरगाहों को सुधारना चाहिए और वाणिज्य को इस प्रकार प्रोत्साहित करना चाहिए की घोड़ो, हाथियों, रत्नों, चंदन, मोती तथा अन्य वस्तुओं का खुले तौर पर आयात किया जा सके.... उसे प्रबंध करना चाहिए कि उन विदेशों नाविकों जिन्हें तूफानों, बीमारी या थकान के कारण उनके देश में उतारना पड़ता है, की भली–भांति देखभाल की जा सके...सुदूर देशों के व्यापारियों जो हाथियों और अच्छे घोड़ों का आयात करते हैं, को रोज बैठक में बुलाकर, तोहफे देकर तथा उचित मुनाफे की स्वीकृति देकर अपने साथ संबंद्ध करना चाहिए। ऐसा करने से ये वस्तुएँ कभी भी तुम्हारें दुश्मनों तक नहीं पहुँचेगी।

1. एक राजा को अपने बंदरगाहों को क्यों सुधारना चाहिए। 2

2. कृष्णदेव राय के राज्य में किन–किन चीजों का आयात होता था? 1

3. राजा को विदेशी व्यापारियों के साथ उचित व्यवहार क्यों करना चाहिए? 2

INDIA POLITICAL AND ADJACENT COUNTRIES
भारत राजनैतिक और पड़ोसी देश
एक साम्राज्य की राजधानी : विजयनगर
गोलकुंडा
बीदर
बीजापुर
विजयनगर
चंद्रगिरि
कांचीपुरम
तंजावुर
तिरुवल्ली
कोलार
मैसूर
Tropic of Cancer
Kms. 0 230 460 Kms.
1. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate baseline.
2. The State boundaries between Uttar Pradesh & Uttarakhand, Bihar & Jharkhand, Madhya Pradesh & Chhattisgarh have not been verified by the Governments concerned.
3. The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act. 1971," but have yet to be verified.
4. The External boundaries and coastlines of India shown on this map agree with the Record / Master copy certified by the Survey of India, Dehra Dun Uttarakhand. (Vide their letter No. T.B. 410/62-A-3/213 Dated 1-10-2019.)
5. The administrative Headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh.
6. The administrative Headquarters of Telangana and Andhra Pradesh are at Hyderabad.
© Government of India Copyright, 2019.
Publishers :-
INDIAN BOOK DEPOT (MAP HOUSE)®
2937, Bahadurgarh Road, Delhi-110006.
E-mail: info@ibdmaphouse.com

(अभ्यास मानचित्र)

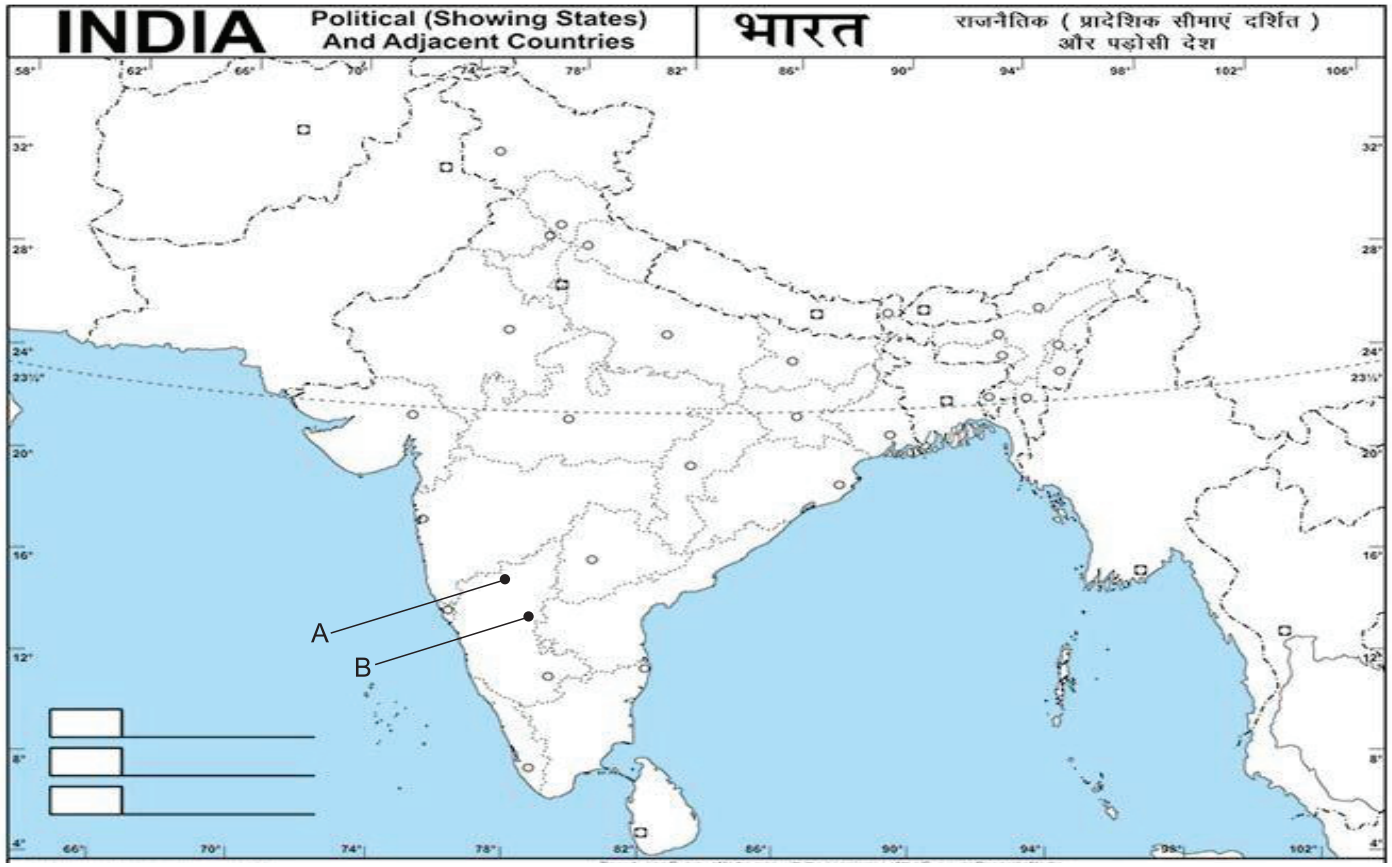

1. दिए गए मानचित्र कार्य पर मैसूर, गोलकुंड़ा और तंजावुर को दर्शाइए।
2. दिए गए मानचित्र में अंकित स्थानों को पहचानकर उनके नाम लिखिए।

विषय–8

किसान, जमींदार और राज्य : कृषि समाज और मुगल साम्राज्य

(लगभग सोलहवीं और सत्रहवीं सदी तक)

स्मरणीय बिन्दु :–

1. सोलहवीं–सत्रहवीं सदी के दौरान हिंदुस्तान में करीब करीब 85 फीसदी लोग गाँवों में रहते थे।
2. छोटे खेतिहर और भूमिहर–संभ्रांत, दोनों ही कृषि उत्पादन से जुड़े थे।
3. सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथ–आइन–ए–अकबरी' जिसे अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फ़ज़्ल ने लिखा था।
4. गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान व ईस्ट इंडिया कंपनी के दस्तावेज भी इस काल के स्रोत हैं।
5. रैयत, मुजरियान, खुद–काश्त, पाहि–काश्त–किसानों के लिए इस्तेमाल किए गए शब्द हैं।
6. मानसून भारतीय कृषि की रीढ़ था।
7. मौसम के दो मुख्य चक्रों के दौरान खेती की जाती थी।

   एक खरीफ (पतझड़ में)

   दूसरी रबी (बसंत में)
8. कपास– और गन्ने जैसी फसलें बेहतरीन 'जिन्स–ए–कामिल (सर्वोत्तम फसलें) थी। तिलहन और दलहन भी नकदी फसलों में आते थे। मध्य भारत एवं दक्खनी पठार की जमीन पर कपास उगाई जाती थी। जबकि बंगाल चीनी के लिए मशहूर था।
9. ग्रामीण समुदाय में तीन घटक थे–खेतिहर किसान, पंचायत और गाँव का मुखिया (मुकद्दम) या मंडल)
10. सत्रहवीं सदी में मारवाड़ में लिखी गई एक किताब राजपूतों की चर्चा किसानों के रुप में करती है।
11. जिन गाँवों में कई जातियों के लोग रहते थे, वहाँ अक्सर पंचायत में भी विविधता पाई जाती थी।
12. कृषि समाज में महिलाएँ मर्दो के साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर खेतों में काम तथा बुआई निराई और कटाई के साथ–साथ, पकी हुई फसलों का दाना निकालने का काम करती थी।
13. ग्रामीण समाज में किसानों और दस्तकारों के बीच फर्क करना मुश्किल होता था। क्योंकि कई ऐसे समूह थे, जो दोनों किस्म का काम करते थे। मसलन बुआई और सुहाई के बीच या सुहाई और कटाई के बीच खेतिहर किसान दस्तकारी का काम करते थे।

14. समसामयिक रचनाएँ जंगल में रहने वालों के लिए जंगली शब्द का इस्तेमाल करती हैं।

15. ज़मीदारों की समृद्धि की वजह थी उनकी विस्तृत व्यक्तिगत जमीन, इन्हें 'मिल्कियत' कहते थे, या निजी संपत्ति।

16. मुगलकालीन गाँवों में सामाजिक संबंधों की कल्पना एक पिरामिड के रुप में की गई थी।

17. भू–राजस्व के इंतजामात के दो चरण थे।

    कर निर्धारण, वास्तविक वसूली

18. इटली के एक मुसाफिर जोवान्नी कारेरी, जो लगभग 1690 ई. में भारत से होकर गुजरा था ने इस बात का बड़ा सजीव चित्र पेश किया है कि किस तरह चाँदी तमाम दुनिया से होकर भारत पहुँचती थी।

19. ''छोटे गणराज्य'' जहाँ लोग सामूहिक स्तर पर भाईचारे के साथ संसाधनों और श्रम का बँटवारा करते थे।

20. आइन पाँच भागों का संकलन है। जिसके पहले तीन भाग प्रशासन का विवरण देते हैं।

21. कृषक ग्रामीण समाज का एक मुख्य वर्ग था और उससे वसूले गए राजस्व पर ही पूरा प्रशासन और राजतंत्र आधारित था।

22. इस काल में जमीन की बहुतायत मजदूरों की मौजूदगी तथा किसानों की गतिशीलता के कारण कृषि का लगातार विस्तार हुआ। सिंचाई कार्यो को राज्य की मदद मिलती थी।

23. पशुपालन और बागवानी में बढ़ते मुनाफे की वजह से अहीर, गुज्जर और माली जैसी जातियाँ सामाजिक सीढ़ी पर ऊपर उठी।

24. ग्राम पंचायत के अलावा गाँव में हर जाति की अलग पंचायत होती थी।

25. जजमानी–18वीं सदी के स्त्रोत बताते हैं कि बंगाल में जमींदार, लुहार, बढ़ई, सुनारों आदि को उनकी सेवा के बदले रोज का भत्ता और खाने के लिए नकदी देते थे। इस व्यवस्था को जजमानी कहते थे।

26. ताकतवर लोग गाँव के मसलों पर फैसले लेते थे और कमजोर वर्गों का शोषण करते थे।

27. मनसबदारी व्यवस्था मुगल प्रशासनिक व्यवस्था के शीर्ष पर एक सैनिक नौकरशाही तंत्र (मनसबदारी) था जिस पर राज्य के सैनिक व नागरिक मामलों की जिम्मेदारी थी।

28. अकबर के शासन में भूमि का वर्गीकरण–

    1. पोलज वह जमीन है जिसमें एक के बाद एक फसल की सालाना खेती होती है और जिसे कभी खाली नहीं छोड़ा जाता है।

    2. परौती वह जमीन है जिस पर कुछ दिनों के लिए खेती रोक दी जाती है ताकि वह अपनी खोयी ताकत वापस पा सके।

3. चचर वह जमीन थी जो तीन या चार वर्षों तक खाली रहती है।

4. बंजर वह जमीन है, जिस पर पाँच या उससे ज्यादा वर्षों से खेती नही की गई है।

29. भूराजस्व मुगल प्रशासन की आमदनी का प्रमुख स्रोत था। इसलिए पैदावार पर नियत्रंण रखने के लिए और विस्तृत होते साम्राज्य में राजस्व के आकलन तथा वसूली के लिए एक प्रशासनिक तंत्र का होना आवश्यक था। इस तन्त्र में 'दीवान' का पद महत्वपूर्ण था।

30. मुगल राज्य की वित्तीय व्यवस्था की देख–रेख दीवान के निर्देशन में ही होती थी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक वाले)

प्रश्न 1) पंचायत का कौन सा कर्मचारी गांव की आमदनी व हिसाब–किताब में गांव के मुखिया की मदद करता था?

प्रश्न 2) मुगल काल में वसूली गई रकम को किस नाम से जाना जाता था?

प्रश्न 3) मुगलकालीन भारत में (16वीं व 17वी सदी) कृषि के लगातार विकास में सहायक दो प्रमुख कारक कौन से थे?

प्रश्न 4) 17वीं सदी में नई दुनिया के अलग–अलग हिस्सों से भारतीय उपमहाद्वीप में कौन–कौन सी फसलें पहुचीं?

प्रश्न 5) 16वीं–17वीं सदी में सामूहिक ग्रामीण समुदाय के तीन प्रमुख घटक कौन से थे?

प्रश्न 6) मुगलकालीन गावों में खेतिहर दस्तकार खाली महीनों में क्या कार्य करते थे?

प्रश्न 7) आइन–ए–अकबरी का लेखन कार्य किस वर्ष में पूरा हुआ?

प्रश्न 8) मुगलशासन के अन्तर्गत ग्राम–पंचायत को कौन सा अधिकार प्राप्त था?

प्रश्न 9) अहोम राजाओं का संबंध भारत के किस प्रांत से था?

प्रश्न 10) पायक कौन थे?

प्रश्न 11) 16वीं–17वी सदी में गाँवों में लगभग ——— फीसदी लोग रहते थे

क) 50 फीसदी

ख) 85 फीसदी

ग) 80 फीसदी

घ) 75 फीसदी

प्रश्न 12) आइन–ए–अकबरी के लेखक थे –

क) अलबरूनी

ख) बर्नियर

ग) अबुल फ़ज्ल

घ) इब्न बतूता

प्रश्न 13) मुगलकालीन दिल्ली प्रांत में मौसम के दो चक्रों के अनुसार —— किस्म की फसले पैदा होता थी

क) 43

ख) 40

ग) 38

घ) 50

प्रश्न 14) मुगलकालीन भारत की महत्वपूर्ण जिन्स–ए–कामिल (सर्वोत्तम फसल) थी–

क) कपास

ख) गन्ना

ग) तिलहन

घ) मक्का

प्रश्न 15) मुगलकाल में गांव का मुखिया को _____ कहते थे?

क) मुकद्दम

ख) खुदकाश्त

ग) मनसबदार

घ) आमिल

प्रश्न 16) अकबरनामा ———— जिल्दों में रचा गया

क) दो

ख) तीन

ग) चार

घ) छः

प्रश्न 17) मुगल साम्राज्य में भू–राजस्व वसूल करने वाला अधिकारी जिस नाम से जाना जाता था, वह है –

क) कानूनगो

ख) सरकार

ग) पाहिकाश्त

घ) अमील–गुजार

प्रश्न 18) इटली का रहने वाला मुसाफिर जोवान्नी कारेरी ——— वर्ष भारत आया

क) 1690

ख) 1691

ग) 1692

घ) 1693

प्रश्न 19) जजमानी व्यवस्था बंगाल के जमींदारों एवं लोहारों, बढई व सुनारों आदि के बीच सेवा विनियम व्यवस्था की जानकारी जिस सदी के स्त्रोतों से प्राप्त होती है, वह है –

क) 15वीं सदी

ख) 18वीं सदी

ग) 16वीं सदी

घ) 17वीं सदी

प्रश्न 20) मुगलकाल में ——— धातु के सिक्कों का प्रचलन सर्वाधिक था

क) चांदी

ख) सोना

ग) तांबा

घ) टिन

21. निम्न चित्र में अबुल फ़दल द्वारा किया जा रहा कार्य लिखिए।

उद्धरण आधारित प्रश्न (3 अंक वाले)

I. **पेड़ों और खेतों की सिंचाई**

हिंदुस्तान के मुल्क का ज्यादातर हिस्सा मैदानी ज़मीन पर बसा हुआ है। हालांकि यहाँ शहर और खेती लायक ज़मीन की बहुतायत है, लेकिन कहीं भी बहते पानी (का इंतज़ाम) नहीं... वे इसलिए.... कि फ़सल उगाने या बागानों के लिए पानी की बिलकुल ज़रूरत नहीं है। शरद ऋतु की फ़सलें बारिश के पानी से ही पैदा हो जाती हैं; और ये हैरानगी की बात है कि बसंत ऋतु की फ़सलें तो तब भी पैदा हो जाती है जब बारिश बिलकुल ही नहीं होती। (फिर भी) छोटे पेड़ों तक बालटियों या रहट के ज़रिये पानी पहुँचाया जाता है....

लाहौर, दीपालपुर (दोनों ही आज के पाकिस्तान में) और ऐसी दूसरी जगहों पर लोग रहट के ज़रिये सिंचाई करते है। वे रस्सी के दो गोलाकार फ़ंदे बनाते हैं जो कुएँ की गहराई के मुताबिक लंबे होते हैं। इन फ़ंदों में थोड़ी–थोड़ी दूरी पर वे लकड़ी के गुटके लगाते हैं और इन गुटकों पर घडे बाँध देते हैं। लकड़ी के गुटकों और घड़ों से बंधी इन रस्सियों को कुएँ के ऊपर पहियों से लटकाया जाता है। पहिये की धुरी पर एक और पहिया। इस अंतिम पहिये को बैल के ज़रिये घुमाया जाता है; इस पहिये के दाँत पास के दूसरे पहिये के दाँतों को जकड़ लेते हैं और इस तरह घड़ों वाला पहिया घूमने लगता है। घड़ों से जहाँ पानी गिरता है, वहाँ एक संकरा नाला खोद दिया जाता है और इस तरीके से हर जगह पानी पहुँचाया जाता है।

आगरा, चाँदवर और बयाना (आज के उत्तर प्रदेश में) में और ऐसे अन्य इलाकों में भी, लोगबाग बालटियों से सिंचाई करते हैं। कुएँ के किनारे पर वे लकड़ी के कन्ने गाड़ देते हैं, इन कन्नों के बीच बेलन टिकाते हैं, एक बड़ी बालटी में रस्सी बाँधते हैं, रस्सी को बेलन पर लपेटते हैं औ इसके दूसरे छोर की बैल से बाँध देते हैं। एक शख़्स को बैल हाँकना पड़ता है, दूसरा बालटी से पानी निकालता है।

(A) दिए गए उद्धरण में किस जगह के लोग रहट से सिंचाई करते थे, वह है –

(क) लाहौर (ख) दीनपुर

(ग) केवल (क) (घ) दोनों (क) और (ख)

(B) उत्तर प्रदेश के क्षेत्रा के लोग बालटियों से सिंचाई करते थे।

(क) आगरा (ख) चाँदवर

(ग) बयाना (घ) उपर्युक्त सभी

(C) वे खेतिहर जो दूसरे गाँवों से ठेके पर खेती करने आते थे, कहताते थे –

(क) खुद–काशत (ख) पाहि–काशत

(ग) काश्तकार (घ) मजदूर

(D) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में तथा दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है।

कथन (A) – मानसून भारतीय कृषि की रीढ़ था और आज भी है।

कारण (R) – वे फसलें जिनके लिए अतिरिक्त पानी की जरूरत थी सिंचाई के कृत्रिम उपाये अपनाने पड़े।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) का सही स्पष्टीकरण है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।

(ग) केवल कथन (A) सही है।

(घ) केवल कारण (R) सही है।

II. कपड़ा उत्पादन को दर्शाती सत्रहवीं शताब्दी की इस चित्रकारी को ध्यान से देखिए और दिए गए किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए।

A) खेतिहर व उनके परिवार निम्न में से जिन वस्तुओं के उत्पादन में भाग लेते थे, वह है

(क) कपड़े पर छपाई (ख) मिट्टी के बर्तन पकाना

(ग) खेती के औजार बनाना (घ) उपर्युक्त सभी

B) दस्तकारों को उनकी सेवाओं की उदायगी जिस रूप में की जाती थी, वह है:

(क) फसल का एक हिस्सा देकर (ख) गाँव की जमीन का एक टुकड़ा देकर

(ग) उपर्युक्त दोनों ही रूपों में (घ) दोनों में से कोई नहीं

C) बंगाल के जमींदार दस्तकारों को उनकी सेवाओं के बदले, रोज का भत्ता और खाने के लिए नकदी देते थे, इस व्यवस्था का नाम था :

(क) जजमानी (ख) रैयतवाड़ी

(ग) स्थायी बंदोबस्त (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

D) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में और दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है –

कथन (A) – गाँवों में कभी–कभी किसानों और दस्तकारों के बीच फर्क करना मुश्किल होता था।

कारण (R) – गाँव में कई ऐसे समूह थे जो खेती और दस्तकारी दोनों किस्म के काम करते थे।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।

(ग) केवल कथन (A) सही है।

(ख) केवल कारण (R) सही है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक वाले)

1. सोलहवीं और सत्रहवीं सदी के ग्रामीण समाज के क्रियाकलापों की जानकारी किन स्रोतों से प्राप्त होती है? उनका उल्लेख कीजिए।
2. मुगल राज्य किस प्रकार अपने नुमाइंदों जैसे राजस्व निर्धारित करने वाले, राजस्व वसूली करने वाले, हिसाब रखने वाले आदि के द्वारा ग्रामीण समाज पर काबू रखने की कोशिश करता था? स्पष्ट कीजिए।
3. मुगलकालीन ग्रामीण समाज जातीय भेदभाव के कारण कई समूहों में विभक्त था, इस कथन की पुष्टि कीजिए।
4. मुगलकालीन ग्रामीण पंचायत के अलावा हर जाति को अपनी पंचायत रखने की जरुरत क्यों महसूस होती थी? व्याख्या कीजिए।
5. मध्यकालीन भारत के समाज में सिंचाई व्यवस्था किस प्रकार एक अभिन्न अंग थी? उत्तर व दक्षिण भारत का तुलनात्मक वर्णन कीजिए।

6. मुगल कालीन समाज किस तरह जातिगत समूहों में विभक्त था? अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए।

7. 'मुगलकालीन समाज में निचली जाति, गरीबी और सामाजिक हैसियत के बीच सीधा रिश्ता था' यह हम किस आधार पर कह सकते हैं? स्पष्ट कीजिए।

8. इस काल में पंचायत के मुखिया को क्या कहा जाता था? उसका चुनाव कैसे होता था? वर्णन कीजिए।

9. किन कारणों के आधार पर कहा जा सकता है कि मुगल काल में किसानों और दस्तकारों के बीच फर्क करना कठिन होता था? स्पष्ट कीजिए।

10. मुगलकाल के दौरान वाणिज्यिक खेती को महत्व क्यों दिया गया? विवेचना कीजिए।

11. स्पष्ट कीजिए कि आइन–ए–अकबरी आज भी अपने समय का असाधारण ग्रन्थ क्यों हैं?

12. मध्यकाल में जंगली शब्द से क्या तात्पर्य था? स्पष्ट कीजिए।

13. 16वीं 17वीं शताब्दियों में कृषि में लगातार विस्तार के लिए उत्तरदायी तीन कारकों का वर्णन कीजिए।

14. 16वीं_17वीं शताब्दियों में ग्राम पंचायतों के कार्यो एवं अधिकारों का वर्णन कीजिए।

15. 16वीं_17वीं शताब्दियों में भारत में खेती मुनाफे एवं व्यापार के लिए भी होती थी, स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक वाले)

1. मुगलकाल में कृषि समाज में महिलाओं की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

2. मुगलकालीन भारत में जमींदार शोषण करने का तबका था, परन्तु किसानों से उनके रिश्ते में पारस्परिकता, पैतृकवाद और संरक्षण का पुट था। इन विरोधाभासों को समझाते हुए जमींदारों की भूमिका का वर्णन कीजिए।

3. अबुल फज्ल का 'आइन–ए–अकबरी' एक बहुत बड़े ऐतिहासिक और प्रशासनिक परियोजना का नतीजा था। विवरण दीजिए।

4. पंचायत और गाँव का मुखिया किस तरह से ग्रामीण समाज का नियमन करते थे। व्याख्या कीजिए।

5. मौसम के दो चक्रों के दौरान 16वीं तथा 17वीं शताब्दियों के दौरान कृषि किस प्रकार की जाती थी? विभिन्न फसलों के उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

6. 16वीं एवं 17वीं शताब्दियों के दौरान मुगल साम्राज्य में वनवासियों के जीवन जीने के ढंग की व्याख्या कीजिए?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1. मुगल काल में कृषि समाज में महिलाओं की भूमिका –
   (1) पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खेतों में काम करती थीं। बुआई, निराई, कटाई के साथ–साथ पकी फसल से दाना निकालना।
   (2) महिलाओं की जैव वैज्ञानिक क्रियाओं को लेकर लोगों के मन में पूर्वाग्रह।
   (3) सूत कातना, बर्तन बनाने के लिए मिट्टी को गूंथने, कपड़ों पर कढ़ाई तथा दस्तकारी जैसे काम महिलाएँ ही करती थीं।
   (4) महिलाओं को महत्त्वपूर्ण संसाधन के रूप में देखा जाता था।
   (5) महिलाओं की मृत्युदर बहुत थी।
   (6) दरअसल किसान और दस्तकार महिलाएँ जरूरत पड़ने पर न सिर्फ खेतों में काम करती थीं बल्कि नियोक्ताओं के घरों पर भी जाती थीं और बाजारों में भी।
   (7) परिवार तथा समुदाय द्वारा महिलाओं पर पुरजोर काबू रखा जाता था।
   (8) राजस्थान, गुजरात तथा महाराष्ट्र आदि पश्चिमी भारत के इलाकों में महिलाएँ न्याय तथा मुआवजें की उम्मीद से पंचायत को अर्जियाँ देती थी।
   (9) भूमिहर भद्रजनों में महिलाओं के पुश्तैनी सम्पत्ति का हक मिला। उदाहरण – पंजाब में महिलाएँ पुश्तैनी जमीन की विक्रेता के रूप में।

   (संकेत पृष्ठ सं. 206–207 एन.सी.ई.आर.टी)

2. मुगलकालीन भारत में जमींदारों की भूमिका
   (1) इनकी कमाई तो कृषि से परन्तु उत्पादन में सीधी हिस्सेदारी नहीं।
   (2) राज्य को कुछ खास किस्म की सेवाएँ देने तथा जाति की वजह से जमींदारों की हैसियत ऊँची थी।
   (3) जमींदारों की समृद्धि की वजह थी उनकी विस्तृत जमीन (मिल्कियत) थी।
   (4) राज्य की ओर से कर वसूलने तथा सैनिक संसाधनों की वजह से ये वर्ग ताकतवर था।
   (5) सैनिक टुकड़ियाँ, किले, घुड़सवार, तोपखाना, पैदल सैनिक भी होते थे।
   (6) दस्तावेजों के अनुसार जमींदारी को पुख्ता करने की प्रक्रिया धीमी होती थी –
      1. नई जमीनों को बसाकर जंगल बरी
      2. अधिकारों के हस्तांतरण के जरिए
      3. राज्य के आदेश से
      4. जमीन खरीद कर

(7) उदाहरण – राजपूत, जाट, द. प. बंगाल तथा किसान पशुचारक (सदगोप) ने भी जमींदारियाँ स्थापित की।

(8) जमींदार समय–समय पर किसानों की सहायता भी करते थे। जैसे– उन्हें खेतों में काम देना तथा काम के लिए उधार देना।

(9) कृषि विद्रोहों में जमींदारों ने भी भाग लिया था।

(संकेत पृष्ठ सं. 211–212 एन.सी.ई.आर.टी)

3. आइन–ए–अकबरी

(1) अकबर के हुक्म पर अबुल फजल द्वारा रचित।

(2) 1598 ई. में पाँच संशोधनों के बाद पूर्ण हुई।

(3) अकबरनामा की तीन जिल्दों में से तीसरी आइन–ए–अकबरी थी।

(4) आइन–ए–अकबरी को शाही नियम, कानून के सारांश और साम्राज्य के एक राजपत्र की सूरत में संकलित किया गया है।

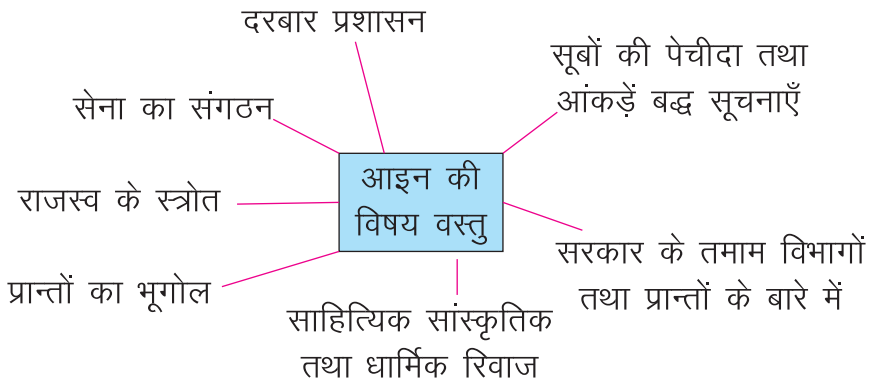

(5) आइन पाँच भागों का संकलन

1. प्रथम मुल्क आबादी – शाही, घर परिवार रखरखाव
2. द्वितीय सिपह आबादी – सैनिक व नागरिक प्रशासन
3. तृतीय मुल्क आबादी – साम्राज्य व प्रांतों की वित्तिय पहलूओं तथा राजस्व के आंकड़े सूबों के नीचे की इकाइयों की विस्तृत जानकारी।
4. चौथी तथा पाँचवीं किताबों में भारत के लोगों के मजहबी, साहित्यिक और सांस्कृतिक रीति–रिवाज तथा अन्त में अकबर के 'शुभ वचन' लिखे हैं।

(संकेत पृष्ठ सं. 217–218 एन.सी.ई.आर.टी)

4. पंचायत के मुखिया द्वारा ग्रामीण समाज का नियमन

(1) बुजुर्ग लोगों का जमावड़ा।

(2) सर्वमान्य फैसला।

(3) पंचायत का मुखिया 'मुकद्दम या मण्डल' कहलाता था।

(4) मुखिया का चुनाव गाँव के बुजुर्गों की आम सहमति से तथा मंजूरी जमींदारों से लेनी पड़ती थी।

(5) गाँव में आमदनी व खर्चे का हिसाब–किताब अपनी निगरानी में मुखिया करवाता था।

(6) पंचायत का काम गाँव के आम खजाने से चलता था।

(7) कर अधिकारियों की खातिरदारी, प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए तथा सामुदायिक कार्यों के लिए खर्चा किया जाता था।

(8) पंचायत का बड़ा काम था कि गाँव के सभी लोग अपनी जाति की हद में रहे।

(9) शादियाँ भी मण्डल की मौजूदगी में होती थी।

(10) पंचायतों को अपराधी पर जुर्माना लगाने तथा समुदाय से निष्कासित करने का अधिकार था।

(11) ग्राम पंचायत के अलावा गाँव में हर जाति की अपनी ताकतवर पंचायत होती थी।

(संकेत पृष्ठ सं. 202–203 एन.सी.ई.आर.टी)

5. (1) मौसम के दो चक्रों में खेती – रबी (बसंत में) – खरीफ (पतझड़ में)

(2) सूखे तथा बंजर इलाकों को छोड़कर साल में कम से कम दो फसलें तथा कहीं–कहीं तीन भी उगाई जाती थीं।

(3) आइन के अनुसार आगरा में 39, दिल्ली में 43 किस्म की फसलें तथा बंगाल में सिर्फ चावल की 50 किस्में पैदा की जाती थी।

(4) खाद्य तथा जिन्स–ए–कामिल दोनों तरह की फसलों की पैदावार जैसे कपास तथा गन्ना।

(5) मध्य भारत तथा दक्कनी पठार पर कपास, बंगाल में चीनी उगाई जाती थी।

(6) दलहन तथा तिलहन की खेती भी होती थी।

(7) दुनियां के अलग–अलग क्षेत्रों से नई नई फसलें भारतीय उपमहाद्वीप में पहुंची जैसे मक्का (स्पेन तथा अफ्रीका से) तथा आलू, टमाटर, मिर्च, अनानास तथा पपीता।

(संकेत पृष्ठ सं. 200–201 एन.सी.ई.आर.टी)

6. 16वीं–17वीं शताब्दी में मुगलकालीन वनवासियों की जीवन शैली

(1) वनवासी (वनों में रहने वाले) लोगों की जनसंख्या 40 प्रतिशत थी।

(2) ये झारखण्ड, पूर्वी भारत, मध्य भारत तथा उत्तरी क्षेत्र दक्षिण भारत का पश्चिमी घाट में रहते थे।

(3) इनके लिए जंगली शब्द अर्थात् जिनका गुजारा जंगल के उत्पादों पर होता है, प्रयोग किया जाता था।

(4) झूम खेती करते थे अर्थात् स्थानात्तरीय कृषि।

(5) एक जगह से दूसरी जगह पर घूमते रहना, (काम तथा खाने की तलाश में)।

(6) भीलों द्वारा बसन्त के मौसम में जंगल के उत्पाद इकट्ठे करना, गर्मियों में मछली पकड़ना, मानसून के महीने में खेती करना, शरद तथा जाड़ों में शिकार करना आदि काम किये जाते थे।

(7) राज्य के लिए जंग उलट–फेर वाला तथा बदमाशों को शरण देने वाला इलाका था।

(संकेत पृष्ठ सं. 208–209 एन.सी.ई.आर.टी)

विषय–8

1. अकबर के शासन में भूमि का वर्गीकरण।

आइन में वर्गीकरण के मापदंड की निम्नलिखित सूची दी गई हैं–

अकबर बादशाह ने अपनी गहरी दूरदर्शिता के साथ जमीनों का वर्गीकरण किया और हर एक (वर्ग की ज़मीन) के लिए अलग–अलग राजस्व निर्धारित किया। 'पोलज' वह ज़मीन है जिसमें एक के बाद एक हर फसल की सलाना खेती होती है और जिसे कभी खाली नहीं छोड़ा जाता है। 'परौती' वह जमीन है जिस पर कुछ दिनों के लिए खेती रोक दी जाती है ताकि वह अपनी खोयी ताकत वापस पा सके 'चाचर' वह ज़मीन है जो तीन या चार वर्षों तक खाली रहती है। 'बंजर' वह ज़मीन है जिस पर पाँच या उससे ज्यादा वर्षों तक खेती नहीं की गई हो। पहले दो प्रकार की जमीन की तीन किस्म हैं, अच्छी, मध्यम और खराब। वे हर किस्म की ज़मीन के उत्पाद को जोड़ देते हैं, और इसका तीसरा हिस्सा मध्यम उत्पाद माना जाता है, जिसका एक तिहाई–हिस्सा शुल्क माना जाता है।

1) 'पोलज' और परौती ज़मीन में अंतर स्पष्ट कीजिए। 2

2) 'बजंर' और 'चाचर' किसे कहते थे? 2

3) अकबर के किस अधिकारी ने भूराजस्व का निर्धारण किया था? 1

2. पेड़ों और खेतों की सिंचाई

यह बाबरनामा से लिया गया एक अंश है जो सिंचाई के उन उपकरणों के बारे में बताता है जो इस बादशाह ने उत्तर भारत में देखें :

हिंदुस्तान के मुल्क का ज्यादातर हिस्सा मैदानी ज़मीन पर बसा हुआ है। हालांकि यहाँ शहर और खेती लायक ज़मीन की बहुतायत है, लेकिन कहीं भी बहते पानी (का इंतजाम) नहीं है। शरद ऋतु की फसलें बारिश के पानी से ही पैदा हो जाती हैं और ये हैरानी की बात है कि बसंत ऋतु की फसलें तो तब भी पैदा हो जाती है जब बारिश बिलकुल ही नहीं होती। (फिर भी) छोटे पेड़ों तक बालटियों या रहट के ज़रिये पानी पहुँचाया जाता है ....

लाहौर, दीपालपुर (दोनों ही आज के पाकिस्तान में) और ऐसी दूसरी जगहों पर लोग रहट के जरिये सिंचाई करते हैं। वे रस्सी के दो गोलाकार फंदे बनाते हैं जो कुएँ की गहराई के मुताबिक लंबे होते हैं। इन फंदों में थोड़ी–थोड़ी दूरी पर वे लकड़ी के गुटके लगाते हैं और इन गुटकों पर घड़े बाँध देते हैं। लकड़ी के गुटकों और घड़ों से बँधी इन रस्सियों को कुएँ के ऊपर पहियों से लटकाया जाता है। पहिये की धुरी पर एक और पहिया। इस अंतिम पहिये को बैल के ज़रिये घुमाया जाता है; इस पहिये के दाँत पास के दूसरे पहिये के दाँतों को जकड़ लेते हैं और इस तरह घड़ों वाला पहिया घूमने लगता हैं। घड़ों से जहाँ पानी गिरता है, वहाँ एक संकरा नाला खोद दिया जाता है और इस तरीके से हर जगह पानी पहुँचाया जाता है।

1) प्रस्तुत पैराग्राफ (अनुच्छेद) किस ग्रन्थ से लिया गया है। 1

2) मुगलकाल में खेतों की सिंचाई के लिए सिंचाई साधनों का प्रयोग किस प्रकार किया जाता था? 2

3) बाबरनामा में वर्णित हिन्दुस्तानी बस्तियों की व्याख्या कीजिए। 2

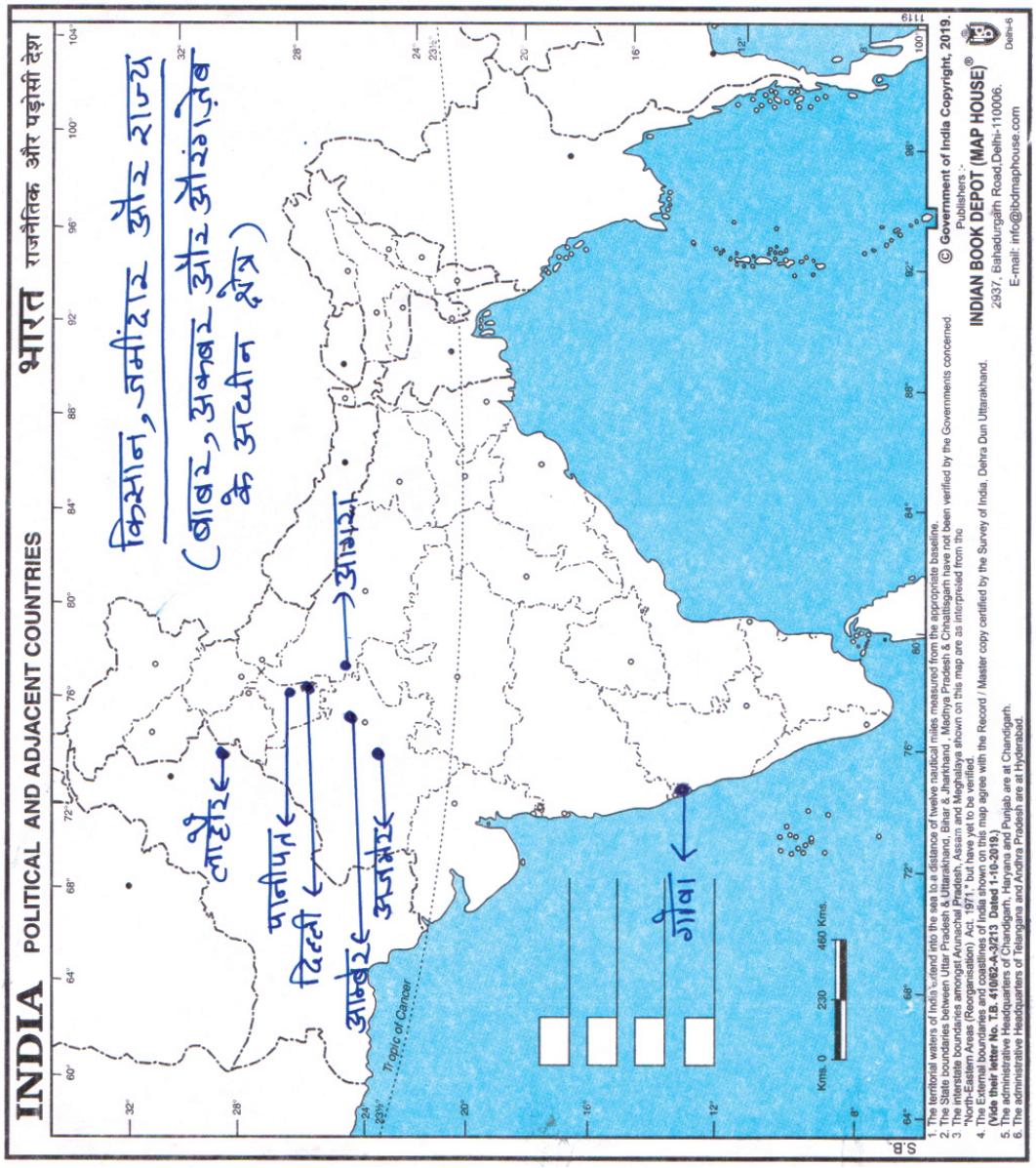

विषय–10

उपनिवेशवाद और देहातः सरकारी अभिलेखों का अध्ययन

स्मरणीय बिन्दु :–

1. भारत में औपनिवेशिक शासन सर्वप्रथम बंगाल में स्थापित किया गया था। यही वह प्रांत था जहाँ पर सबसे पहले ग्रामीण समाज को पुनर्व्यस्थित करने और भूमि संबंधी अधिकारों की नई व्यवस्था तथा नई राजस्व प्रणाली स्थापित करने के प्रयास किए गए थे।

2. 1793 में इस्तमरारी बंदोबस्त बंगाल के राजाओं और ताल्लुकदारों के साथ लागू किया गया। उस समय कार्नवालिस गवर्नर जनरल था। इन्हें जमींदार कहा गया और उनका कार्य सदा के लिए एक निर्धारित कर का संग्रह किसानों से करना था। इसे सूर्यास्त विधि भी कहा जाता था।

3. कम्पनी जमींदारों को पूरा महत्व देती थी, किन्तु उनकी शक्तियों को सीमित करना चाहती थी। इसलिए 1) जमींदारों की सैन्य टुकड़ियाँ समाप्त कर दी गई । 2) सीमा शुल्क समाप्त कर दिया गया। 3) जमींदारों से स्थानीय न्याय और पुलिस की शक्ति छीन ली गई

   4) कचहरी को कलेक्टर के अधीन कर दिया गया।

4. जमींदारों द्वारा समय पर राजस्व राशि जमा न करने के कई कारण थे– 1) प्रारम्भिक मांगे बहुत ऊँची थी 2) यह मांग 1790 के दशक में लागू की गई थी जब कृषि की उपज की कीमतें नीची थी। 3) इनकी शक्ति राजस्व इकट्ठा करने व उसके प्रबंध तक सीमित थी।

5. जमींदार अपनी जमीन को नीलामी से बचाने के लिए – 1) जमींदारी को घर की महिलाओं के नाम करवा देते थे। 2) अपने एजेंट के माध्यम से नीलामी में जोड़–तोड़ करते थे। 3) अपने लठैतो के माध्यम से दूसरे व्यक्ति को बोली लगाने से रोकते थे। 4) जान बूझकर ऊँची बोली लगाते तथा बाद में खरीदने से इनकार कर देते ।

6. पहाड़िया राजमहल पहाड़ी के जंगलों में रहते थे। झूम खेती करते थे। खाने के लिए महुआ इकट्ठा करते और बेचने के लिए रेशम के कीड़े पालते। लकड़ियों से काठ कोयला बनाते। इमली और आम के पेड़ आश्रय स्थल थे। पूरे प्रदेश को ये अपने निजी भूमि मानते।

7. जब स्थायी कृषि का विकास हुआ, कृषि क्षेत्र के विकास के लिए पहाड़ियाँ और स्थानीय कृषकों के बीच झगड़ा प्रारंभ हुआ, वे नियमित रूप से गाँव पर हमले बोलने लगे और ग्रामवासियों से अनाज और पशु छीन–झपट कर ले जाने लगे। अंग्रेज अधिकारियों ने 1780 के बाद पहाड़िया लोगों के दमन के लिए क्रूर नीति अपनाई और इनका शिकार और संहार करने लगे।

8. 1780 के दशक के आस–पास संथाल लोग बंगाल में आने लगे वे जमींदारों के यहाँ भाड़े पर काम करते थे, अंग्रेजों ने उनका उपयोग जंगल की सफाई के लिए किया। वे भूमि को ताकत लगाकर जोतते। हल इनकी पहचान थी तथा ये स्थायी कृषि में विश्वास करते थे।

9. अंग्रेजों ने 1832 तक जमीन के काफी बड़े क्षेत्र को सीमांकित करके इसे संथालों की भूमि घोषित कर दिया इस क्षेत्र को 'दामिन–इ–कोह' का नाम दिया गया। इनके अनुदान पत्र में यह शर्त थी कि उनको दी गई भूमि के कम से कम दसवें भाग को साफ करके पहले दस वर्षों के भीतर जोतना था।

10. 1855–56 में संथालों ने विद्रोह कर दिया। इसके प्रमुख कारणों में 1) संथालों की जमीन पर सरकार द्वारा भारी कर लगाना 2) सरकार द्वारा ऊँची ब्याज दर वसूलना तथा कर्ज न अदा करने की स्थिति में जमीन पर कब्जा कर लेना था।

11. 'सूपा' (पूना जिले का एक बड़ा गाँव), एक विपणन केन्द्र (मंडी) जहाँ अनेक व्यापारी और साहूकार रहते थे। यहाँ 12 मई 1875 को ग्रामीण इलाकों में किसानों ने विद्रोह कर दिया। साहूकारों के बही खाते, ऋणपत्र को जला दिया। इसे दक्कन का विद्रोह कहते हैं।

12. बम्बई दक्कन में जो राजस्व प्रणाली लागू की गई उसे रैयतवाड़ी कहा जाता है। यह रिकॉर्डों के सिद्धान्त पर आधारित था। इसमें सरकार ने रैयत के साथ बंदोवस्त किया, तथा कर को समय–समय पर पुनर्निधारित किया जाता था।

13. अमेरिका में 1861 में गृह युद्ध छिड़ गया, तो ब्रिटेन के कपास क्षेत्र में तहलका मच गया, क्योंकि अमेरिका से कपास आयात मुश्किल हो गया जिस कमी की पूर्ति भारत से अधिक मात्रा में कपास का आयात करके किया गया, इसके लिए भारतीय किसानों को कपास के उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया गया। साहूकारों द्वारा ऋण उपलब्ध करवाया गया।

14. 1865 के आस–पास जब अमेरिकी गृहयुद्ध समाप्त हुआ तो अमेरिका में फिर से कपास का उत्पादन चालू हो गया, जिससे भारत से निर्यात में कमी आ गई। निर्यात व्यापारी और साहूकार किसानों को दीर्घाविधि ऋण देने से इनकार करने लगे। उसी समय रैयतवाड़ी क्षेत्र में कर का फिर से निर्धारण होना था जिसे नाटकीय ढंग से 50 से 100% तक बढ़ा दिया गया। किसान अपने को ठगा महसूस करने लगे जो दक्कन विद्रोह का कारण बना।

15. संथाल विद्रोह के बाद संथाल परगने का निर्माण कर दिया गया। इसके लिए 5,500 वर्ग मील का क्षेत्र भागलपुर तथा वीरभूम जिलों में से लिया गया।

16. 1860 के दशक से पहले ब्रिटेन में कच्चे माल के रूप में कपास का आयात (तीन चौथाई) अमेरिका से आता था।

17. ईस्ट इंडिया के क्रियाकलापों के विषय में पांचवी रिपोर्ट 1813 में ब्रिटिश संसद में पेश की गई थी।

18. फ्रांसिस बुकानन एक चिकित्सक था, जो बंगाल चिकित्सा सेवा में (1794–1815) भारत आया।

19. पहाड़िया लोग खाने के लिए महुआ के फूल इकट्ठे करते थे।
20. जो साहूकार संथालों से ऊंचे दर पर ब्याज वसूलते थे, उन्हें संथाल आदिवासी दिकू कहकर संबोधित करते थे।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक वाले)

प्र. 1 पहाड़िया लोग अपना निर्वाह कैसे करते थे?

प्र. 2 स्थाई बन्दोबस्त कौन से प्रान्त में लागू किया गया?

प्र. 3 अवध का विलय ब्रिटिश भारत में किस वर्ष किया गया?

प्र. 4 पहाड़िया लोग झूम खेती के लिए किस यंत्र का प्रयोग करते थे?

प्र. 5 वह दूसरी जनजाति कौन सी थी, जिससे पहाड़िया लोगों को सघर्ष करना पडा?

प्र. 6 'दिकू' कौन थे?

प्र. 7 रैयतवाड़ी व्यवस्था सर्वप्रथम किस रेजीडेंसी में लागू हुई?

प्र. 8 अंग्रेजों के विरूद्ध संथालों ने विद्रोह किस वर्ष किया?

प्र. 9 संथाल–विद्रोह का नेता कौन था?

प्र. 10 1860 के दशक में भारत से ब्रिटेन को आयात की जाने वाली वस्तु कौन सी थी?

प्रश्न 11 इस्तमरारी बन्दोबस्त कौन से वर्ष लागू किया गया?

क) 1793

ख) 1794

ग) 1795

घ) 1796

प्रश्न 12 इस्तमरारी बंदोबस्त लागू किए जाने के समय बंगाल का गर्वनर जनरल कौन था?

क) लोर्ड कर्जन

ख) डलहौजी

ग) लॉर्ड कार्नवालिस

घ) विलियम बेंटिक

प्रश्न 13 राजस्व एकत्र करने के लिए जमींदार का जो अधिकारी आता था, उसे किस नाम से जाना जाता था?

क) मुंशी

ख) गुमाश्ता

ग) जोतदार

घ) अमला

प्रश्न 14 बंगाल में धनी किसानों के वर्ग को किस नाम से जाना जाता था?

क) जोतदार

ख) जमींदार

ग) साहूकार

घ) काश्तकार

प्रश्न 15 पांचवी रिपोर्ट ब्रिटिश संसद में कब पेश की गई?

क) 1813

ख) 1815

ग) 1820

घ) 1825

प्रश्न 16 पहाड़िया लोग किस प्रकार की खेती करते थे?

क) स्थायी खेती

ख) मिश्रित खेती

ग) झूम खेती

घ) बागानी खेती

प्रश्न 17 पहाड़िया लोग कहाँ रहते थे?

क) नीलगिरी की पहाड़ियों पर

ख) सतपुड़ा की पहाड़ियों पर

ग) अरावली की पहाड़ियों पर

घ) राजमहल की पहाड़ियों पर

प्रश्न 18 कौन से इलाके को संथालों की भूमि घोषित किया गया?

क) दामिन–ए–कोह

ख) बर्द्धवान

ग) कोलकता

घ) मिदनापुर

प्रश्न 19 लेखा–बहियाँ जलाने का कार्यक्रम कौन से गांव से शुरू हुआ?

क) चटगांव

ख) सुतानती गांव

ग) बर्द्धवान

प्रश्न 20 ब्रिटेन का कौन सा शहर सूती वस्त्र उत्पादन के लिए मशहूर था?

क) लंदन

ख) मैनचेस्टर

ग) यार्कशायर

घ) बर्मिंघम

प्रश्न 21. निम्नलिखत चित्र को ध्यान से देखिए और इसका नाम लिखिए।

उद्धरण आधारित प्रश्न (3 अंक वाले)

1. निम्नलिखित स्रोत को ध्यान से पढ़िए एवं किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

संथालों के बारे में बुकानन के विचार

नयी ज़मीनें साफ़ करने में वे बहुत होशियार होते हैं लेकिन नीचता से रहते हैं। उनकी झोपड़ियों में कोई बाड़ नहीं होती और दीवारें सीधी खड़ी की गई छोटी–छोटी सटी हुई लकड़ियों की बनी होती हैं जिन पर भीतर की ओर लेप (पलस्तर) लगा होता है। झोपड़ियाँ छोटी और मैली–कुचैली होती हैं; उनकी छत सपाट होती हैं, उनमें उभार बहुत कम होता है।

(A) निम्नलिखित वाक्य को ठीक करके लिखें।
''बुकानन के अनुसार संथालों की झोपड़ियाँ शानदार होती थीं।''

(B) बुकानन कौन थे?

(क) एक अंग्रेज व्यापारी (ख) एक अंग्रेज चिकित्सक

(ग) एक इतिहासकार (घ) गवर्नर जनरल

(C) बुकानन की दृष्टि में संथाल कैसे थे?

(क) सभ्य तथा संस्कृत (ख) असभ्य तथा गंदे

(ग) सामान्य (घ) उपरोक्त सभी

(D) संथालों के स्थायी निवास को क्या नाम दिया गया?

2. निम्नलिखित चित्र को देखे एवं किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दें।

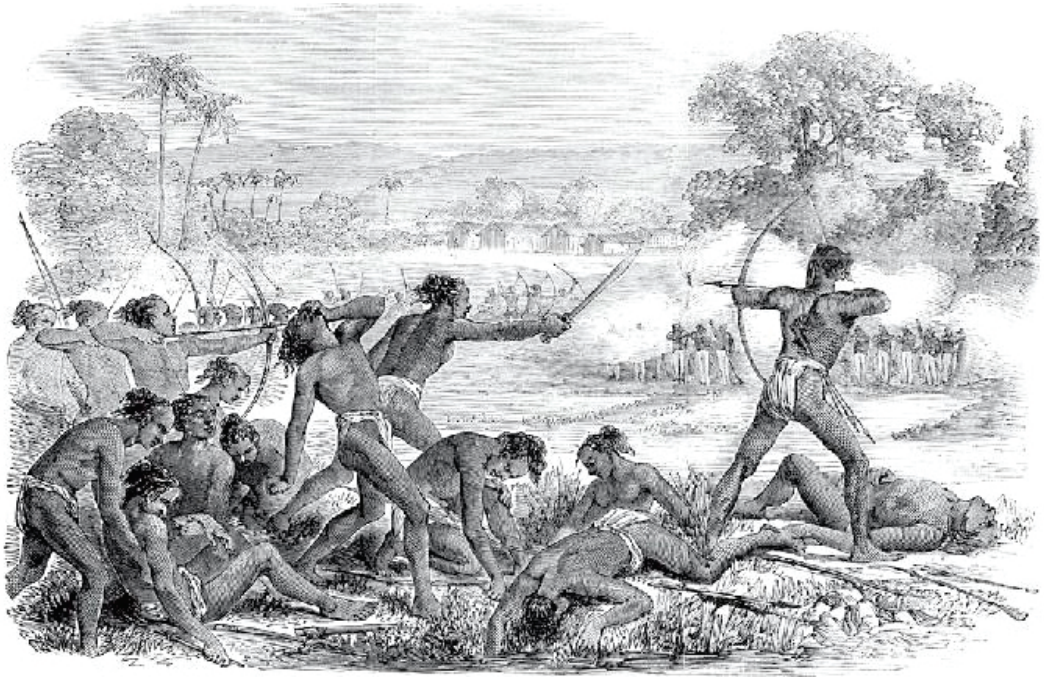

(A) अंग्रेजों के विरुद्ध कौन विद्रोह कर रहे हैं?

(क) पहाड़िया (ख) संथाल

(ग) सैनिक (घ) दिकु

(B) दामिन –ए–कोह क्या था?

(C) वाक्य को ठीक करके लिखिए।
''संथालों को पुरस्कृत करने के लिए संथाल परगना का निर्माण किया गया।''

(D) संथाल विद्रोह कब हुआ?
(क) 1950–51 (ख) 1855–56
(ग) 1850–51 (घ) 1860–61

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंकों वाले)

1. कम्पनी राजस्व माँग को स्थायी रूप से निर्धारित करने में किन लाभों की अपेक्षा कर रही थी?
2. राजस्व राशि की अदायगी में जमींदारों की असफलता के क्या कारण थे?
3. 1770 और 1780 के दशक में ब्रिटिश अधिकारियों का राजमहल के पहाड़ियों के प्रति क्या रवैया था?
4. बुकानन के विवरण को पढ़ते समय हमें क्या सावधानी बरतनी चाहिए? विस्तार पूर्वक लिखिए।
5. ''इस्तमरारी बन्दोबस्त को बंगाल से बाहर बिरले ही लागू किया गया?'' इस कथन का परीक्षण करें।
6. जो राजस्व प्रणाली बम्बई दक्कन में लागू की गई वह बंगाल में लागू की गई प्रणाली से किस प्रकार भिन्न है? इसमें किन सिद्धान्तों का ध्यान रखा गया?
7. आप किन तथ्यों के आधार पर कह सकते हैं कि पहाड़िया लोगों का जीवन जंगल से जुड़ा हुआ था?
8. ब्रिटिश शासन के विरूद्ध संथालों के विद्रोह के क्या कारण थे? वर्णन कीजिए।
9. संथालों के आगमन से पहाड़िया लोगों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?
10. अमेरिकी गृह–युद्ध ने भारत में रैयत समुदाय के जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया? व्याख्या कीजिए।
11. बंबई दक्कन में कौन सी राजस्व प्रणाली लागू की गई? इसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
12. रैयतवाड़ी बन्दोबस्त एवं स्थाई बन्दोबस्त में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
13. ब्रिटिश भारत के दौरान किसानों के कर्जदार होने के कारणों का वर्णन कीजिए।

14. 18वीं सदी के दौरान हल व कुदाल के बीच संघर्ष को पहाड़िया व संथालों के नजरिए से स्पष्ट कीजिए।
15. पांचवी रिपोर्ट के सन्दर्भ में दिए गए सबूतों की व्याख्या कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंकों वाले)

1. इंग्लैंड में कम्पनी के क्रियाकलापों पर 1760 के दशक से ही बहुत बारीकी से नज़र रखी जाती थी। ऐसा करने के पीछे क्या उद्देश्य थे?
2. ब्रिटिश भू–राजस्व नीतियों की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।
3. भारत में रैयत समुदाय के जीवन पर अमेरिकी गृहयुद्ध का कैसा प्रभाव पड़ा?
4. स्थायी बंदोबस्त किसके द्वारा लागू किया गया? इसकी मुख्या धाराओं का उल्लेख कीजिए।
5. दक्कन दंगा कमीशन की रिपोर्ट की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए।
6. संथाल लोग राजमहल की पहाड़ियों में आकर बसने लगे। इस संदर्भ में अंग्रेजों की प्रतिक्रिया का वर्णन कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1. (1) ब्रिटेन के बहुत से समूहों द्वारा भारत तथा चीन के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार का विरोध।
   (2) निजी व्यापारियों की संख्या में बढ़ोत्तरी जो भारत के साथ व्यापार करने को इच्छुक।
   (3) ब्रिटेन के उद्योगपति ब्रिटिश विनिर्माताओं के लिए भारत का बाजार खुलवाने के लिए उत्सुक।
   (4) बंगाल पर मिली विजय का लाभ केवल ईस्ट इंडिया कम्पनी को सम्पूर्ण ब्रिटिश राष्ट्र को नहीं।
   (5) कम्पनी द्वारा कुशासन और अव्यवस्थित प्रशासन।
   (6) कंपनी के अधिकारियों का लोभ–लालच और भ्रष्टाचार।
   (7) ब्रिटिश संसद में इन विषयों पर बहस।
   (8) ब्रिटिश संसद द्वारा कम्पनी के शासन को नियंत्रित और विनियमित करने के लिए

18वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में अधिनियम पारित।

2. (1) तीन प्रमुख भूराजस्व नीतियाँ – स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी, महालवाड़ी

(2) स्थायी बन्दोबस्त –

1. 1793 में चार्ल्स कार्नवालिस द्वारा लागू किया गया।
2. स्थायी बन्दोबस्त (इस्तमरारी बन्दोबस्त) बंगाल, बिहार, उड़ीसा तथा वाराणसी में लागू।
3. जमींदार समाहर्ता के रूप में –

– राजस्व मांग स्थाई तथा ऊँची दर।
– जमींदारों द्वारा निर्धारित राजस्व राशि को गाँवों से इकट्ठा करना।
– नियमित रूप से राजस्व राशि को कम्पनी को अदा करना।
– समय पर लगान नहीं दिए जाने पर जमींदार की जमीन जब्त और नीलाम।

(3) रैयतवाड़ी –

– थॉमस मुनरो द्वारा 1820 में बम्बई दक्कन में लागू।
– राजस्व की राशि सीधे रैयत के साथ तय।
– रैयत को भू–स्वामित्व।
– राजस्व की मांग चिरस्थायी नहीं।

(4) महालवाड़ी –

– उत्तर–पश्चिम भारत में लागू।
– जमीन को महाल में बाँटा गया।
– सम्पूर्ण महाल (गाँव) को एक इकाई माना गया।
– गाँव के मुखिया द्वारा भू–राजस्व इकट्ठा किया जाना।

3. अमेरिकी गृहयुद्ध (सन् 1861) का ब्रिटेन के कपास क्षेत्र पर गहरा असर

(1) अमेरिका से ब्रिटेन आने वाले कच्चे माल में भारी गिरावट।
(2) भारत तथा अन्य देशों को ब्रिटेन कपास निर्यात करने का संदेश।
(3) बम्बई से कपास के सौदागरों द्वारा कपास पैदा करने वाले क्षेत्रों का दौरा।
(4) कपास की कीमतों में उछाल।
(5) कपास निर्यातकों द्वारा अधिक से अधिक कपास खरीदकर ब्रिटेन भेजना।
(6) शहरी साहुकारों को अधिक अग्रिम राशि दिया जाना।
(7) कारण – साहुकार ग्रामीण ऋणदाताओं को राशि दे सकें।

(8) ग्रामीणों को ऋण आसानी से मिलना।
(9) दक्कन के इलाकों में रैयतों को अचानक असीमित ऋण उपलब्ध।
(10) कपास के उत्पादन में तेजी।
(11) कुछ धनी किसानों को लाभ।
(11) अधिकांश किसानों का कर्ज के बोझ से और अधिक दब जाना।

4. स्थायी बन्दोबस्त अथवा इस्तमरारी बंदोबस्त लार्ड कार्नवालिस द्वारा 1793 में बंगाल में लागू
(1) बंगाल के जमींदारों व ईस्ट इंडिया कम्पनी के मध्य कर वसूलने से सम्बंधित एक सहमति समझौता।
(2) जमींदारों को एक निश्चित राशि पर भूमि दी गई।
(3) जमींदार की मृत्यु के पश्चात उसके उत्तराधिकारी को भूमि का स्वामित्व प्राप्त।
(4) जमींदारों को तय की गई राशि को निश्चित समय सीमा के अन्दर कम्पनी को देना होता था।
(5) सूर्यास्त कानून के तहत यह राशि देय तिथि को सूर्यास्त से पहले जमा करनी पड़ती थी।
(6) जमा न किए जाने पर जमींदार की जमीन नीलाम।
(7) देय राशि की दरें निश्चित (स्थायी) व ऊँची जमींदार कम्पनी के समाहर्ता व किसान एक किरायेदार के रूप में।
(8) राजस्व राशि का 10/11 भाग कम्पनी का तथा 1/11 भाग जमींदार का।
(9) राजस्व की मांग निर्धारित किए जाने पर जमींदारों में सुरक्षा का भाव, ऐसी कम्पनी की सोच।
(10) संपदाओं में उत्तरोत्तर सुधार की अपेक्षा।

5. दक्कन में विद्रोह के फैलने से अंग्रेज सरकार चिंतित।
(1) बम्बई की सरकार पर विद्रोह के कारणों की छानबीन करने का दबाव।
(2) कारणों की छानबीन के लिए आयोग का गठन।
(3) आयोग द्वारा रिपोर्ट तैयार कर 1878 में ब्रिटिश पार्लियामेंट में पेश।
(4) रिपोर्ट को दक्कन दंगा रिपोर्ट कहा गया।
(5) आयोग द्वारा दंगा पीड़ित जिलों की जाँच पड़ताल।
(6) रैयत वर्ग, साहूकारों व चश्मदीद गवाहों के बयान दर्ज।

(7) अलग–अलग क्षेत्रों में राजस्व दरों, कीमतों और ब्याज के संदर्भ में आंकड़े इकट्ठे।

(8) जिला कलैक्टरों द्वार भेजी गई रिपोर्टों का संकलन।

(9) इन रिपोर्टों का अध्ययन आलोचनात्मक रूप से करने की आवश्यकता।

(10) रिपोर्ट सरकारी हैं और प्रशासन के नजरिए से लिखी गई हैं।

(11) ये रिपोर्ट सरकारी सरोकार और अर्थ प्रतिबिंबित करती हैं।

(12) उदाहरण – सरकार द्वारा जाँच – क्या राजस्व की मांग का स्तर विद्रोह का कारण।

निष्कर्ष – सरकारी मांग रैयत के विद्रोह का कारण नहीं। सारा दोष ऋणदाताओं या साहूकारों का।

(13) औपनिवेशिक सरकार की नकारात्मक सोच –

सरकारी रिपोर्ट एक बहुमूल्य स्त्रोत तथापि इसकी विश्वसनीयता की जाँच अन्य गैर–सरकारी स्त्रोतों के मिलान द्वारा किया जाना।

6. 1780 के दशक के आस–पास संथालों का बंगाल क्षेत्र में आगमन।

(1) जमींदारों द्वारा खेती के लिए नयी भूमि की आवश्यकता।

(2) भूमि तैयार करने में संथालों के श्रम का प्रयोग।

(3) ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा संथालों को महालों में बसने का निमंत्रण।

(4) ब्रिटिश पहाड़ियों को नियंत्रित करने में असफल।

(5) पहाड़ियों का हल को अपनाने से इंकार।

(6) उपरोक्त कारणों से ब्रिटिश का झुकाव संथालों की ओर।

(7) ब्रिटिश की नजर में संथाल आदर्श वाशिंदे क्योंकि –

(8) संथालों को जंगल साफ करने से परहेज नहीं।

(9) संथाल का भूमि को पूरी ताकत लगाकर जोतना।

(10) अंग्रेजों द्वारा संथालों को राजमहल की तलहटी में बसाना।

(11) 1832 तक जमीन का काफी बड़ा इलाका दामिन–इ–कोह के रूप में सीमांकित।

(12) दामिन–इ–कोह संथालों की भूमि घोषित।

(13) संथाल स्थायी किसान के रूप में स्थापित।

(14) अंग्रेजों के भू–राजस्व में संथालों का योगदान।

विषय–10

अनुच्छेद आधारित प्रश्न (5 अंक वाले)

निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके अंत में पूछे गए प्रश्नो के उत्तर सावधानी से दीजिए ।

1. ### वनों की कटाई और स्थायी कृषि के बारे में

निचली राजमहल की पहाड़ियों में एक गाँव से गुजरते हुए, बुकानन ने लिखाः इस प्रदेश का दृश्य बहुत ही बढ़िया है, यहां की खेती विशेष रूप से घुमावदार संकरी घाटियों में धान की फसल, बिखरे हुए पेड़ों के साथ साफ की गई जमीन, और चट्टानी पहाड़ियां सभी अपने आप में पूर्ण हैं, कमी है तो बस इस क्षेत्र में कुछ प्रगति की और विस्तृत तथा उन्नत खेती की, जिनके लिए यह प्रदेश अत्यंत संवेदनशील है। यहां लकड़ी की जगह टसर और लाख के लिए आवश्यकतानुसार बड़े–बड़े बागान लगाए जा सकते हैं, बाकी जंगल को भी साफ किया जा सकता है, और महुआ के पेड़ लगाए जा सकते हैं।

1. बुकानन कौन थे ? 1
2. बुकानन द्वारा भूमि निरीक्षण करने से अंग्रेजों के किन स्वार्थों की पूर्ति हुई ? 2
3. बुकानन ने राजमहल की पहाड़ियों को अपने आप में पूर्ण क्यों कहा ? 2

अथवा

1. बुकानन के अनुसार यह पहाड़ी प्रदेश कैसा था? 1
2. बुकानन की सोच और विकास की प्राथमिकता किस प्रकार स्थानीय लोगो के विपरीत थी? 2
3. राजमहल क्षेत्र के स्थानीय लोग बुकानन के उत्पादन संबंधी विचार को किस प्रकार देखते है। 2

16. ### समाचार पत्र में छपी रिपोर्ट

'रैयत और साहूकार' शीर्षक नामक निम्नलिखित रिपोर्ट 6 जून 1876 के 'नेटिव ओपीनियन' नामक समाचार पत्र में छपी और उसे मुंबइ के नेटिव न्यूज़पेपर्स की रिपोर्ट में यथावत उद्धृत किया गया (हिंदी अनुवाद प्रस्तुत है) : ''वे (रैयत) सर्वप्रथम अपने गाँवों की सीमाओं पर यह देखने के लिए जासूसी करते हैं। कि क्या कोई सरकारी अधिकारी आ रहा है और अपराधियों को समय रहते उनके आने की सूचना दे देते हैं। फिर वे एक झुंड बनाकर अपने ऋणदाताओं के घर जाते हैं और उनसे ऋणपत्र और अन्य दस्तावेज़ माँगते हैं और इनकार करने पर ऋणदाताओं पर हमला करके छीन लेते हैं। यदि ऐसे किसी घटना के समय कोई सरकारी अधिकारी उन गाँवों की ओर आता हुआ दिखाई दे जाता है तो गुप्तचर अपराधियों को इसकी खबर पहुँचा देते हैं और अपराधी समय रहते ही तितर–बितर हो जाते हैं।''

1. ''रैयत'' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? 1
2. रैयतों द्वारा अपने आप को बचाने के लिए किए गए उपायों की व्याख्या कीजिए। 2
3. रैयतों ने ऋणदाताओं को लूटने का सहारा क्यों लिया ? स्पष्ट कीजिए। 2

विषय–11

विद्रोही और राज

1857 का आंदोलन और उसके व्याख्यान

स्मरणीय बिन्दु :–

1. 10 मई, 1857 को मेरठ छावनी से विद्रोह की शुरूआत हुई। 11 मई, 1857 को विद्रोहियों ने मुगल बादशाह बहादुरशाह 'जफर' को अपना नेता चुना और विद्रोह ने वैधता हासिल की। सिपाहियों ने किसी न किसी विशेष संकेत के साथ अपनी कार्रवाई शुरू की, कही तोप का गोला दागा तो कहीं बिगुल बजाकर विद्रोह का संकेत दिया।

2. विद्रोह का तात्कालिक कारण था–चर्बी लगे कारतूसों का प्रयोग।

3. 1857 में विद्रोहियों ने आपस में एकता स्थापित करने के लिए (a) घोषणाओं में जाति और धर्म का भेदभाव नहीं किया गया (b) नवाबों और मुस्लिम शासकों ने हिन्दुओं का भी ख्याल रखा (c) विद्रोह को हिन्दू और मुसलमान दोनों के लाभ–हानि से जोड़ा गया।

4. अवध में विभिन्न प्रकार की पीड़ाओं ने राजकुमार, ताल्लुकदारों किसानों और सिपाहियों को एक–दूसरे से जोड़ दिया था। वे सभी फिरंगी राज के आगमन को विभिन्न तर्कों में एक दुनिया की समाप्ति के रूप में देखने लगे।

5. अंग्रेजों ने ताल्लुकदारों की जागीरें और किले जब्त कर लिए सेनाएँ भंग कर दी, दुर्ग ध्वस्त कर दिए गए। स्थायी बंदोबस्त लागू करने के बाद उनकी हैसियत व सत्ता दोनों पर चोट पहुँची, क्योंकि वे अब जमीनों के मालिक नहीं बिचौलिए रह गए। किसानों की नजर में ताल्लुकदार शोषक तो थे किन्तु बुरे वक्त में दयालु अभिभावक की भूमिका अदा करते थे।

6. ताल्लुकदारों की सत्ता छिनने का नतीजा यह हुआ है कि एक पूरी सामाजिक व्यवस्था भंग हो गई। निष्ठा और संरक्षण के जिन बंधनों से किसान ताल्लुकदारों के साथ बंधे हुए थे वे अस्त–व्यस्त हो गए। अंग्रेजों से पहले ताल्लुकदार ही जनता का उत्पीड़न करते थे किन्तु मुसीबत में साथ भी देते थे। अंग्रेजों के राज में किसान मनमाने राजस्व आकलन और गैर लचीली राजस्व व्यवस्था के तहत पिसने लगे, और अब इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि नए साहब मुसीबत में साथ दें।

7. 1801 में अवध में सहायक संधि थोप दी गई तथा 1856 में अवध का अंग्रेजी राज्य में अधिग्रहण कर लिया गया तथा वहाँ के शासक नवाब वाजिद अली शाह को कलकत्ता निष्कासित कर दिया गया।

8. विद्रोही उद्घोषणाएँ इस व्यापक डर को व्यक्त करती थी कि अंग्रेज हिंदुओं और मुसलमानों की जाति और धर्म को नष्ट करने पर तुले हैं और वे लोगों को ईसाई बनाना चाहते हैं। इसी डर की वजह से लोग चल रही अफवाहों पर भरोसा करने लगे।

9. अंग्रेजों ने उपद्रव शांत करने के लिए और फौजियों की आसानी के लिए कई कानून पारित कर दिए थे। 1 मई और जून, 1857 में समूचे उत्तर भारत में मार्शल लॉ लागू कर दिए गए तथा विद्रोह में शामिल होने के शक पर भी हिंदुस्तानियों पर मुकदमा चलाने व सजा देने के अधिकार दे दिए गए।

10. अंग्रेजों और भारतीयों द्वारा तैयार की गई तस्वीरें सैनिक विद्रोह का एक महत्वपूर्ण रिकार्ड रहा है। इस विद्रोह के बारे में कई चित्र, पेंसिल से बने रेखांकन, उत्कीर्ण चित्र, पोस्टर, कार्टून और बाजार प्रिंट पर उपलब्ध है।

11. 1857 के विद्रोह को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में याद किया जाता था क्योंकि इसमें देश के हर तबके के लोगों ने साम्राज्यवादी शासन के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी।

12. 1857 के विद्रोह का प्रारंभ मंगल पांडे के बलिदान से हुआ जो कि बैरकपुर (बंगाल) में 34वीं रेजीमेंट के सिपाही थे।

13. लार्ड विलियम बेंटिक के नेतृत्व में ब्रिटिश सरकार पश्चिमी शिक्षा के माध्यम से भारतीय समाज मे फैली कुरीतियों को दूर करने का प्रयास कर रही थी।

14. लार्ड बेंटिक के प्रयासों से 1829 में सती प्रथा निषेध कानून पारित किया गया।

15. कानपुर मे सिपाहियों और शहर के लोगों ने पेशवा बाजीराव द्वितीय के उत्तराधिकारी नाना साहब को विद्रोह का नेतृत्व करने के लिए विवश कर दिया।

16. हिन्दु–मुस्लिमों के बीच खाई पैदा करने की कोशिशों के बावजूद, हिन्दु–मुसलमान पर कोई फर्क नही पडा।

17. चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग से इंकार करने वाले भारतीय सैनिकों का संबध थर्ड लाइट केवलरी रेजिमेंट से था।

18. सहारनपुर, मेरठ, दिल्ली, मथुरा, आगरा, लखनऊ, कानपुर, झांसी, ग्वालियर, इलाहाबाद बरेली, आरा, बनारस और कोलकता विद्रोह के प्रमुख केन्द्र थे।

19. सिपाहियों और ग्रामीण जगत के बीच संबंधों से जनविद्रोह के स्वरूप पर गहरा प्रभाव पड़ा।

20. लोगों में इस बात का रोष था कि ब्रिटिश भू–राजस्व व्यवस्था ने सभी बड़े–छोटे भू–स्वामियों को जमीन से बेदखल कर दिया था, और विदेशी व्यापार ने दस्तकारों और बुनकरों को बरबाद कर दिया।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक वाले)

प्र. 1 लखनऊ में विद्रोह का नेतृत्व किसने किया?

प्र. 2 विद्रोह के दौरान छोटा नागपुर इलाके में कोल आदिवासियों का नेतृत्व किसने किया?

प्र. 3 'डंका शाह' किसे कहा जाता था?

प्र. 4 उत्तर प्रदेश के बरेली में अग्रेंजों के खिलाफ किसने विद्रोह किया?

प्र. 5 हिल स्टेशनों में सिपाहियों को इलाज कराने के लिए क्यों भेजा गया?

प्र. 6 अवध पर सहायक सन्धि कब थोपी गई?

प्र. 7 देशी रियासतों में नियुक्त गर्वनर जनरल के प्रतिनिधि क्या कहे जाते थे?

प्र. 8 किस गर्वनर जनरल ने सहायक सन्धि की शुरूआत की थी?

प्र. 9 अंग्रेजों ने समाज के किस वर्ग की जागीरें और किले जब्त कर लिए थे?

प्र. 10 भारत में विद्रोह की शुरूआत किस रेजिमेंट से हुई?

प्र. 11 1857 का विद्रोह किस शहर से प्रारंभ हुआ?

क) मेरठ

ख) दिल्ली

ग) कानपुर

घ) झांसी

प्र. 12 विद्रोही सैनिकों का जत्था दिल्ली के लालकिले पर कब पहुँचा?

क) 10 मई को

ख) 11 मई को

ग) 12 मई को

घ) 15 मई को

प्र. 13 दिल्ली पहुंचकर विद्रोहियों ने किसे अपना नेता चुना?

क) बहादुर शाह जफर

ख) पेशवा बाजीराव द्वितीय

ग) नवाब शौकत अली

घ) रानी लक्ष्मीबाई

प्र. 14 अवध के कौन से नवाब को अंग्रेजों ने कुशासन का आरोप लगाकर अपदस्थ कर दिया था?

क) शुजाउद्दौला

ख) सिराजुद्दौला

ग) मीर अली

घ) नवाब वाजिद अली शाह

प्र. 15 1857 के विद्रोह के समय उ.प्र. में बड़ौत परगना के गांव वालों को किसने संगठित किया?

क) शाहमल

ख) गोनू

ग) कुंवर सिंह

घ) नाना साहब

प्र. 16 1857 की क्रांति का तात्कालिक कारण क्या था?

क) फिरंगी सैनिकों को मारना

ख) चर्बी वाले कारतूस

ग) आटे में हड्डियों का चूरा

घ) कम वेतन

प्र. 17 1857 के विद्रोह का सबसे व्यापक रूप कहाँ देखने को मिला?

क) अवध में

ख) कर्नाटक में

ग) बंगाल में

घ) दिल्ली में

प्र. 18 राज्य हड़पने की नीति कौन से गर्वनर जनरल ने अपनाई?

क) लार्ड क्लाइव

ख) लॉर्ड बैंटिक

ग) लॉर्ड डलहौजी

घ) वारेन हेस्टिंग्स

प्र. 19 किस प्रांत को ''बंगाल आर्मी की पौधशाला'' कहा जाता था?

क) अवध को

ख) महाराष्ट्र को

ग) हैदराबाद को

घ) दिल्ली को

प्र. 20 अंग्रेजों ने विद्रोह को दबाकर दिल्ली पर पुनः नियत्रंण कब स्थापित किया?

क) जून 1857 में

ख) अगस्त 1857 में

ग) सितंबर 1857 में

घ) अक्टूबर 1857 में

प्रश्न 21. निम्नलिखत चित्र को पहचान कर लिखिए।

उद्धरण आधारित प्रश्न (3 अंक वाले)

1. निम्नलिखित उद्धरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ताल्लुकदारों की सोच

ताल्लुकदारों के रवैये को रायबरेली के पास स्थित कालाकंकर के राजा हनवन्त सिंह ने सबसे अच्छी तरह व्यक्त किया था। विद्रोह के दौरान हनवन्त सिंह ने एक अंग्रेज अफ़सर को पनाह दी और उसे सुरक्षित स्थान तक पहुँचाया था। उस अफ़सर से आख़िरी मुलाकात में हनवन्त सिंह ने कहा कि – साहिब, आपके मुल्क के लोग हमारे देश में आए और उन्होंने हमारे राजाओं को खदेड़ दिया। आप अफ़सरों को भेज कर जिले जिले में जागीरों के मालिकाने की जाँच करवाते हैं। एक ही झटके में आपने मेरे पुरखों की ज़मीन मुझसे छीन ली। मैं चुप रहा। फिर अचानक आपका बुरा वक़्त शुरू हो गया। यहाँ के लोग आपके ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए। तब आप मेरे पास आए, जिसे आपने बर्बाद किया था। मैंने आप की जान बचाई है। लेकिन अब, – अब मैं अपने सिपाहियों को लेकर लखनऊ जा रहा हूँ ताकि आपको देश से खदेड़ सकूँ।

(A) आपके मुल्क के लोग से राजा हनवंत सिंह का आशय किस देश के लोगों से था?
(क) अंग्रेज (ख) फ्रांस
(ग) डच (घ) पुर्तगाल

(B) वाक्य को ठीक करके लिखें।
"राजा हनवंत सिंह ने एक विद्रोही को पनाह दी और उसे सुरक्षित स्थान तक पहुँचाया।"

(C) प्रस्तुत घटना का संबंध है –
(क) 1857 से (ख) 1947 से
(ग) 1920 से (घ) 1930 से

(D) राजा हनवंत सिंह के अनुसार अचानक से किसका बुरा वक्त शुरू हो गया?
(क) अंग्रेजों का (ख) विद्रोहियों का
(ग) मुगलों का (घ) सभी

2. निम्नलिखित चित्र को पहचानिए और किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(A) चित्र में हाथ में तलवा और ढाल लिए स्त्री किनसे बदला ले रही है?

(क) भारत के विद्रोहियों से (ख) दासों से

(ग) अंग्रेजों से (घ) फ्रांस की जनता से

(B) **दिये गये उपयुक्त शब्दों/शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करो ।**

''चित्र द्वारा ———————— भावना को प्रज्जवलित करने प्रयास है''

(क) प्रेम की (ख) प्रतिशोध की

(ग) संयम की (घ) सभी की

(C) प्रस्तुत तस्वीर में ब्रिटिश जनता के मन में जो विद्रोह विरोधी छवि बनायी गयी, क्या भारतीय राष्ट्रवादियों के मन में भी वही छवि थी? तर्कों के साथ उत्तर दीजिए।

(D) विद्रोही किसकी सत्ता को चुनौती देना चाहते थे?

(क) नवाबों की सत्ता को (ख) ब्रिटिश सत्ता

(ग) मुगल सत्ता (घ) उपरोक्त सभी

लघु उत्तरीय प्रश्न (3अंकों वाले)

1. 1857 के विद्रोह के प्रमुख कारण क्या थे?
2. 1857 के विद्रोह की असफलता के प्रमुख कारण लिखिए।
3. अवध पर अधिकार करने में अंग्रेजों की दिलचस्पी का मुख्य कारण क्या था?
4. सहायक संधि से क्या अभिप्राय हैं?
5. अवध के अधिग्रहण से ताल्लुकदारों की स्थिति में क्या अंतर आया?
6. ताल्लुकदारों की सत्ता समाप्त होने से एक पूरी सामाजिक व्यवस्था कैसे भंग हो गई?
7. किन कोशिशों से पता चलता है कि विद्रोही नेता 18वीं सदी की पूर्व–ब्रिटिश व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे?
8. विद्रोहियों के बीच एकता स्थापित करने के लिए क्या तरीके अपनाए गए?
9. उन साक्ष्यों के बारें में चर्चा कीजिए जिनसे पता चलता है कि विद्रोही योजनाबद्ध और संगठित ढंग से काम कर रहे थे?
10. अंग्रेजों ने विद्रोह को कुचलने के लिए क्या कदम उठाए?
11. विद्रोह से पूर्व भारतीय सैनिकों की अंग्रेजी शासन के विरूद्ध क्या शिकायतें थी?
12. ''1857 में विद्रोहियों द्वारा जारी की गई घोषणाओं में जाति और धर्म का भेद किए बिना समाज के सभी वर्गों का आह्वान किया जाता था।'' विवेचना कीजिए।
13. 1857 का विद्रोह मात्र एक सैनिक विद्रोह न होकर किसानों, जमींदारों, आदिवासियों और शासकों का विद्रोह था स्पष्ट कीजिए।
14. 1857 के विद्रोह में अफवाहों एवं भविष्यवाणियों का कितना योगदान था? स्पष्ट कीजिए।
15. लोग अफवाहों पर क्यों विश्वास कर रहे थे? तीन बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट कीजिए।

अथवा

अंग्रेजों की उन नीतियों का वर्णन कीजिए जिसके चलते लोग अफवाह पर भरोसा करने लगे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंकों वाले)

1. 1857 का विद्रोह मात्र एक सैनिक विद्रोह था या प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, तर्क संगत उत्तर दीजिए।
2. विद्रोही क्या चाहते थे? विभिन्न सामाजिक समूहों की दृष्टि में कितना फर्क था? स्पष्ट कीजिए।
3. 1857 के विद्रोह के बारे में चित्रों से क्या पता चलता है? वर्णन कीजिए।

4. अवध मे विद्रोह इतना व्यापक क्यों था? किसान, ताल्लुकदार और जमींदार उसमें क्यों शामिल हुए? व्याख्या कीजिए।
5. 1857 के घटनाक्रम को निर्धारित करने में धार्मिक विश्वासों की क्या भूमिका रही? स्पष्ट कीजिए।
6. कला और साहित्य ने 1857 की स्मृति को जीवित करने में क्या योगदान दिया?
7. 1857 के विद्रोह को कुचलना अंग्रेजों के लिए बहुत आसान साबित नहीं हुआ उपयुक्त उदाहरणों से इस कथन की पुष्टि कीजिए।
8. 1857 के दौरान ब्रिटिश सरकार ने अवध के ताल्लुकदारों की सत्ता किस प्रकार छीनी? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1. 1857 का विद्रोह शताब्दियों से शोषित भारत के लोगों की स्वतंत्रता प्राप्ति की तीव्र उत्कंठा का प्रतीक।
   (1) विद्रोह एक सुनियोजित व सशस्त्र कार्यक्रम।
   (2) मेरठ से उठी सैनिक क्रान्ति ने दो दिन के भीतर दिल्ली को भी अपनी चपेट में लिया।
   (3) विद्रोह में उत्तर भारत के ग्रामीण और शहरी जनता शामिल।
   (4) समाज का प्रत्येक वर्ग जमींदार, राजा, किसान सभी शामिल।
   (5) रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहेब, कुंवर सिंह, बिराजिस कद्र, शाहमल, मौलवी अहमदुल्लाह शाह तथा आम पुरुष व महिलाएँ विद्रोह में शामिल।
   (6) स्वतंत्रता की भावना से उद्वेलित हिंदु व मुसलमान दोनों शामिल।
   (7) अतः इसे सिर्फ सैनिक विद्रोह नहीं कह सकते।
   (8) विद्रोह का कमजोर पक्ष –
   – सभी विद्रोहियों का विद्रोह में शामिल होने के भिन्न–भिन्न कारण।
   – सिपाहियों को धर्मान्तरण के डर, लक्ष्मीबाई की झांसी को हड़प नीति तथा अवध को अधिग्रहण नीति के कारण विद्रोह करना पड़ा।
   – मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर भी सिपाहियों के दबाव में विद्रोह के नेता।
   – विद्रोह का भारत के उत्तरी भाग तक सीमित रहना।
   (9) विद्रोह का व्यापक स्वरूप।
   (10) अंग्रेजी हुकूमत का हिल जाना।

(11) विद्रोह अपनी कमियों के बावजूद एक स्वतंत्रता संग्राम।

2. अंग्रेजों की नजर में विद्रोही अहसानफरामोश व बर्बर लोग।
   (1) विद्रोही की आवाज को दबाना आवश्यक।
   (2) भारतीयों ने विद्रोह के दौरान अपनी आवाज दर्ज की।
   (3) ज्यादातर सिपाही व आम लोग अनपढ़।
   (4) विद्रोही जनता के विचारों को समझने के लिए कुछ घोषणाएँ व इश्तहार एकमात्र सहारा।
   (5) विद्रोहियों के नजरिए को समझने के लिए पर्याप्त साक्ष्य नहीं।
   (6) विद्रोहियों द्वारा जारी की गई घोषणाओं में जाति और धर्म को भेद किए बिना सभी तबकों का आवाहन।
   (7) मुस्लिम राजकुमारों व नवाबों द्वारा की गई घोषणाओं में हिन्दुओं की भावनाओं का ख्याल।
   (8) इश्तहारों में अंग्रेजों से पहले के हिंदू–मुस्लिम अतीत की ओर संकेत।
   (9) युद्ध में हिन्दू और मुस्लिम दोनों का बराबर नुकसान।
   (10) घोषणाओं में ब्रिटिशराज से सम्बंध हर प्रतीक खारिज़।
   (11) अंग्रेजों को हटाकर एक वैकल्पिक सत्ता की तलाश।
   (12) विद्रोही क्या चाहते थे इसके बारे में आज़मगढ़ घोषणा एक मुख्य स्त्रोत।
   (13) जमींदार वर्ग अपनी जमींदारी व अपने ढंग से शासन करने का अधिकार चाहता था।
   (14) व्यापारी वर्ग पर से अनुचित दबाव खत्म।
   (15) उन्हें देश–विदेश में व्यापार करने की छूट।
   (16) सरकारी कर्मचारियों को तनख्वाह में वृद्धि व ऊँचे ओहदे।
   (17) देसी कारीगरों की राजाओं और अमीरों की सेवा में तैनाती।
   (18) राजाओं को अपनी रियासतें वापिस मिलने के आसार।
   (19) समाज का हर पीड़ित वर्ग अपना सम्मान और स्थान वापस पाने को इच्छुक।

3. अंग्रेजों और भारतीयों द्वारा तैयार किए गए चित्र व्रिदोह का एक महत्त्वपूर्ण रिकार्ड।
   (1) विद्रोह से सम्बंध चित्र, पेंसिल से बने रेखांकन, उत्कीर्ण चित्र, पोस्टर, कार्टुन और बाजार प्रिंट उपलब्ध।
   (2) अंग्रेजों द्वारा बनाई गई तस्वीरों का विभिन्न प्रकार की भावनाओं और प्रतिक्रियाएँ का पैदा करना।

(3) अंग्रेजों को बचाने और विद्रोहियों को कुचलने वाले अंग्रेज नायकों का गुणगान।
(4) 1859 में टॉमस जोन्स बार्कर, द्वारा बनाया गया चित्र 'रिलीफ ऑफ लखनऊ'
(5) अखबारों में छपी खबरों का जनता की कल्पना और मनोदशा पर भारी असर।
(6) औरतों और बच्चों के साथ हुई हिंसा से ब्रिटेन का जनता में प्रतिशोध की मांग।
(7) जोज़ेफ नोएल पेटेन का चित्र ''इन मेमोरियम''।
(8) तमाम चित्रों में विद्रोहियों का दानवों के रूप में चित्रण।
(9) असहाय औरतों को वीरता के साथ विद्रोहियों का मुकाबला करते हुए चित्रण।
(10) कानपुर में सिपाहियों से अपनी रक्षा करती मिस व्हीलर का चित्र एक गहरे धार्मिक विचार को प्रस्तुत करता है।
(11) ईसायत की रक्षा का संघर्ष।
(12) विद्रोह के हिंसक दमन और प्रतिशोध को आवश्यक और न्यायपूर्ण ठहराया जाना।
(13) ब्रिटिश प्रेस में अनेक चित्रा और कार्टून विद्रोह के हिंसक दमन को मंजूरे प्रदान करते हुए।

4. अवध का अधिग्रहण सहायक संधि के तहत।
(1) अवध के नवाब वाजिद अली शाह को अपदस्थ कर कलकत्ता निर्वासित।
(2) अंग्रेजों का मानना कि वाजिद अली शाह एक अलोकप्रिय शासक।
(3) जनता का उन्हें प्यार करना।
(4) नवाब के निर्वासित होने से एक पूरी दुनिया का खात्मा।
(5) पूरे राजतंत्र का बिखर जाना।
(6) इन कारणों से जनता में रोष।
(7) अवध में शिकायतों को एक श्रृंखला राजकुमार, ताल्लुकदार, किसान और सिपाही से जुड़ी।
(8) ब्रिटिश भू–राजस्व नीति से ताल्लुकदारों की हैसियत व सत्ता पर चोट।
(9) ताल्लुकदारों का उनकी जमीनों पर से बेदखल किया जाना।
(10) ताल्लुकदारों की सत्ता छीनने से एक पूरी सामाजिक व्यवस्था का अंत।
(11) निष्ठा और संरक्षण के किसान–ताल्लुकदारों के संबंध खत्म।
(12) किसानों का अंग्रेजी हुकुमत पर अविश्वास।
(13) किसान मनमाने राजस्व का आंकलन और अंग्रेजों की गैर–लचीली व्यवस्था से परेशान।

(14) किसानों का अंसतोष फौजी बैरकों तक पहुंचा।

(15) फौज में बहुत सारे किसान अवध के गाँवों में भर्ती।

(16) दशकों से सिपाही कम वेतन व छुट्टी न मिलने से अंसतुष्ट

(17) सिपाहियों और ग्रामीण जगत के बीच मौजूद इन संबंधों का विद्रोह पर असर।

(18) किसान शहरों में पहुँचकर सिपाहियों और आम लोगों के साथ जुड़कर विद्रोह में शामिल।

5. तात्कालिक कारण–

(1) सैनिकों को गाय और सुअर की चर्बी वाले कारतून देना।

(2) मुस्लिम और हिन्दू दोनों की धार्मिक भावनाएँ आहत।

(3) बाजार के आटे में गाय और सुअर के हड्डियों के चूरे की मिलावट की अफवाह।

(4) सिपाहियों में अफवाह से धर्म भ्रष्ट होने का भय।

(5) कम्पनी द्वारा सुधार।

(6) अंग्रेजों द्वारा सती प्रथा को खत्म करने (1829) और हिन्दू विधवा विवाह को वैधता देने के लिए कानून बनाना।

(7) हिन्दूओं की धार्मिक आस्था व सामाजिक व्यवस्था पर इन कानूनों से प्रहार।

(8) कट्टर हिन्दूओं में इससे रोष।

(9) ईसाई मिशनरियों द्वारा भारतवासियों को प्रलोभन देकर धर्मान्तरण।

(10) जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिक के नेतृत्व में पश्चिमी शिक्षा, पश्चिमी विचारों का प्रचार।

(11) पश्चिमी संस्थानों के जरिए भारतीय समाज को 'सुधारने' पर बल।

(12) अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय व विश्वविद्यालयों की स्थापना।

6. विद्रोह के नेताओं को ऐसे नायकों की छवि में दिखाना जो देश को रणस्थल की ओर ले जा रहे हैं।

(1) विद्रोहियों का दमनकारी साम्राज्यवादी शासन के खिलाफ उत्तेजित मुद्रा में चित्रण।

(2) एक हाथ में घोड़े की राक्ष और दूसरे हाथ में तलवार थामे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का चित्रण।

(3) रानी के शौर्य का गौरवगान करती हुई कविताएँ।

(4) लक्ष्मीबाई का एक मर्दाना शख्सियत के रूप में चित्रण।

(5) लोक छवियों में रानी लक्ष्मीबाई को फौजी पोशाक में घोड़े पर सवार दिखाना।
(6) ऐसा चित्रण अन्याय और विदेशी शासन के दृढ़ प्रतिरोध का प्रतीक।
(7) तस्वीरें तस्वीर बनाने वाले चित्रकार की सोच व मनोदशा का आईना।
(8) चित्रों के माध्यम से जनमा की सोच और अहसासों का आंकलन।
(9) जनता चित्रों की तारीफ या आलोचना करती थी।
(10) जनता द्वारा चित्र की नकलों में घरों में प्रेरणास्त्रोत के रूप में सजाना।
(11) चित्रों में लोगों की भावनाओं को शक्ल दी।
(12) भारतीय राष्ट्रवादी चित्रों द्वारा भारतीय राष्ट्रवादी कल्पना का निर्धारण।

7. उत्तर भारत में फौजियों की आसानी के लिए नए कानून पारित।
(1) 1857 की मई और जून में समचे उत्तर भारत में मार्शल लॉ लागू।
(2) फौजी अफसरों को और आम अंग्रेजों को हिन्दुस्तानियों पर मुकदमा चलाने का अधिकार।
(3) विद्रोह में शामिल होने का शक पर मुकदमा।
(4) कानून और मुकदमें की सामान्य प्रक्रिया रद्द।
(5) विद्रोह की केवल एक ही सजा सजा–ए–मौत।
(6) ब्रिटेन से नई टुकड़ियाँ मंगाना।
(7) दिल्ली पर दोतरफा हमला।
(8) एक तरफ कलकत्ते से और दूसरी तरफ पंजाब से दिल्ली की तरफ कूच।
(9) दिल्ली को कब्जा करने की मुहिम जून 1857 में शुरू।
(10) सितम्बर 1857 पर दिल्ली पर कब्जा संभव।
(11) गंगा के मैदान में भी अंग्रेजों की बढ़त का सिलसिला धीमा।
(12) अंग्रेज टुकड़ियों को हर इलाका गाँव –दर–गाँव जीतना पड़ा क्योंकि
(13) आम देहाती जनता और आसपास के लोग विद्रोह में शामिल।
(14) फॉरसिय नामक अंग्रेज अफसर का अनुमान।
(15) अवध की कम से कम तीन–चौथाई व्यस्क पुरुष आबादी विद्रोह में शामिल।
(16) अवध पर एक लंबी लड़ाई के बाद मार्च 1858 में अंग्रेजों का नियंत्रण।
(17) अंग्रेजों को अहसास कि विद्रोह एक सैनिक विद्रोह नहीं।
(18) एक ऐसे आन्दोलन से उनका सामना जिसे बेहिसाब जन समर्थन।
(19) अंग्रेज सैनिकों द्वारा अन्य रूप के हथियारों का प्रयोग।

(20) उत्तर प्रदेश के भू–स्वामियों और काश्तकारों के बीच फूट डालना।
(21) जमींदारों को उनकी जागीरें लौटा देने का आश्वासन।
(22) विद्रोह में शामिल जमींदारों को उनकी जमीन से बेदखल।
(23) वफादार जमींदारों को ईनाम।
(24) 10 मई 1857 में शुरू हुआ विद्रोह नवम्बर 1858 में जाकर खत्म हुआ।
(25) अंग्रेज सरकार को विद्रोह दमन करने में भारी नुकसान उठाना पड़ा।

8. अंग्रेजों द्वारा सहायक संधि के तहत अवध का अधिग्रहण।
(1) अवध के नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से हटा कलकत्ता निर्वसन।
(2) अंग्रेजों द्वारा नवाब को अपनी जनता में अलोकप्रिय बताकर उनपर राज अच्छी तरह न चलाने का आरोप।
(3) अवध के ताल्लुकदारों की सत्ता पर भी प्रहार।
(4) समूचें देहात में ताल्लुकदारों की जागीरें और किले।
(5) इलाकों की जमीन और सत्ता पर जमींदारों का नियंत्रण।
(6) ताल्लुकदारों के पास अपने हथियारबंद सिपाही।
(7) नवाब की संप्रभुता स्वीकार का और राजस्व चुकाते रहने पर स्वायत्तता का होना।
(8) अंग्रेज ताल्लुकदारों की सत्ता को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं।
(9) अधिग्रहरण के फौरन बाद अंग्रेजों द्वारा ताल्लुकदारों की सेनाएँ भंग।
(10) 1856 में एकमुश्त बंदोबस्त के नाम से ब्रिटिश भू–राजस्व व्यवस्था लागू।
(11) बंदोबस्त के अनुसार ताल्लुकदार सिर्फ बिचौलिया।
(12) जमीन पर उनका मालिकाना नहीं।
(13) बल और धोखाधड़ी के जरिए इनका प्रभुत्व।
(14) एकमुश्त बंदोबस्त के तहत ताल्लुकदार जमीनों से बेदखल।
(15) दक्षिण अवध के ताल्लुकदारों को सबसे बुरी मार।
(16) अंग्रेजों के आने से पहले का प्रतिशत गाँव ताल्लुकदारों के पास।
(17) एकमुश्त बंदोबस्त के बाद संख्या घटकर 38 प्रतिशत।
(18) ताल्लुकदारों की सत्ता छीनने से एक पूरी सामाजिक व्यवस्था भंग।

विषय–11

स्त्रोत आधारित प्रश्न (5 अंको वाले)

1. नवाब साहब जा चुके हैं

नवाब के निष्कासन से पैदा हुए दुःख और अपमान के इस व्यापक अहसास को उस समय के बहुत सारे प्रेक्षकों ने दर्ज किया है। एक ने लिखा थाः ''देह से जान जा चुकी थी। शहर की काया बेजान थी... । कोई सड़क कोई बाजार और घर ऐसा न था जहां से जान–ए–आलम से बिछुडने पर विलाप का शोर न गूँज रहा हो।'' एक लोक गीत में इस बात पर शोक व्यक्त किया गया कि ''अंग्रेज बहादूर आइन, मुल्क लई लीन्हो।''

एक और गीत में ऐसे शासक की दुर्दशा पर विलाप किया जा रहा है

जिसे मज़बूरन अपनी मातृभूमि छोड़नी पड़ीः

अभिजात और किसान, सब रो रहे थे।

हाय! जान–ए–आलम देस से विदा लेकर परदेश चले गए हैं।

1. ''देह से जान जा चुकी थी। शहर की काया बेजान थी.... ।'' प्रस्तुत पंक्तियों में किस शहर का वर्णन है 1
2. डलहौजी ने किस नीति के तहत प्रस्तुत शहर का अधिग्रहण किया ? 2
3. शासक के शहर से निष्कासन के बाद शहर के लोग उसी विदाई पर इतने दुःखी क्यों थे ? 2

INDIA POLITICAL AND ADJACENT COUNTRIES
भारत राजनैतिक और पड़ोसी देश
विद्रोही और राज
(1857 में अंग्रेज़ों के अधीन क्षेत्र)
पंजाब
अवध
लखनऊ
सिंध
इलाहाबाद
बिहार
पटना
बनारस
बंगाल
कलकत्ता
सूरत
बम्बई
उड़ीसा
मसूलीपट्टनम
मद्रास
फोर्ट सेंट डेविड
Tropic of Cancer
Kms. 0 230 460 Kms.
1. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate baseline.
2. The State boundaries between Uttar Pradesh & Uttarakhand, Bihar & Jharkhand , Madhya Pradesh & Chhattisgarh have not been verified by the Governments concerned.
3. The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act. 1971," but have yet to be verified.
4. The External boundaries and coastlines of India shown on this map agree with the Record / Master copy certified by the Survey of India, Dehra Dun Uttarakhand. (Vide their letter No. T.B. 410/62-A-3/213 Dated 1-10-2019.)
5. The administrative Headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh.
6. The administrative Headquarters of Telangana and Andhra Pradesh are at Hyderabad.
© Government of India Copyright, 2019.
Publishers :-
INDIAN BOOK DEPOT (MAP HOUSE)®
2937, Bahadurgarh Road,Delhi-110006.
E-mail: info@ibdmaphouse.com

INDIA POLITICAL AND ADJACENT COUNTRIES
भारत राजनैतिक और पड़ोसी देश
विद्रोही और राज
(1857 के विद्रोह के प्रमुख केंद्र)
मेरठ
दिल्ली
कलकत्ता
आगरा
कानपुर
झांसी
जबलपुर
Tropic of Cancer
© Government of India Copyright, 2019.
INDIAN BOOK DEPOT (MAP HOUSE)

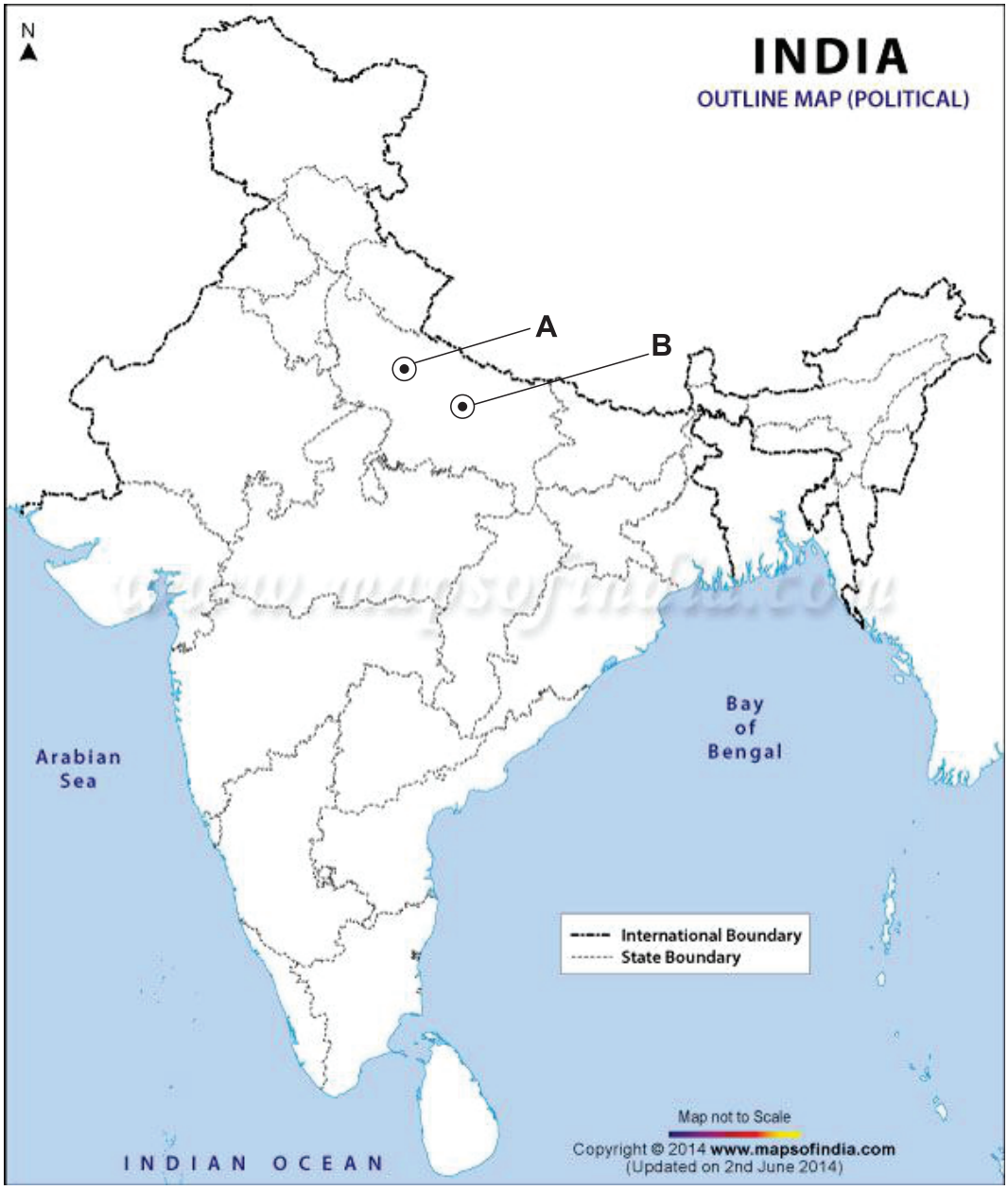

प्रश्न : (I) दिए गए भारत के राजनीतिक रेखा मानचित्र पर 1857 के विद्रोह के तीन प्रमुख केन्द्र दर्शाइए?
(I) मेरठ (II) दिल्ली (III) कलकत्ता (कोलकता)–3
(II) दिए गए इसी राजनीतिक रेखा मानचित्र पर 1857 के विद्रोह के दो महत्वपूर्ण केन्द्र A B अंकित किए गए हैं। उन्हें पहचानिए और उनके सही नाम उनके निकट खींची गई रेखाओं पर लिखिए।

विषय–13

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

(सविनय अवज्ञा और उससे आगे)

स्मरणीय बिन्दु :–

1. दक्षिण अफ्रीका में ही महात्मा गाँधी ने पहली बार अहिंसात्मक विरोध की विशिष्ट तकनीक ''सत्याग्रह'' का इस्तेमाल किया। जिसमें विभिन्न धर्मो के बीच सौहार्द बढ़ाने का प्रयास किया तथा उच्च जाति भारतीयों को निम्न जातियों और महिलाओं के प्रति भेदभाव वाले व्यवहार के लिए चेतावनी दी। इसलिए चन्द्रन देवनेसन ने कहा है, दक्षिण अफ्रीका ने गांधी जी को महात्मा बनाया।

2. 1905–07 के स्वदेशी आंदोलन ने कुछ प्रमुख नेताओं को जन्म दिया जिनमें महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक, बंगाल के विपिन चंद्र पाल और पंजाब के लाला लाजपत राय थे। ये तीनों ''लाल बाल और पाल'' के रूप में जाने जाते हैं।

3. गाँधी जी की पहली महत्वपूर्ण सार्वजनिक उपस्थिति फरवरी 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में हुई। जहाँ उन्होंने मजदूरों और किसानों को अपने भाषण का केन्द्र बिन्दु बनाया तथा अपने भविष्य की राजनीतिक रूपरेखा तय की।

4. चम्पारण सत्याग्रह (1917) तथा अहमदाबाद और खेड़ा (1918) में की गई पहल से गाँधी जी एक ऐसे राष्ट्रवादी नेता के रुप में उभरे जिनमें गरीबों के लिए गहरी सहानुभूति थी।

5. 1914–18 के प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेजों ने प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया और बिना जाँच के कारावास की अनुमति दी। आगे चलकर सर सिडनी रॉलेट समिति की सिफारिशों के आधार पर इन कठोर, उपायों को जारी रखा गया।

6. 13 अप्रैल, 1919 में पंजाब के अमृतसर में जलियाँवाला बाग हत्याकांड हुआ जिसके लिए जनरल डायर जिम्मेदार था।

7. रॉलट सत्याग्रह की सफलता, जलियाँवाला बाग की वीभत्स घटना, अंग्रेजों की वादा खिलाफी ने गाँधीजी को असहयोग आन्दोलन करने को प्रेरित किया। 1920 में असहयोग आन्दोलन की शुरूआत हुई, जिसमें खिलाफत आंदोलन को समर्थन देकर हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल दिया गया।

8. असहयोग आन्दोलन में छात्रों, वकीलों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। सरकारी संस्थाओं का परित्याग किया गया। मजदूरों द्वारा कारखानों में हड़ताल, वनवासियों द्वारा वन कानूनों का उल्लंघन किया गया।

9. फरवरी 1922 में किसानों के एक समूह ने गोरखपुर के नजदीक चौरी–चौरा में पुरवा एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी जिससे कई पुलिस वाले मारे गए। परिणामस्वरूप गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया।

10. 1922 तक गाँधी जी एक जननेता बन गए थे, क्योंकि भारतीय राष्ट्रवाद को उन्होंने एक नई दिशा दी जिसमें किसान, मजदूर, व्यापारी मध्यमवर्ग को आन्दोलन में शामिल किया, और उन तक अपनी पहचान बनाई। उनकी कार्यशैली, पहनावा, संगठन क्षमता ने उन्हें आम भारतीय का शुभचिंतक बना दिया, लोगों ने उन्हें अपने दुःखों को हरने वाला माना।

11. 1924 में जेल से रिहा होने के बाद गांधीजी ने अपना ध्यान रचनात्मक कार्यों जैसे चरखे को लोकप्रिय बनाना, हिन्दु–मुस्लमान एकता तथा छुआछूत को समाप्त करने में लगाया।

12. 1928 ई. में भारतीय उपनिवेश की स्थितियों की जाँच–पड़ताल के लिए ''साईमन कमीशन'' भारत आया। चूँकि इसके सभी सदस्य अंग्रेज थे अतः भारतीयों ने इसका बहिष्कार किया।

13. दिसम्बर 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' का प्रस्ताव पारित किया गया।

14. गाँधी जी ने 12 मार्च, 1930 को साबरमती से दाण्डी मार्च प्रारंभ किया तथा 6 अप्रैल, 1930 को नमक बनाकर दाण्डी यात्रा को समाप्त किया।

15. नमक यात्रा तीन कारणों से उल्लेखनीय थी:

    क) इस आन्दोलन के चलते गाँधी जी दुनिया की नजर में आए।

    ख) यह पहली राष्ट्रवादी गतिविधि थी, जिसमें औरतों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया।

    ग) अंग्रेजों को अब यह अहसास हुआ कि उनका राज बहुत दिनों तक नहीं टिकेगा।

16. गाँधी–इर्विन समझौता 1931 में हुआ जिसकी शर्तो में सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लेना, कैदियों की रिहाई तथा तटीय इलाकों में नमक उत्पादन की अनुमति शामिल थी।

17. दूसरा गोल मेज सम्मेलन 1931 के आखिर में लन्दन में आयोजित हुआ। यह किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सका। अतः गांधीजी ने वापस आकर दुबारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया।

18. 1935 में नए गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट में सीमित प्रतिनिधिक शासन व्यवस्था का आश्वासन व्यक्त किया गया।

19. मार्च 1940 में मुस्लिम लीग ने उपमहाद्वीप के मुस्लिम बहुल इलाकों के लिए स्वायतता की मांग का प्रस्ताव पेश किया।

20. भारत छोड़ो आंदोलन सही मायने में एक जनांदोलन था। गाँधी, नेहरू जैसे प्रमुख नेताओं की गिरफ्तारी के बाद स्वतः स्फूर्त तरीके से जारी। युवाओं की भारी मात्रा में हिस्सेदारी। जयप्रकाश नारायण द्वारा भूमिगत प्रतिरोध आन्दोलन। सतारा, मेदिनीपुर और बलिया में स्थानीय स्वतंत्र सरकार की स्थापना।

21. समकालीन स्रोत जैसे गाँधी जी के सहयोगियों और प्रतिद्वंन्दियों का भाषण व लेखन, गाँधी जी की आत्मकथा तथा जीवनी, पुलिस रिकॉर्ड, अखबारों में छपी रिपोर्ट, निजी पत्र गाँधी जी को समझने में बहुत महत्वपूर्ण समकालीन स्रोत है।

22. गाँधीजी ने न केवल स्वतंत्र और अखंड भारत के लिए जीवन भर युद्ध लड़ा बल्कि वे एक समाज सुधारक भी थे जिन्होंने अपना ध्यान खादी को बढ़ावा देने और छुआ–छूत को समाप्त करने पर लगाया।

23. उन्होनें चरखे को ऐसे मानव समाज के प्रतीक के रूप में देखा जिसमें मशीनों तथा प्रोद्योगिकी को बहुत महामंडित नहीं किया जायेगा।

24. 1917–22 के बीच भारतीयों के बहुत प्रभावशाली वर्ग जिसमें, महादेव देसाई, वल्लभ भाई पटेल, जे.बी. कृपलानी, सुभाष चन्द्र बोस, अबुल कलाम आजाद, जवाहर लाल नेहरु, सरोजनी नायडू, गोविन्द बल्लभ पंत तथा सी राजगोपालाचारी शामिल थे, ने गांधीवादी राष्ट्रवाद के विकास में योगदान दिया।

25 बंगाल में शान्ति स्थापना के लिए अभियान चलाने के लिए गांधीजी नोआखली गए तत्पश्चात दिल्ली आए तथा यहाँ से पंजाब जाने का विचार था, तभी 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे के द्वारा गोली मारकर गांधीजी की हत्या कर दी गई।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक वाले)

प्र. 1 भातीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने प्रथम स्वतंत्रता दिवस कब एवं कहाँ मनाया?

प्र. 2 गांधीजी की प्रथम सार्वजनिक उपस्थिति कहाँ पर हुई थी?

प्र. 3 जलियॉवाला बाग की घटना कब घटित हुई थी?

प्र. 4 गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन किस घटना के चलते वापिस के लिए था?

प्र. 5 1929 के लाहौर अधिवेशन की मुख्य विशेषता क्या थी?

प्र. 6 पहली बार राष्ट्रीय ध्वज कब फहराया गया?

प्र. 7 गांधीजी द्वारा दांडी मार्च कब प्रारम्भ किया गया।

प्र. 8 किस विदेशी पत्रिका में गांधी जी के व्यक्तित्व पर हंसी उडाई गई थी?

प्र. 9 भारत छोडो आन्दोलन किस सन् में प्रारम्भ किया गया?

प्र. 11 गांधीजी के सन्दर्भ मे निम्नलिखित कथनों में से सही कथन चुनिए।

1) वे जनवरी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे।

2) सत्याग्रह का पहला प्रयोग गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में किया।

3) 1917 में उन्होंने चम्पारण सत्याग्रह किया।

उपरोक्त कथनों में से सही कथन है ।

क) केवल 1

ख) केवल 1 व 2

ग) 1,2, व 3

घ) इनमें से कोई नहीं

प्र. 12 निम्नलिखित आन्दोलनों में से अगस्त 1942 में प्रारम्भ किय गया आंदोलन है :

क) भारत छोड़ो आन्दोलन

ख) रोलेट एक्ट के विरूद्ध अभियान

ग) सविनय अवज्ञा आन्दोलन

घ) चम्पारण सत्याग्रह

प्र. 13 जालियांवाला बाग हत्याकांड हुआ था :

क) लाहौर में

ख) कलकत्ता में

ग) कराची में

घ) अमृतसर में

प्र. 14 खिलाफत आन्दोलन चलाया गया :

क) गांधी जी द्वारा

ख) जय प्रकाश नारायण जी के द्वारा

ग) मोहम्मद अली तथा शौकत अली के द्वारा

घ) अबुल कलाम आजाद जी के द्वारा

प्र. 15 ''दक्षिण अफ्रीका ने ही गांधी जी को महात्मा बनाया''। इस कथन के वक्ता है :

क) लुई फिशर

ख) चन्द्रन देवनेसन

ग) टाइम्स पत्रिका

घ) गोपाल कृष्ण गोखले

प्र. 16 लाहौर अधिवेशन के विषय में असत्य कथन है –

क) यह दिसम्बर 1929 मे आयोजित किया गया।

ख) इसमें पूर्ण स्वराज की घोषणा की गई।

ग) इसकी अध्यक्षता वल्लभ भाई पटेल ने की थी।

घ) 26 फरवरी 1930 को प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

प्र. 17 पहली बार महिलाओं ने बढ़चढ कर हिस्सा लिया था :

क) खिलाफत आन्दोलन में

ख) असहयोग आन्दोलन में

ग) सविनय अवज्ञा आन्दोलन में

घ) भारत छोडो आन्दोलन में

प्र. 18 क्रिप्स मिशन के साथ वार्ता में कांग्रेस द्वारा रखा गया प्रस्ताव था।

क) सभी राजनैतिक कैदियों को रिहा कर दिया जाए।

ख) भारत को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की जाए।

ग) वायसराय सर्वप्रथम अपनी कार्यकारी समिति में किसी भारतीय को रक्षा सदस्य के रूप में नियुक्त करें।

घ) तटीय इलाकों में नमक बनाने तथा बेचने की अनुमति दी जाए।

प्र. 19 भारत छोडो आन्दोलन के दौरान प्रति सरकारों की स्थापना की गई थी –

क) नोआखली में

ख) दिल्ली में

ग) मेदिनीपुर तथा सतारा में

घ) पंजाब में

प्र. 20 'ए बँच ऑफ ओल्ड लैटर्स' किसके निजी पत्रों का संकलन है?

क) जवाहर लाल नेहरू

ख) महात्मा गांधी

ग) सुभाष चन्द्र बोस

घ) भगत सिंह

प्रश्न 21. नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और लिखिए यह चित्र किसका है?

उद्धरण आधारित प्रश्न (3 अंक वाले)

I. दिए गए उद्धरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्न में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

चरखा

महात्मा गाँधी आधुनिक युग, जिसमें मशीनों ने मानव को गुलाम बनाकर श्रम को हटा दिया था, के घोर आलोचक थे। उन्होंने चरखा की एक ऐसे, मानव समाज के प्रतीक रूप में देखा, जिसमें मशीनों और प्रौद्योगिकों को बहुत महिमामंडित नहीं किया जाएगा। इससे भी अधिक चरखा गरीबों को पूरक आमदनी प्रदान कर सकता था तथा उन्हें स्वावलम्बी बना सकता था।

(A) महात्मा गाँधी के अनुसार :

(क) मशीनों ने मानव को गुलाम बनाकर श्रम को हटा दिया।

(ख) पहिया अपने आप में मशीनरी का एक उत्कृष्ट नमूना है।

(ग) (क) सही है और (ख) गलत है।

(घ) दोनों (क) और (ख) सही हैं

(B) चरखा :

(क) गरीब को स्वावलम्बी बना सकता है।

(ख) धन का केन्द्रीयकरण कुछ लोगों के हाथों में करता है।

(ग) गरीब को परावलम्बी बना सकता है।

(घ) मशीनों का महिमामंडन करता है।

(C) महात्मा गांधी मशीनों के महिमामंडन के घोर आलोचक थे, क्योंकि :

(क) मशीनों के कारण शारीरिक श्रम कम लगता है।

(ख) हजारों लोग बेरोजगार हो जाएगें।

(ग) जीवन आरामदायक हो जाएगा।

(घ) मशीनें पूरक आमदनी का जरिया प्रदान करती है।

(C) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में तथा दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है।

कथन (A) – महात्मा गाँधी मशीनों के घोर आलोचक थे।

कारण (R) – महात्मा गाँधी की आपत्ति मशीन के प्रति सनक से थी।

(क) केवल कथन (A) सही है।

(ख) केवल कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।

II. इस चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए और किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

A) यह प्रचलित चित्र प्रतीक है :

(क) जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु का (ख) देवताओं से आशीर्वाद हेतु हवन का
(ग) इंदिरा गांधी की मृत्यु का (घ) महात्मा गांधी की मृत्यु का

B) लोक छवियों में महात्मा गाँधी को देखा जाता था :

(क) एकीकरण को समर्पित देवता के रूप में
(ख) केवल एक समाज सुधारक के रूप में
(ग) केवल एक राष्ट्रवादी के रूप में
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

C) यह चित्र दर्शाता है :

(क) कांग्रेस के भीतर दो विचार धाराओं के टकराव का
(ख) कांग्रेस के भीतर दो अलग–अलग धाराओं के समन्वय का
(ग) केवल मृत्यु
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

D) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में और दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है –

कथन (A) – गाँधी जी के पास चमत्कारिक शक्तियाँ थी।

कारण (R) – 'गांधी बाबा', 'गाँधी महाराज' अथवा सामान्य 'महात्मा' जैसे अलग–अलग नामों से गाँधी जी को संबोधित किया गया।

(क) केवल कथन (A) सही है।
(ख) केवल कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक वाले प्रश्न)

1. असहयोग आंदोलन कब आरम्भ हुआ और क्यों चलाया गया? इसके स्थगित करने के कारणों का वर्णन कीजिए।
2. गाँधीजी की चमत्कारी शक्तियों की अफवाहें क्या–क्या थी? सपष्ट कीजिए।
3. लॉर्ड माउंटबेटन की योजना की विवेचना कीजिए।
4. कैबिनेट मिशन भारत कब आया? इसकी महत्त्वपूर्ण सिफारिशें क्या थी?
5. ''गाँधी जी जितने समाज सुधारक थे उतने ही वे राजनीतिज्ञ थे।'' स्पष्ट कीजिए।
6. बहुत से विद्वानों ने स्वतंत्रता के बाद के महीनों को गाँधी जी के जीवन का श्रेष्ठतम क्षण क्यों कहा है? किन्हीं तीन बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट कीजिए।
7. 1915 में महात्मा गांधी के वापस भारत आने के समय देश की दशा का वर्णन कीजिए।
8. दिसम्बर, 1929 में लाहौर में हुए कांग्रेस अधिवेशन के महत्व की परख कीजिए।
9. गाँधी जी ने नमक सत्याग्रह के दौरान नमक को ही विरोध के प्रतीक के रूप में क्यों चुना? स्पष्ट कीजिए।
10. नमक सत्याग्रह या सविनय अवज्ञा आंदोलन गाँधी जी ने क्यों प्रारंभ किया एवं इस दौरान क्या कार्यक्रम अपनाए गए?
11. गाँधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान चरखे को मानव समाज के प्रतीक के रूप में क्यों चुना?
12. निजी पत्र एवं आत्मकथाएँ सरकारी स्रोतों से किस प्रकार भिन्न होते हैं तथा इनसे हमें व्यक्ति के किन पक्षों की जानकारी प्राप्त होती है?

13. ''चंपारण, खेड़ा और अहमदाबाद में की गई पहल से गाँधी जी एक ऐसे राष्ट्रवादी नेता के रुप में उभरे, जिनमें गरीबों के लिए गहरी सहानुभूति थी। विवेचना कीजिए।

14. प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस का आह्वान किसने, कब तथा क्यों किया था?

15. गांधीजी के उन अनुयायियों के नाम लिखिए जिन्होनें गांधी वादी राष्ट्रवाद के विकास में योगदान दिया।

दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न (8 अंक वाले प्रश्न)

1. 1930 में गाँधी जी द्वारा चलाए गए नमक आंदोलन के कारण तथा परिणामों को विस्तार से बताइए। (संकेतः पृ.स. 355–361 एन.सी.ई.आर.टी)

2. 1922 तक महात्मा गाँधी एक नेता बन गए विवेचना कीजिए। (संकेतः पृ.स. 352 एन.सी.ई.आर.टी)

3. 'महात्मा गाँधी के द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन को जन आंदोलन में परिवर्तित कर दिया गया स्पष्ट कीजिए। (संकेतः पृ.स. 350–351 एन.सी.ई.आर.टी)

4. उन प्रमुख घटनाओं की विवेचना कीजिए जिनके फलस्वरूप भारत सविनय अवज्ञा आरम्भ हुआ। इसकी मुख्य विशेषताओं का वर्णन करते हुए इस आंदोलन में महात्मा गाँधी की भूमिका की समीक्षा कीजिए। (संकेतः पृ.स. 363 एन.सी.ई.आर.टी)

5. भारत छोड़ो आंदोलन को स्वतः स्फूर्त आंदोलन क्यों कहा गया, स्पष्ट कीजिए।
(संकेतः पृ.स. 363 एन.सी.ई.आर.टी)

6. विभिन्न राष्ट्रीय आंदोलनों के संदर्भ में महात्मा गाँधी की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

7. उन विभिन्न प्रकार के स्रोतों का परीक्षण कीजिए जिनके आधार पर गाँधीजी के राजनीतिक सफर एवं स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास को पुनः निर्मित किया जा सकता है।
(संकेतः पृ.स. 367 एन.सी.ई.आर.टी)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1. प्रत्येक भारतीय घर में नमक का प्रयोग अपरिहार्य।

(1) भारतीयों को नमक कानून के तहत घरेलू प्रयोग के लिए नमक बनाने पर रोक।
(2) भारतीय दुकानों से अधिक मूल्य पर नमक खरीदने को बाध्य।
(3) नमक उत्पादन और विक्रय पर राज्य का एकाधिकार।
(4) अंग्रेज सरकार द्वारा लाभ पर न बिकने वाला नमक नष्ट किया जाना।
(5) प्रकृति द्वारा बिना श्रम के उत्पादित नमक को नष्ट करना।
(6) बहुमूल्य राष्ट्रीय संपदा को राष्ट्रीय खर्चे से नष्ट करना।
(7) उपर्युक्त कारणों से गाँधी जी द्वारा नमक एकाधार के मुद्दें का चयन।
(8) नमक कानून आम जनता में बेहद अलोकप्रिय।
(9) इस असंतोष का गाँधीजी ने शासन के खिलाफ सांघतित किया।

परिणाम–

(1) महात्मा गाँधी दुनिया की नजर में आए।
(2) अमेरिकी समाचार पत्रिका टाइम ने गाँधीजी का ''तकुए जैसे शरीर और मकड़ी जैसे पेडू'' शब्दों से मजाक बनाया।
(3) दाण्डी यात्रा के पश्चात् इस पत्रिका की सोच में बदलाव।
(4) गाँधीजी को मिला जनसमर्थन देख हैरत में।
(5) गाँधीजी एक ऐसे राजनेता जो ''ईसाई धर्माबलंबियों के खिलाफ ईसाई तरीकों का ही हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहा है।''
(6) इस यात्रा का यूरोप और अमेरिकी प्रेस द्वारा व्यापक कवरेज।
(7) पहली राष्ट्रवादी गतिविधि जिसमें औरतों की भागीदारी।
(8) अंग्रेजी हुकूमत को आन्दोलन की व्यापकता का अहसास होना।
(9) उनका राज बहुत दिन तक कायम नहीं।
(10) भारतीयों को भी सत्ता में हिस्सा देना निश्चित।

(संकेत पृष्ठ सं. 355–361 एन.सी.ई.आर.टी)

2. 1915 में गाँधीजी का अफ्रीका से भारत लौटना।

(1) 1893 के अपेक्षाकृत भारत राजनीतिक दृष्टि से अधिक सक्रिय।
(2) अधिकांश प्रमुख शहरों और कस्बों में राष्ट्रीय कांग्रेस की शाखाएँ।
(3) 1905–07 के स्वदेशी आंदोलन से मध्यम वर्ग प्रभावित।

(4) प्रमुख नेताओं– बाल, लाल और पाल का उभरना।
(5) स्वदेशी आन्दोलन का अखिल भारतीय चरित्र।
(6) उदारवादी नेता व गाँधीजी के राजनीतिक परामर्शदाता गोपाल कृष्ण गोखले की सलाह पर गाँधीजी द्वारा एक वर्ष ब्रिटिश भारत की यात्रा।
(7) 1916 में गाँधीजी की पहली सार्वजनिक उपस्थिति।
(8) बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में गाँधीजी चिन्तित।
(9) मुक्ति केवल किसानों के माध्यम से सम्भव।
(10) वक्तव्य में गाँधीजी की मंशा शामिल किया।
(11) भारतीय राष्ट्रवाद में 'सम्पूर्ण भारतीयो' का प्रतिनिधित्व।
(12) 1917 में चम्पारण व 1918 में खेड़ा और अहमदाबाद में अभियानों में गाँधीजी उपस्थित।
(13) गाँधीजी की गरीबों के प्रति सहानुभूति का आम लोगों पर असर।
(14) 1914–18 में पहले विश्व युद्ध में अंग्रेजों द्वारा प्रेस पर प्रतिबन्ध।
(15) बिना जाँच कारावास की अनुमति।
(16) 1919 में 'रॉलेट एक्ट'।
(17) 'रॉलेट एक्ट' के खिलाफ गाँधीजी का अभियान।
(18) बंद के कारण उत्तरी व पश्चिमी भारत से जीवन ठप्प।
(19) गाँधीजी की पंजाब में गिरफतारी।
(20) स्थानीय कांग्रेसजनों की भी गिरफतारी।
(11) 1919 में जलियाँवालां बाग हत्याकांड में 400 से अधिक बेगुनाह लोगों की मौत।
(12) 1921 में असहयोग आंदोलन और गाँधीजी एक राष्ट्रवादी नेता के रूप में स्थापित।

(संकेत पृष्ठ सं. 352 एन.सी.ई.आर.टी)

3. रॉलेट सत्याग्रह से गाँधी जी एक राजनेता के रूप में –
(1) अंग्रेजी शासन के खिलाफ असहयोग आन्दोलन।
(2) सभी भारतीयों से एच्छिक संबन्धों से परित्याग के पालन का आग्रह।
(3) स्कूल, कॉलेज और न्यायालय न जाने का आग्रह।
(4) गाँधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन और खिलाफत आन्दोलन को जोड़ना।
(5) हिन्दू मुस्लिम दोनों का साथ पाने की आशा।
(6) विद्यार्थियों ने सरकार द्वारा चलाये जा रहे स्कूल और कॉलेजों का बहिष्कार किया।

(7) वकीलों का अदालतों में जाने से मना करना।
(8) नगरों और कस्बों में श्रमिक–वर्ग हड़ताल पर।
(9) देहात तक आन्दोलन की हवा।
(10) उत्तरी आंध्र की पहाड़ी जनजातियों द्वारा वन्य कानूनों की अवेहलना।
(11) अवध के किसानों द्वारा कर देने से इन्कार।
(12) कुमाऊँ के किसानों द्वारा औपनिवेशिक अधिकारियों का सामान न ढोना।
(13) हर वर्ग द्वारा आन्दोलन में अपने तरीके से भागीदारी।
(14) असहयोग शांति की दृष्टि से नकारात्मक किंतु प्रभाव की दृष्टि से सकारात्मक।
(15) 1857 के विद्रोह के बाद पहली बार अंग्रेजों की नींव हिल गई।
(16) सभी वर्गों के साथ आने से राष्ट्रीय आन्दोलन एक जन आन्दोलन में परिवर्तित।

(संकेत पृष्ठ सं. 350–351 एन.सी.ई.आर.टी)

4. सविनय अवज्ञा आन्दोलन के कारण–

प्रथम चरण –

(1) साईमन कमीशन का गठन।
(2) अधिराज्य की मांग की विफलता।
(3) सामाजिक क्रांतिकारियों को कारावास देने के विरुद्ध।
(4) आन्दोलन गाँधी जी की दाण्डी यात्रा से प्रारम्भ।
(5) गाँधी जी ने नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा और जेल गये।
(6) भारत के विभिन्न क्षेत्रों में नमक उत्पादन किया गया।
(7) यह अंग्रेजी सरकार के खिलाफ असहयोग का एक प्रतीक बन गया।
(8) लाहौर के वार्षिक अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज अथवा पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा की।
(9) सविनय अवज्ञा आन्दोलन की विशेषता।
(10) पहला राष्ट्रव्यापी आन्दोलन, अन्य आन्दोलन शहरों तक सीमित।
(11) ग्रामीण इलाकों के लोगों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज की।
(12) महिलाओं ने बड़ी संख्या में प्रथम बार भाग लिया।
(13) सविनय अवज्ञा आन्दोलन का दूसरा चरण।
(14) गाँधी जी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन से भारत वापस आए।
(15) दूसरा गोलमेज सम्मेलन भारतीयों की दृष्टि से विफल।

(16) सविनय अवज्ञा आन्दोलन का यह चरण 1934 तक रहा।
(17) सभी उच्च कांग्रेस लीडर्स को जेल भेज दिया गया।
(18) गाँधी जी ने 1942 में अपना तीसरा बड़ा आन्दोलन 'भारत छोड़ो' छेड़ा।
(19) यह आन्दोलन युवा कार्यकर्ताओं द्वारा चलाया गया।
(20) उन्होंने देश भर में हड़तालों और तोड़फोड़ की कार्यवाही की।
(21) उन्होंने कॉलेज छोड़ जेल का रास्ता अपनाया।
(22) इन्हीं सालों में मुस्लिम लीग ने पंजाब और सिंध में अपनी पहचान बनाई।

(संकेत पृष्ठ सं. 363 एन.सी.ई.आर.टी)

5. 1942 में क्रिप्स मिशन भारत आया।
   (1) क्रिप्स मिशन के साथ कांग्रेस की वार्ता विफल रही।
   (2) गाँधी जी का तीसरा बड़ा आन्दोलन अगस्त 1942 में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो'।
   (3) आन्दोलन के शुरू होते ही गाँधी जी गिरफतार
   (4) देश भर के युवा कार्यकर्ताओं द्वारा आन्दोलन जारी।
   (5) कांग्रेस के समाजवादी सदस्य जय प्रकाश नारायण भूमिगत प्रतिरोध गतिविधियों में सक्रिय।
   (6) पश्चिम में सतारा व पूर्व में मेदिनीपुर जिलों में ''स्वतंत्र'' सरकार की स्थापना।
   (7) एक जन आन्दोलन – हजारों आम हिन्दुस्तानी शामिल।
   (8) युवाओं की बड़ी संख्या में भागीदारी।
   (9) सभी बड़े नेताओं के जेल में होने से आन्दोलन अगुआरहित।
   (10) जनमानस द्वारा आन्दोलन चलाया गया।
   (11) अतः स्वतः स्फूर्त आन्दोलन बना।

(संकेत पृष्ठ सं. 363 एन.सी.ई.आर.टी)

7. (1) निजी पत्र व सार्वजनिक स्वर –
      (1) महात्मा गाँधी के पत्र व भाषण एक महत्वपूर्ण स्त्रोत।
      (2) भाषण में व्यक्ति के सार्वजनिक विचारों की अभिव्यक्ति।
      (3) व्यक्तिगत पत्रों में व्यक्ति के निजी विचारों की झलक।
      (4) व्यक्ति का गुस्सा व पीड़ा, असंतोष व बेचैनी, आशाएं और हताशाएँ निजी पत्रों में व्यक्त।
   (2) आत्मकथाएँ – अतीत का ब्यौरा

(1) मानवीय विचरों के हिसाब से समृद्ध।
(2) व्यक्ति के स्मृति के आधार पर लिखी गई।
(3) औरों की नजर में अपने तरीके से अपने जीवन की प्रस्तुति।
(4) पाठक द्वारा उन चीजों को भी देखने की कोशिश करना। जो लेखक पाठक को दिखाना नहीं चाहता।

(3) पुलिस रिकार्ड व सरकारी रिकार्ड –
(1) सरकारी कर्मचारियों द्वारा लिखी गई रिपोर्ट और पत्र।
(2) अपने समय में गोपनीय दस्तावेज, अब लेखागारों में उपलब्ध।
(3) उदाहरण – नमक सत्याग्रह पर पाक्षिक रिपोर्ट।
(4) गृह विभाग का यह मानने से इंकार कि महात्मा गाँधी की कार्रवाइयों के प्रति कोई व्यापक जनसमर्थन का पैदा होना।

(4) अखबार –
(1) समकालीन अखबार– अंग्रेजी तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं में।
(2) अखबारों की गाँधीजी की गतिविधियों पर नजर।
(3) गाँधी जी की खबरें अखबारों में प्रकाशित।
(4) घटनाओं के विवरण पूर्वाग्रह से अछूते नहीं।

विषय–13

अनुच्छेद आधारित प्रश्न (5 अंको वाले)

1. **'कल हम नमक कर कानून तोड़गें**

5 अप्रैल, 1930 को महात्मा गाँधी ने दाण्डी में कहा था।

जब मैं अपने साथियों के साथ दाण्डी के इस समुद्र तटीय टोले की तरफ चला था तो मुझे यकीन नहीं था कि हमें यहाँ तक आने दिया जाएगा। जब मैं साबरमती में था तब भी यह अफवाह थी कि मुझे गिरफ्तार किया जा सकता है। तब मैंने सोचा था कि सरकार मेरे साथियों को तो दाण्डी तक आने देगी लेकिन मुझे निश्चय की यह छूट नहीं मिलेगी। यदि कोई यह कहता है कि इससे मेरे हृदय में अपूर्ण आस्था का संकेत मिलता है तो मैं इस आरोप को नकारने वाला नहीं हूँ। मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ इसमें शांति और अहिंसा का कम हाथ नहीं है इस सत्ता को सब महसूस करते हैं। अगर सरकार चाहे तो वह अपने आचरण के लिए अपनी पीठ थपथपा सकती है क्योंकि सरकार चाहती तो हम में से हरेक को गिरफ्तार कर सकती थी। जब सरकार यह कहती है कि उसके पास शांति की सेना को गिरफ्तार करने का साहस नहीं था तो हम उसकी प्रशंसा करते हैं। सरकार को ऐसी सेना की गिरफ्तारी में शर्म महसूस होती है अगर कोई व्यक्ति ऐसा काम करने में शर्मिदा महसूस करता है जो उसके पड़ोसियों को भी रास नहीं आ सकता तो वह एक शिष्ट–सभ्य व्यक्ति है। सरकार को हमें गिरफ्तार न करने के लिए बधाई दी जानी चाहिए भले ही उसने विश्व जनमत का ख्याल करके ही यह फैसला क्यों न लिया हो।

कल हम नमक कानून तोड़ेंगे। सरकार इसको बर्दाशत करती है कि नहीं यह सवाल अलग है। हो सकता है सरकार हमें ऐसा न करने दे लेकिन उसने हमारे जत्थे के बारे में धैर्य और सहिष्णुता दिखायी है उसके लिए वह अभिनंदन की पात्र हैं.....।

यदि मुझे और गुजरात व देशभर के मुख्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया है तो क्या होगा ? यह आंदोलन इस विश्वास पर आधारित है कि एक पूरा राष्ट्र उठ खड़ा होता है और आगे बढ़ने लगता है तो उसे नेता की जरूरत नहीं रह जाती।

1. गाँधीजी के द्वारा नमक कानून किन परिस्थितियों मे तोड़ा गया ? 1
2. औपनिवेशिक सरकार ने गाँधीजी को गिरफ्तार क्यों नहीं किया। 1
3. नमक यात्रा किन तीन कारणों से उल्लेखनीय थी? 3

2. **पृथक निर्वाचिका पर अम्बेडकर के विचार दलित वर्गो के लिए पृथक निर्वाचिका के प्रस्ताव पर महात्मा गाँधी की दलीलों के जवाब में अम्बेडकर ने लिखा था।**

हमारे सामने एक ऐसा वर्ग है जो निश्चय ही अस्तित्व के संघर्ष में खुद को कायम नहीं रख सकता। जिस धर्म से ये लोग बँधे हुए हैं वह उन्हें सम्मानजनक स्थान प्रदान करने की बजाय कोढ़ियों की तरह देखता है जिनके साथ सामान्य संबंध नहीं रखे जा सकते । आर्थिक रूप से यह ऐसा वर्ग है जो दो वक्त की रोटी के लिए सवर्ण हिन्दुओं पर पूरी तरह आश्रित है।

जिसके पास आजीविका का कोई स्वतंत्र साधन नहीं है। न केवल हिन्दुओं के सामाजिक पूर्वाग्रहों के कारण उनके सारे रास्ते बंद है बल्कि समग्र इतिहास में हिन्दू–समाज ने उनके सामने खुलने वाली हर संभावना को बंद कर दिया है जिससे दमित वर्गों को जीवन में ऊपर उठने का कोई अवसर न मिल सके।

इन परिस्थितियों में सभी निष्पक्ष सोच वाले व्यक्ति इस बात पर सहमत होंगे कि आज सबसे बड़ी आवश्यकता यही है कि ऐसे अपंग समुदाय के पास संगठित निरंकुशता के विरूद्ध जीवन के संघर्ष का एक मात्र रास्ता यही है उसे राजनीतिक सत्ता में हिस्सा मिले जिसकी वह अपनी रक्षा कर सके।

1. इस अनुच्छेद में डॉ. अम्बेडकर किसकी दलीलों का उत्तर दे रहे हैं? 1
2. डॉ. अम्बेडकर ने दलित वर्ग के बारे में क्या–क्या दलीलें दी? 2
3. दलित वर्ग को सम्मानजनक स्थान प्रदान करने के लिए अपने सुझाव लिखिए। 2

INDIA POLITICAL AND ADJACENT COUNTRIES
भारत राजनैतिक और पड़ोसी देश
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख केंद्र
लाहौर
अमृतसर
चम्पारन
कराची
चौरी-चौरा
बनारस
अहमदाबाद
खेड़ा
दांडी
बारडोली
बम्बई
Tropic of Cancer
Kms. 0 230 460 Kms.
1. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate baseline.
2. The State boundaries between Uttar Pradesh & Uttarakhand, Bihar & Jharkhand, Madhya Pradesh & Chhattisgarh have not been verified by the Governments concerned.
3. The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act. 1971," but have yet to be verified.
4. The External boundaries and coastlines of India shown on this map agree with the Record / Master copy certified by the Survey of India, Dehra Dun Uttarakhand. (Vide their letter No. T.B. 410/62-A-3/213 Dated 1-10-2019.)
5. The administrative Headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh.
6. The administrative Headquarters of Telangana and Andhra Pradesh are at Hyderabad.
© Government of India Copyright, 2019.
Publishers :-
INDIAN BOOK DEPOT (MAP HOUSE)®
2937, Bahadurgarh Road, Delhi-110006.
E-mail: info@ibdmaphouse.com

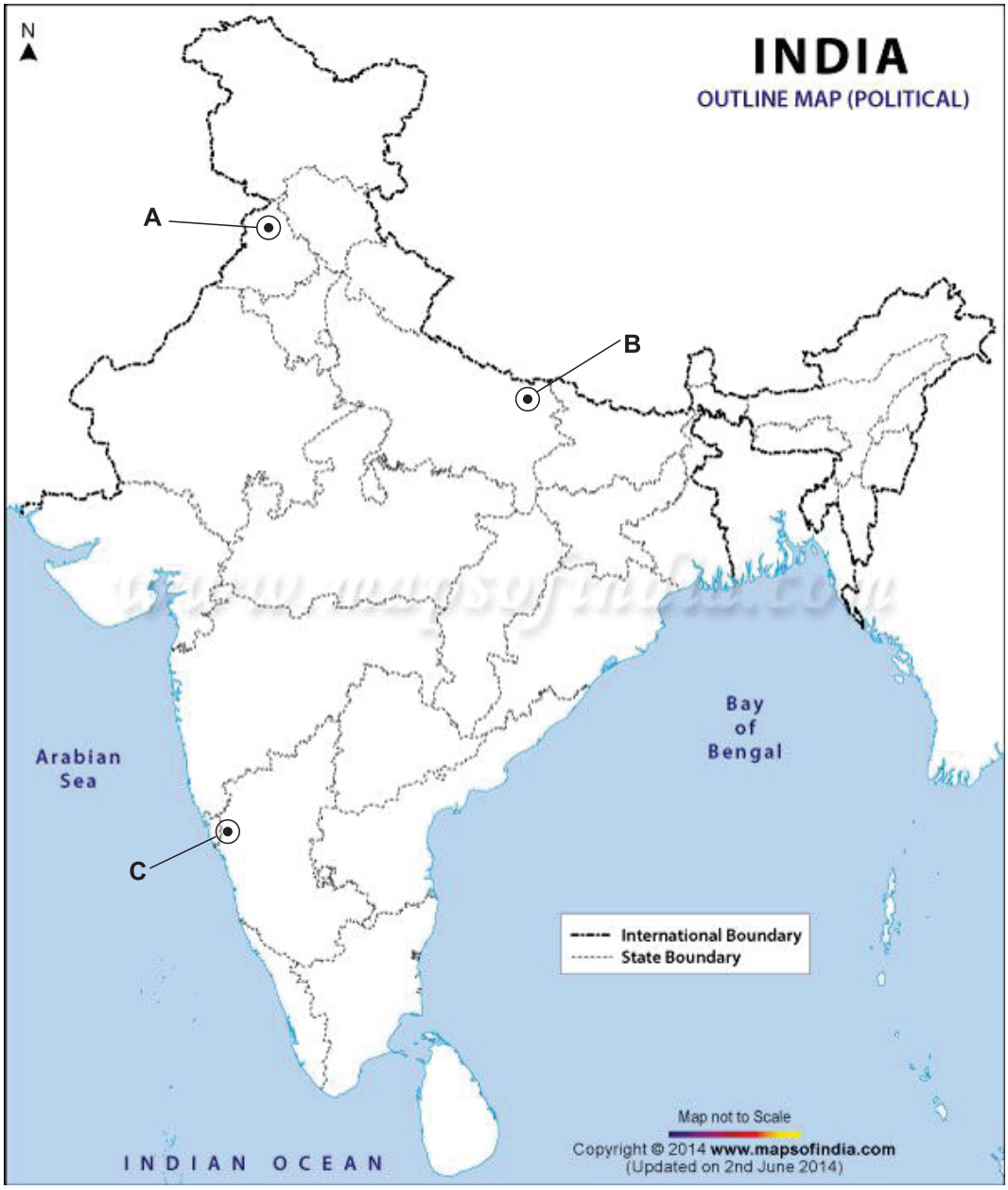

प्रश्न : 1 दिए गए भारत के राजनीतिक रेखा मानचित्र पर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण केन्द्र A,B तथा C अंकित किए गए है। उन्हें पहचानिए तथा उनके सही नाम उनके समीप खींची गई रेखाओं पर लिखिए।

प्रश्न : 2 दिए गए इसी राजनीतिक रेखा मानचित्र पर निम्नलिखित को अंकित कीजिए तथा उनके नाम लिखिए।

(क) डांडी (ख) लाहौर (ग) चम्पारण

विषय–15

संविधान का निर्माण

(एक नए युग की शुरूआत)

स्मरणीय बिन्दु :–

1. भारतीय संविधान 26 जनवरी, 1950 को अस्तित्व में आया इसके निर्माण से पहले के साल काफी उथल–पुथल वाले थे। यह महान आशाओं का क्षण भी था और भीषण मोहभंग का भी। लोगों की स्मृति में भारत छोड़ों आन्दोलन, आजादी हिन्द फौज का प्रयास, 1946 में रॉयल इंडियन नेवी का विद्रोह, देश के विभिन्न भागों में मजदूरों और किसानों के आन्दोलन आशाओं के प्रतीक थे तो वही हिन्दू–मुस्लिम के बीच दंगे और देश का बंटवारा भीषण मोहभंग का क्षण था
2. हमारे संविधान ने अतीत और वर्तमान के घावों पर मरहम लगाने, और विभिन्न वर्गो, जातियों व समुदायों में बँटे भारतीयों को एक साझा राजनीतिक प्रयोग में शामिल करने में मदद दी है।
3. भारतीय संविधान को 9 दिसम्बर, 1946 से 28 नवम्बर 1949 के बीच सूत्रबद्ध किया गया। संविधान सभा के कुल 11 सत्र हुए जिनमें 165 दिन बैठकों में गए।
4. संविधान सभा में हुई चर्चाएँ जनमत से प्रभावित होती थी। सभा में होने वाली बहस विभिन्न अखबारों में छपती थी और तमाम प्रस्तावों पर सार्वजनिक रूप से बहस चलती थी। इस तरह प्रेस में होने वाली आलोचना और जवाबी आलोचना से किसी मुद्दे पर बनने वाली सहमति या असहमति पर गहरा असर पड़ता था। सामूहिक सहभागिता बनाने के लिए जनता के सुझाव भी आमंत्रित किए जाते थे
5. मुस्लिम लीग ने संविधान सभा की शुरूआती बैठको (यानी 15 अगस्त, 1947 से पहले) का बहिष्कार किया जिसके कारण उस दौर में संविधान सभा एक ही पार्टी का समूह बनकर रह गई थी। सभा के 82 प्रतिशत सदस्य कांग्रेस के थे।
6. संविधान सभा में कुल तीन सौ सदस्य थे जिनमें छः सदस्यों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण थी। इन छः में से तीन जवाहर लाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल और राजेन्द्र प्रसाद कांग्रेस के सदस्य थे। इसके अतिरिक्त विधिवेत्ता बी. आर. अम्बेडकर, के.एम. मुशी और अल्लादि कृष्णास्वामी अय्यर थे।
7. संविधान सभा में दो प्रशासनिक अधिकारी भी थे। इनमें से एक बी.एन. राव भारत सरकार के संवैधानिक सलाहकार थे जबकि दूसरे अधिकारी एस.एन. मुखर्जी थे। इनकी भूमिका मुख्य योजनाकार की थी।
8. संविधान सभा का प्रारूप बनाने में कुल मिलाकर 3 वर्ष (2 वर्ष, 11 महीने, 18 दिन) लगे और इस दौरान हुई चर्चाओं के मुद्रित रिकार्ड 11 बड़े खंडों में प्रकाशित हुए।

9. 13 दिसम्बर, 1946 को जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा के सामने ''उद्देश्य प्रस्ताव'' पेश किया। इसमें भारत को ''स्वतंत्र, सम्प्रभु गणराज्य'' घोषित किया गया था नागरिकों को न्याय समानता व स्वतंत्रता का आश्वासन दिया गया था और यह वचन दिया गया था कि ''अल्पसंख्यकों, पिछड़े व जनजातीय क्षेत्र एवं दमित व अन्य पिछड़े वर्गो के लिए पर्याप्त रक्षात्मक प्रावधान किए जाएंगे।

10. पं. नेहरू ने कहा कि हमारे लोकतंत्र की रूपरेखा हमारे बीच होने वाली चर्चा से ही उभरेगी। भारतीय संविधान के आदर्श और प्रावधान कहीं और से उठाए गए नहीं हो सकते।

11. संविधान सभा उन लोगों की आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का साधन मानी जा रही थी। जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलनों में हिस्सा लिया था। लोकतंत्र, न्याय, समानता भारत में सामाजिक संघर्षो के साथ गहरे तौर पर जुड़ चुके थे। जब 19वीं शताब्दी में समाज सुधारकों ने बाल–विवाह का विरोध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया तब वे सामाजिक न्याय की अलख जगा रहे थे, उसी प्रकार स्वामी विवेकानंद ने हिंदू धर्म में सुधार की मुहिम चलाई तो, ज्योतिबा फूले ने दलित जातियों का बीड़ा उठाया।

12. सविंधान सभा उन लोगों की आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का साधन मानी जा रही थी जिन्होनें स्वतंत्रता आन्दोलन में हिस्सा लिया था। लोकतंत्र, न्याय समानता भारत में सामाजिक संघर्षों के साथ गहरे तौर पर जुड चुके थे

13. संविधान सभा में पृथक निर्वाचिका की समस्या पर बहस हुई। मद्रास के बी. पोकर बहादुर ने इसका पक्ष लिया परंतु, ज्यादातर राष्ट्रवादी नेताओं जैसे– आर.वी. धुलेकर, सरकार पटेल, गोविन्द वल्लभ पंत, बेगम ऐजाज रसूल आदि ने इसका कड़ा विरोध किया और इसे देश के लिए घातक बताया।

14. संविधान सभा में एन.जी. रंगा तथा जयपाल सिंह ने आदिवासियों की समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्हें आम आदमी के स्तर पर लाने और सुरक्षा प्रदान करने की जोरदार वकालत की।

15. एन.जी. रंगा ने कहा 'अल्पसंख्यक' शब्द की व्याख्या आर्थिक स्तर पर की जानी चाहिए। रंगा की नजर में असली अल्पसंख्यक गरीब और दबे कुचले लोग थे।

16. राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान अम्बेडकर ने दलित जातियों के लिए पृथक निर्वाचिकाओं की माँग की थी जिसका गाँधी जी ने यह कहते हुए, विरोध किया था कि ऐसा करने से ये समुदाय स्थायी रूप से शेष समाज से कट जाएंगे।

17. संविधान सभा में केन्द्र और राज्य सरकार के अधिकारों को लेकर हुई बहस में अधिकतर सदस्यों ने मजबूत केन्द्र का ही पक्ष लिया और विषयों की तीन सूचियाँ बनाई गई–केन्द्रीय सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची।

18. राष्ट्रभाषा के सवाल पर संविधान सभा की भाषा समिति ने यह सुझाव दिया कि देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी भारत की राजकीय भाषा होगी। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए हमें धीरे–धीरे आगे बढ़ना चाहिए।

19. सविंधान सभा में अल्पसंख्यकों के मुद्दों पर बहस हुई। दलित जातियों के अधिकारों तथा महिलाओं के अधिकारों पर भी चर्चा हुई।

20 संविधान सभा में दलित जातियों के लिए पृथक निर्वाचिका के पक्ष और विपक्ष में हुई बहसों के नतीजन और संप्रादयिक हिंसा को देखते हुए अम्बेडकर ने पृथक निर्वाचिका की मांग को छोड़ दिया।

21 राष्ट्रभाषा हिन्दी को लेकर बहुत अधिक बहस हुई तथा यह तय हुआ कि परस्पर समायोजन होना चाहिए

22 आर वी धुलेकर जी हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनाने के प्रबल पक्षधर थे।

23 केवल दो बातों पर ही आम सहमति थी, वे थे–व्यस्क मताधिकार तथा धर्मनिरपेक्षता जो संविधान के केन्द्रीय अभिलक्षण हैं।

24 संविधान सभा में हुई चर्चाएं हमेशा जनमत से प्रभावित होती थी इसके लिए अखबार रेडियों तथा प्रचार का सहारा लिया गया।

25 संविधान की विशेषताएँ–लिखित व लचीला संविधान, केन्द्र व राज्य शक्ति विभाजन स्वतंत्र न्यायपालिका, धर्मनिरपेक्षता, संसदीय प्रणाली, शाक्तिशाली केन्द्र व्यस्क मताधिकार तथा मौलिक अधिकार एवं मौलिक कर्तव्य आदि।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक वाले)

1. 15 अगस्त, 1947 बहुत सारे हिन्दुओं/सिखों और मुसलमानों के लिए एक निर्मम चुनाव का क्षण कैसे था?
2. नवजात राष्ट्र के सामने कौन–सी गंभीर समस्याएँ थी?
3. भाषायी अल्पसंख्यक क्या चाहते थे?
4. संविधान सभा में राष्ट्रीय ध्वज से संबंधित प्रस्ताव किसने पेश किया?
5. औपनिवेशिक शासन के दौरान प्रांतीय सरकारों में भारतीयों की हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए कौन–कौन से कानून पारित किए गए? किसी एक कानून का नाम बताइए।
6. सरदार पटेल ने पृथक निर्वाचिका के प्रश्न पर क्या कहा?
7. समवर्ती सूची के विषयों पर कौन कानून बना सकता था?
8. एक शक्तिशाली केन्द्र का होना क्यों जरूरी है?
9. ''सांस्कृतिक व शैक्षिक अधिकार'' संविधान के किस अनुच्छेद में दिये गये हैं?
10. 'अल्पसंख्यक' शब्द से क्या अभिप्राय है?

11 बम्बई की हंसा मेहता समिति का सम्बंध है:

क) महिलाओं के लिए न्याय की मांग से

ख) महिलाओं के लिए पृथक निर्वचन क्षेत्र की मांग से

ग) महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों की मांग से

घ) अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचिका से

12 निम्नलिखित अनुच्छेदों में से किसमें गवर्नर की सिफारिश पर केन्द्र सरकार द्वारा राज्य सरकार के सारे अधिकार अपने हाथ में लेने का अधिकार दिया गया है।

क) अनुच्छेद 370 में

ख) अनुच्छेद 256 में

ग) अनुच्छेद 356 में

घ) अनुच्छेद 110 में

13 संविधान सभा के अध्यक्ष थे :

क) डॉ राजेन्द्र प्रसाद

ख) पं जवाहर लाल नेहरू

ग) डा भीम राव अम्बेडकर

घ) सी राजगोपालाचारी

प्र. 14 संविधान सभा के संदर्भ में निम्न में से कौन सा/से कथन सही है/हैं :

i) संविधान सभा की चर्चाएँ जनमत से प्रभावित होती थीं।

ii) मुस्लिम लीग ने इसका विरोध किया।

iii) संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष डा. भीम राव अम्बेडर जी थे।

सही का चयन कीजिए।

(क) केवल i

(ख) केवल ii एवं iii

(ग) i, ii एवं iii

(घ) कोई नहीं

प्र. 15 संविधान सभा के सदस्यों में से जिसका सम्बन्ध प्रशासन से था, वह है :

i) डा. राजेन्द्र प्रसाद

ii) बी एस. राव

iii) एस. एन. मुंशी

iv) के. एम. मुंशी

सही विकल्प का चयन कीजिए–

(क) केवल (i)

(ख) केवल (ii) एवं (iii)

(ग) केवल (ii)

(घ) (iv), (ii) एवं (iii)

प्र. 16 उद्देश्य प्रस्ताव नेहरू जी ने पेश किया था :

(क) 13 दिसम्बर 1946 को

(ख) 26 नवम्बर 1945 को

(ग) 26 जनवरी 1947 को

(घ) 15 अगस्त 1947 को

प्र. 17 अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचिका के सबसे प्रबल पक्षधर थे:

(क) आर. वी धुलेकर

(ख) बी. पोकर बहादुर

(ग) बेगम एजाज रसूल

(घ) सरदार बल्लभ भाई पटेल

प्र. 18 जिसके द्वारा यह कहा गया कि अल्पसंख्यक' शब्द की व्याख्या आर्थिक आधार पर की जानी चाहिए वह है –

(क) जयपाल सिंह (ख) एन. जी. रंगा

(ग) महात्मा गाँधी (घ) बालकृष्ण शर्मा

प्र. 19 महात्मा गाँधी जी के अनुसार राष्ट्रभाषा में जो विशेषता नहीं होनी चाहिए, वह है :

(क) एक समूह तथा शक्तिशाली भाषा हो

(ख) मानवीय विचार तथा भावनाओं के पूरे समुच्य को अभिव्यक्ति देने वाली होनी चाहिए।

(ग) राष्ट्रभाषा ऐसी हो जिसे लोग आसानी से न समझ सकें।

(घ) विभिन्न समुदायों के बीच संचार का माध्यम होनी चाहिए।

प्र. 20 युग्मों को सुमेलित कीजिए–

सूचियाँ		विषय
i	केन्द्र सूची	A आय कर तथा आबकारी शुल्क
ii	राज्य सूची	B जमीन तथा सम्पत्ति कर
iii	समवर्ती सूची	C सीमा शुल्क तथा कम्पनी कर

सही विकल्प चुनिए।

(क) i-C, ii–A, iii–B

(ख) i–C, ii–B, iii–A

(ग) i–B, ii–A, iii–C

(घ) i–A, ii–B, iii–C

प्रश्न 21. नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और 14 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को संविधान सभा में बोलते हुए इस व्यक्ति का नाम लिखिए।

उद्धरण आधारित प्रश्न (3 अंक वाले)

I. दिए गए उद्धरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्न में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हमने विशेषाधिकार कभी नहीं माँगे

बम्बई की हंसा मेहता ने महिलाओं के लिए न्याय की माँग की, आरक्षित सीटों की नहीं और न ही पृथक चुनाव क्षेत्र की :

हमने विशेषाधिकार कभी नहीं माँगे। हमने सामाजिक न्याय, आर्थिक न्याय और राजनीतिक न्याय की माँग की है। हमने उस बराबरी की माँग की है जिसके बिना परस्परिक आदर और समझ नहीं बन सकते, जिसके बिना पुरुष और महिला के बीच वास्तविक सहयोग संभव नहीं है।

(A) महिलाओं के लिए न्याय की माँग की थी :

(क) बम्बई की हंसा मेहता ने
(ख) पूना की हंसा मेहता ने
(ग) मद्रास की दक्षायणी वेलायुधान ने
(घ) पूना की दक्षायणी वेलायुधान ने

(B) महिलाओं के लिए न्याय की माँग का अर्थ है :

(क) सामाजिक न्याय (ख) आर्थिक न्याय
(ग) राजनीतिक न्याय (घ) उपरोक्त सभी

(C) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में तथा दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है।

कथन (A) – आर्थिक न्याय ही सामाजिक न्याय का द्वारा है।

कारण (R) – लैगिंक भेदभाव को मात्र आरक्षित सीटें देकर समाप्त नहीं किया जा सकता।

(क) केवल कथन (A) सही है।
(ख) केवल कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।

(D) महिलाओं के लिए न्याय की माँग उठाई गई, क्योंकि :

(क) बँटवारे के दौरान महिलाओं पर बहुत अत्याचार हुए।

(ख) पुरुष और स्त्री के बीच वास्तविक सहयोग बिना पारस्परिक आदर और समझ के संभव नहीं है।

(ग) विशेषाधिकारों की प्राप्ति से ही न्याय की प्राप्ति संभव है।

(घ) उपरोक्त सभी।

II.

A) चित्र में दर्शाए गए दो महान विभूतियाँ हैं :

(क) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

(ख) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर और सरदार वल्लभ भाई पटेल

(ग) सरदार वल्लभ भाई पटेल और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

(घ) बी.एन. राव और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

B) संविधान सभा के अध्यक्ष थे :

(क) बी.एन. राव (ख) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

(ग) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (घ) सरदार वल्लभ भाई पटेल

C) संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे :

(क) बी.एन. राव (ख) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

(ग) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (घ) सरदार वल्लभ भाई पटेल

D) नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) के रूप में और दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है –

कथन (A) – संविधान सभा में हुई चर्चाएँ जनमत से भी प्रभावित होती थीं।

कारण (R) – संविधान सभा उन लोगों की आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का साधन मानी जा रही थी जिन्होंने स्वंतंत्रता के आंदोलनों में हिस्सा लिया था।

(क) केवल कथन (A) सही है।

(ख) केवल कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक वाले)

1. भारतीय संविधान के उद्देश्य प्रस्ताव में किन आदर्शो पर जोर दिया गया है? स्पष्ट कीजिए।
2. उद्देश्य प्रस्ताव में 'लोकतांत्रिक' शब्द का इस्तेमाल न करने के लिए जवाहर लाल नेहरू ने क्या कारण बताया था? विवेचना कीजिए।
3. भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू करने के पीछे संविधान निर्मताओं की मंशा को व्यक्त कीजिए।
4. संविधान सभा में 'पृथक निर्वाचिका' के पक्ष तथा विपक्ष में दिए गए बयानों की व्याख्या कीजिए।
5. भारतीय संविधान किस प्रकार केन्द्र सरकार और राज्यों के अधिकारों को सुरक्षा प्रदान करता है? स्पष्ट कीजिए।
6. एन.जी. रंगा द्वारा 'अल्पसंख्यक' शब्द की व्याख्या किस प्रकार की गई और उन्होंने देश में व्याप्त किस विशाल खाई की ओर संकेत किया स्पष्ट कीजिए।
7. 'संविधान सभा में की जाने वाली चर्चाओं को जनमत प्रभावित करते थे।' इस कथन की पुष्टि कीजिए।

8. 'संविधान सभा अंग्रेजों की योजना को साकार करने का काम कर रही थी।' सोमनाथ लाहिड़ी के इस कथन की पुष्टि कीजिए।

9. संविधान में कितनी सूचियाँ बनाई गई थीं? प्रत्येक सूची के अन्तर्गत आने वाले किसी एक विषय का नाम लिखिए।

10. भारतीय संविधान की किन्हीं तीन विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

11. व्याख्या कीजिए कि 1946 से पहले संवैधानिक विकास, संविधान सभा द्वारा किये गये विकास से किस प्रकार भिन्न था?

12. संविधान सभा में हुई चर्चाओं के दौरान बहुत सारे नेताओं ने सुदृढ़ केन्द्र की माँग क्यों की?

13. 'उद्देश्य प्रस्ताव' कब व किसके द्वारा पेश किया गया तथा किस प्रकार एक ऐतिहासिक प्रस्ताव था? विवेचना कीजिए।

14. दमित समूहों को सुरक्षा के पक्ष में डा. भीमराव अंबेडकर द्वारा उठाये गए कदमों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

15. 'संविधान निर्माण से पहले के साल उथल पुथल से भरे थे।' उदाहरण सहित स्पष्ट थीं? स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक वाले)

1. भारत के संविधान को बनाने समय शक्तिशाली केन्द्र के पक्ष में विभिन्न लोगों द्वारा दिए गए तर्कों की परख कीजिए। (संकेतः पृ.स. 423 एन.सी.ई.आर.टी)

2. ''संविधान सभा के अधिकतर सदस्य भारत में पृथक निर्वाचिकाओं के विचार के विरोधी थे।'' कथन की परख कीजिए। (संकेतः पृ.स. 416–422 एन.सी.ई.आर.टी)

3. संविधान सभा के कुल कितने सदस्य थे? कौन से छः सदस्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे। उनके विचारों एवं संविधान–निर्माण में उनकी भूमिका क्या थी? समीक्षा कीजिए।
(संकेतः पृ.स. 409 एन.सी.ई.आर.टी)

4. 'अल्पसंख्यक' से क्या अभिप्राय है? संविधान में उनके हितों की रक्षा के लिए क्या कदम उठाये गए। वर्णन कीजिए। (संकेतः पृ.स. 420 एन.सी.ई.आर.टी)

5. गाँधी जी के अनुसार राष्ट्रीय भाषा की क्या विशेषताएँ होनी चाहिए? संविधान सभा ने भाषा के विवाद का समाधान करने के लिए क्या रास्ता निकाला? स्पष्ट कीजिए।
(संकेतः पृ.स. 425 एन.सी.ई.आर.टी)

6. व्याख्या कीजिए कि भारतीय संविधान किस प्रकार से केन्द्र सरकार एवं राज्यों के अधिकारों की रक्षा करता है? (संकेतः पृ.स. 423 एन.सी.ई.आर.टी)

7. भारतीय संविधान बनाते समय दलित जातियों के अधिकारों को सुरक्षा के लिए विभिन्न लोगों द्वारा दिए गए विभिन्न तर्कों की परख कीजिए। (संकेतः पृ.स. 421 एन.सी.ई.आर.टी)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1. केन्द्र सरकार व राज्य सरकार के अधिकारों को लेकर संविधान सभा में बहस।
   (1) जवाहरलाल नेहरू शक्तिशाली केन्द्र के पक्ष में।
   (2) उनका मत था कि विभाजन के मद्देनजर दुर्बल केन्द्रीय व्यवस्था देश के लिए हानिकारक।
   (3) दुर्बल केन्द्र शांति स्थापित करने में, सरकारों के बीच समन्वय स्थापित करने में तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश के लिए आवाज़ उठाने में अक्षम।
   (4) संविधान के मसविदे में विषयों की तीन सूचियाँ–
   केन्द्रीय सूची, राज्य सूची व समवर्ती सूची।
   (5) केन्द्रीय सूची में अन्य सूचियों के मुकाबले बहुत अधिक विषय।
   (6) बी. आर. अम्बेडकर एक शक्तिशाली और एकीकृत केन्द्र के पक्षधर।
   (7) हिंसा के माहौल को देखते हुए एक मजबूत केन्द्र की आवश्यकता पर बल।
   (8) संयुक्त प्रांत के सदस्य बालकृष्ण शर्मा की दलील।
   (9) एक शक्तिशाली केन्द्र – समय की मांग।
   (10) देश के हित में योजना बनाने के लिए, उपलब्ध आर्थिक संसाधनों को जुटाने हेतु तथा उचित शासन व्यवस्था स्थापित करने के लिए।
   (11) विभाजन से पहले कांग्रेस प्रांतों को काफी स्वायत्तता देने पर सहमत।
   (12) मुस्लिम लीग को भरोसा दिलाने के लिए यह सहमति।
   (13) परन्तु बटँवारें के बाद ज्यादातर राष्ट्रवादियों के विचार में बदलाव।
   (14) हिंसा की घटनाओं से केन्द्रीयतावाद को बढ़ावा।
   (15) संविधान में भारतीय संघ के घटक राज्यों की तुलना में केन्द्र के अधिकारों की तरफ स्पष्ट झुकाव।

   (संकेत पृष्ठ सं. 423 एन.सी.ई.आर.टी)

2. 'संविधान सभा में अल्पसंख्यकों की व्याख्या व उनके अधिकारों पर बहस।
   (1) 27 अगस्त 1947 को मद्रास के बी. पोकर बहादुर द्वारा पृथक निर्वाचिका के पक्ष में प्रभावशाली भाषण।
   (2) राजनीतिक व्यवस्था में अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व सुरक्षित हो।
   (3) देश की शासन व्यवस्था में मुसलमानों की सार्थक भूमिका सुनिश्चित करने के लिए पृथक निर्वाचिका एकमात्र रास्ता।

(4) किन्तु ज्यादातर राष्ट्रवादियों का पक्ष पृथक निर्वाचिका की तरफ नहीं।
(5) यह व्यवस्था अंग्रेजों की भारतीयों को बाँटने के लिए एक चाल।
(6) आर. वी. धुलेकर का मत – यह संरक्षण के नाम पर अंग्रेजों द्वारा खेला गया एक खेल।
(7) पृथक निर्वाचिका की आड़ में अल्पसंख्यकों को फुसलाया गया।
(8) विभाजन के पश्चात् राष्ट्रवादी नेता पृथक निर्वाचिका के बिल्कुल खिलाफ।
(9) इससे निरंतर गृहयुद्ध, दंगों और हिंसा की आशंका।
(10) सरदार पटेल के अनुसार, पृथक निर्वाचिका एक ऐसा विष जो देश की पूरी राजनीति में समाहित।
(11) इसने समुदायों में नफरत पैदा कर, राष्ट्र के टुकड़े किए।
(12) देश में शांति बनाए रखने के लिए पृथक निर्वाचिका की मांग छोड़ना उचित।
(13) गोविन्द बल्लभ पंत के विचार से यह अल्पसंख्यकों के लिए भी अहितकर।
(14) यह मांग अल्पसंख्यकों को स्थायी रूप से दरकिनार करेगी।
(15) समुदायों के रूप में सोचने के बजाए प्रत्येक व्यक्ति नागरिक के रूप में सोचें।
(16) खंडित निष्ठा का भय जिसका अन्त एक कमजोर राष्ट्र के रूप में।
(17) मुसलमानों द्वारा लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका की आवश्यकता।

(संकेत पृष्ठ सं. 416–422 एन.सी.ई.आर.टी)

3. संविधान सभा में कुल तीन सौ सदस्य थे।
(1) सर्वाधिक महत्वपूर्ण छः सदस्य थे।
(2) जवाहरलाल नेहरू, बल्लभ भाई पटेल और राजेन्द्र प्रसाद (कांग्रेस के सदस्य)
(3) विधिवेत्ता और अर्थशास्त्री – बी. आर. अम्बेडकर, 2 वकील – गुजरात के के. एम. मुंशी और मद्रास के अल्लादि कृष्णास्वामी अययर।
(1) जवाहर लाल नेहरू द्वारा 'उद्देश्य प्रस्ताव' प्रस्तुत।
– भारत के झंडे का प्रारूप नेहरू द्वारा।
– राष्ट्रीय ध्वज – केसरिया, सफेद और गहरे हरे रंग की तीन बराबर चौड़ाई वाली पट्टियों का तिरंगा झंडा।
– बीच में गहरे नीले रंग का चक्र।
(2) सरदार बल्लभ भाई पटेल – पर्दे के पीछे रहकर कार्य
– कई रिपोर्टों के प्रारूप तैयार किए।

– परस्पर विरोधी विचारों के मध्य सहमति बनाने में मुख्य भूमिका

(3) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद – संविधान सभा के अध्यक्ष।

– सभा में चर्चाओं को रचनात्मक दिशा देना।

– सभी सदस्यों को विचार रखने का मौका देना।

(4) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर – संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष

(5) वकील के. एम. मुंशी व अल्लादि कृष्णास्वामी अययर –

– बी. आर अम्बेडकर के साथ मिलकर संविधान के प्रारूप में विधि का पक्ष सम्भाला।

(संकेत पृष्ठ सं. 409 एन.सी.ई.आर.टी)

4. एन. जी. रंगा के अनुसार – असली अल्पसंख्यक गरीब और दबे कुचले लोग

(1) ऐसी परिस्थितियों के निर्माण करें जहाँ संविधान द्वारा दिए गए अधिकारों का प्रभावी ढंग से प्रयोग हो।

(2) पाकिस्तानी प्रांतों में हरने वाले हिंदू, सिक्ख और मुसलमान ही केवल अल्पसंख्यक नहीं बल्कि आम गरीब जनता अल्पसंख्याक हैं।

(3) संविधान सम्मत अधिकारां को लागू करने का प्रभावी इंतजाम हो।

(4) रंगा के अनुसार अल्पसंख्यकों को सहारों की जरूरत, उन्हें एक सीढ़ी चाहिए।

(5) देश के मुसलमान अल्पसंख्यक – बी. पोकर बहादुर की दलील।

(6) राजनीतिक व्यवस्था मकें अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधित्व की मांग।

(7) संविधान में अलपसंख्यकों की रक्षा के लिए उठाए गए कदम–

– शैक्षिक अधिकार, भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण के लिए अनुच्छेद 29 दक 30 में विशेष प्रावधान।

– सभी धार्मिक भाषाई तथा सामुदायिक अल्पसंख्यक देश के प्रत्येक इकाई में अपनी इच्छानुसार कोई भी शैक्षिक संस्थान खोलने के लिए स्वतंत्र।

– सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय।

– विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, श्रद्धा और उपासना की स्वतंत्रता।

– अवसर की समानता।

– सार्वभौमिक मताधिकार।

(संकेत पृष्ठ सं. 420 एन.सी.ई.आर.टी)

5. संविधान सभा में भाषा के मुद्दे पर कई महीनों तक बहस।
   (1) कांग्रेस का मानना कि हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा हो।
   (2) गाँधी जी के अनुसार – राष्ट्रभाषा ऐसी जो सबके द्वारा आसानी से समझी जाए।
   (3) हिन्दू और उर्दू के मेल से हिन्दुस्तानी का निर्माण।
   (4) विविध संस्कृतियों के आदान–प्रदान से समृद्ध, एक साझी भाषा।
   (5) बहुसांस्कृतिक तथा विभिन्न समुदायों के बीच संचार के लिए आदर्श।
   (6) हिन्दुओं और मुसलमानों तथा उत्तर और दक्षिण के लोगों को एकजुट करने में सक्षम।
   (7) हिन्दुस्तानी न तो संस्कृतनिष्ठ हिन्दी हो न फारसीनिष्ठ उर्दू।
   (8) दोनों का सुन्दर मिश्रण हो।
   (9) दूसरी क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों को अपने में समा ले।
   (10) विदेशी भाषाओं के शब्दों को भी ग्रहण करें।
   (11) मानवीय विचारों और भावनाओं के पूरे समुच्चय को अभिव्यक्त करें।
   (12) हिन्दुस्तानी के साझा चरित्र साम्प्रदायिक टकराव के साथ फीका।
   (13) हिन्दी को संस्कृतिनिष्ठ और उर्दू को फारसीनिष्ठ बनाने की कोशिश।
   (14) आर. वी. धुलेकर द्वारा हिन्दी को संविधान सभा की भाषा बनाने पर जोर।
   (15) तीन साल तक भाषा का मुद्दा संविधान सभा में चला।
   (16) 12 सितम्बर 1947 को धुलेकर के भाषण से हंगामा।
   (17) संविधान सभा की भाषा समिति द्वारा सुझाव।
   (18) देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी भारत की राजकीय भाषा माना जाए।
   (19) धीरे–धीरे इसे राष्ट्रभाषा बनाया जाए।
   (20) पहले 15 साल तक सरकारी कामों में अंग्रेजी का इस्तेमाल।
   (21) प्रत्येक प्रांत को अपने कामों के लिए एक क्षेत्रीय भाषा चुनने का अधिकार।
   (22) संविधान सभा की भाषा समिति द्वारा विभिन्न पक्षों को राष्ट्रभाषा के मुद्दे पर शांत करने के प्रयास।
   (23) यह दोनों का सुन्दर मिश्रण हो।
   (24) दूसरी भाषाओं के शब्दों को आसानी से ग्रहण कर सकें।
   (25) विदेशी भाषाओं के शब्दों को भी अपने में समा लें।
   (26) मानवीय विचारों और भावनाओ के पूरे समुच्चय को अभिव्यक्त करें।

(27) हिन्दुस्तानी के साझा चरित्र में महात्मा गाँधी की आस्था।

(संकेत पृष्ठ सं. 425 एन.सी.ई.आर.टी)

6. संविधान सभा में केन्द्र और राज्य के अधिकारों को लेकर चर्चा।
   (1) जवाहरलाल नेहरू एक शक्तिशाली केन्द्र के पक्ष में।
   (2) संविधान के मसविदे में विषयों की तीन सूचियाँ –
   केन्द्रीय सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची
   (3) पहली सूची के विषय केवल केन्द्र सरकार के अधीन।
   (4) दूसरी सूची के विषय केवल राज्य सरकार के अन्तर्गत।
   (5) तीसरी सूची के विषय केन्द्र और राज्य दोनों की साझा जिम्मेदारी।
   (6) संघों की तुलना में केन्द्र का अधिक विषयों पर नियंत्रण।
   (7) समवर्ती सूची में भी प्रांतों की इच्छाओं की उपेक्षा।
   (8) खनिज पदार्थों तथा प्रमुख उद्योगों पर केन्द्र का नियंत्रण।
   (9) अनुच्छेद 356 में गवर्नर की सिफारिश पर केन्द्र को राज्य के सारे अधिकार अपने हाथ में लेने का अधिकार।
   (10) संविधान में राजकोषीय संघवाद की भी एक जटिल व्यवस्था।
   (11) सीमा शुल्क व कंपनी कर से होने वाली आय केन्द्र सरकार के अधीन।
   (12) आयकर और आबकारी शुल्क में होने वाली आय राज्य और केन्द्र सरकारों में बाँटी गई।
   (13) राज्यस्तरीय शुल्क पूरी तरह राज्यों के अधीन।
   (14) जमीन और संपत्ति कर, बिक्री कर तथा बोतलबंद शराब पर राज्य सरकार अलग से कर वसूल कर सकती हैं।

(संकेत पृष्ठ सं. 423 एन.सी.ई.आर.टी)

7. अम्बेडकर द्वारा दमित जातियों के लिए पृथक निर्वाचिकाओं की मांग।
   (1) गाँधी जी द्वारा पृथक निर्वाचिका का विरोध।
   (2) दमित जातियों का स्थायी रूप से शेष समाज से कट जाने की आशंका।
   (3) अस्पृश्यता का हल केवल संरक्षण और बचाव के जरिए हल सम्भव नहीं।
   (4) दमितों की अपंवता जाति विभाजित समाज और नैतिक मूल्य–मान्यताओं के कारण।
   (5) जे. नागप्पा का कथन – संख्या की दृष्टि से हरिजन अल्पसंख्यक नहीं।
   (6) आबादी में उनका हिस्सा 20–25 प्रतिशत।

(7) शिक्षा से विहीन तथा शासन में हिस्सेदारी नहीं।
(8) के. जे. खाण्डेलकर – दमितों को हजारों सालों से दबाया जाना।
(9) सुझाव – अस्पृश्यता का उन्मूलन किया जाए।
(10) हिन्दू–मंदिरों तक सभी जातियों की पहुँच।
(11) निचली जातियों को विधायिकाओं और सरकारी नौकरियों में आरक्षण।
(12) सामाजिक भेदभाव को खत्मक करने हेतु सोच में बदलाव लाने की आवश्यकता।

(संकेत पृष्ठ सं. 421 एन.सी.ई.आर.टी)

विषय–15

अनुच्छेद आधारित प्रश्न (5 अंक वाले)

1. **"बहुत अच्छा महोदय– साहसिक शब्द, उदात्त शब्द"**

सोमनाथ लाहिड़ी ने कहा था।

महोदय, मैं पंडित नेहरू को इस बात के लिए मुबारकबाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने यह कहकर भारतीय जनता की भावना को इतने सटीक शब्दों में व्यक्त किया है कि भारत के लोग अंग्रेजों द्वारा थोपी गई किसी चीज़ को स्वीकार नहीं करेंगें। उन्होंने कहा कि इस तरह की जबरदस्ती पर असंतोष व आपत्ति व्यक्त की जाएगी और अगर आवश्यकता हुई तो हम संघर्ष की घाटी में उतरेंगे। बहुत अच्छा महोदय–साहसिक शब्द, उदात्त शब्द।

परन्तु देखना यह है कि इस चुनौती को आप कैसे और कब साकार करते हैं। महोदय, मसला यह हैं कि यह जबरदस्ती इसी समय की जा रही है। न केवल ब्रिटिश योजना ने भावी संविधान बना दिया है... जो अंग्रेजों की संतुष्टि पर आश्रित होगा बल्कि इससे यह भी संकेत मिलता है कि मामूली से मामूली मतभेद के लिए भी आपको संघीय न्यायालय तक दौड़ना होगा या वहाँ इंग्लैंड में जाकर नाचना पड़ेगा या ब्रिटिश प्रधानमंत्री कलेंमेट एटली या किसी और के दरवाजे पर दस्तक देनी होगी। केवल यही सच नहीं कि हम चाहे जो भी योजना क्यों न बनाएँ यह संविधान सभा ब्रिटिश बंदूकों, ब्रिटिश सेना, उनके आर्थिक व वित्तीय शिकंजे के साये में है और सत्ता का प्रश्न बुनियादी तौर पर अभी तय नहीं हुआ है, जिसका अर्थ यह निकलता है कि हमारा भविष्य अभी भी पूरी तरह तय नहीं हुआ है जिसका अर्थ यह निकलता है कि हमारा भविष्य अभी भी पूरी तरह हमारे हाथों में नहीं है। इतना ही नहीं, हाल ही में एटली तथा अन्य लोगों द्वारा दिए गए व्यक्तव्यों से यह भी स्पष्ट हो गया है कि अगर जरूरत पड़ी तो वे विभाजन से भी पीछे नहीं हटेंगे। महोदय इसका आशय यह है कि इस देश में कोई स्वतंत्रता नहीं है। जैसा कि अभी कुछ दिन पहले सरदार वल्लभभाई पटेल ने कहा था, हमारे पास केवल आपस में लड़ने की स्वतंत्रता है। हमें बस इतनी ही स्वतंत्रता मिली है...। इसलिए हमारा विनम्र सुझाव है कि यहाँ सवाल इस योजना की रूपरेखा के जरिए कुछ पा लेने का नहीं बल्कि यहाँ और अभी स्वतंत्रता की घोषणा करने और अंतरिम–सरकार, भारत की जनता से यह आह्वाहन करने का है कि वे आपस में लड़ने के बजाय अपने शत्रु को देखें जिसके हाथ में अभी भी कोड़ा है, वे ब्रिटिश साम्राज्यवाद को देखें–और उससे मिलकर लड़ने के लिए आगे बढ़ें और जब हम स्वतंत्र हो जाएँगे, तब हम अपने दावों का हल ढूढँ सकते हैं।

1. सोमनाथ लाहिड़ी पंडित जवाहर लाल नेहरू को किस बात पर मुबारकबाद देना चाहते हैं। 1
2. संविधान सभा ब्रिटिश प्रभाव में ही कार्य कर रही हैं वक्ता को ऐसा क्यों लगता है ? 2
3. "सरकारें कागज़ो से नहीं बनती। सरकार जनता की इच्छा की अभिव्यक्ति होती है – स्पष्ट कीजिए। 2

2. राष्ट्रीय भाषा की क्या विशेषताएं होनी चाहिए ?

अपनी मृत्यु से कुछ माह पहले महात्मा गाँधी ने भाषा के प्रश्न पर अपने विचार दोहराते हुए कहा थाः

यह हिंदुस्तानी न तो संस्कृतनिष्ठ हिंदी होनी चाहिए और न ही फारसीनिष्ठ उर्दू। यह दोनों का सुंदर मिश्रण होना चाहिए। उसे विभिन्न क्षेत्रिय भाषाओं से शब्द खुलकर उधार लेने चाहिए। विदेशी भाषाओं के ऐसे शब्द लेने में कोई हर्ज नहीं है जो हमारी राष्ट्रीय भाषा में अच्छी तरह और आसानी से घुलमिल सकते हैं। इस प्रकार हमारी राष्ट्रीय भाषा एक समृद्ध और शक्तिशाली भाषा होनी चाहिए जो मानवीय विचारों और भावनाओं के पूरे समुच्चय को अभिव्यक्ति दे सके। खुद को हिन्दी या उर्दू से बांध लेना देशभक्ति की भावना तथा समझदारी के विरूद्ध एक अपराध होगा।

प्रश्न 1 हिन्दुस्तानी भाषा का क्या अर्थ है? 1

प्रश्न 2 राष्ट्रीय भाषा की क्या विशेषताएं होनी चाहिए? 2

प्रश्न 3 हिन्दी की हिमायत करने वाले कुछ अन्य व्यक्तियों के नाम बताइये? 2

अभ्यास प्रश्न पत्र (हल सहित)

इतिहास (027)

कक्षा - बारहवीं

समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश:-

1) सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। कुछ प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने किए गए है। इस प्रश्न पत्र छह खंड है।

2) **खंड क** (प्रश्न संख्या 1 से 16) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1) अंक वाले है इनके उत्तर एक शब्द या एक पंक्ति में दीजिये। किन्हीं 15 प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

3) **खंड ख** (प्रश्न संख्या 17 से 18) स्रोत आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न 3 अंकों का है। प्रत्येक प्रश्न के 4 उप-भाग है जिनमे से किसी तीन उप-भागों के उत्तर दीजिये।

4) **खंड ग** (प्रश्न संख्या 19 से 23) में प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में दीजिये।

5) **खंड घ** (प्रश्न संख्या 24 से 26) में प्रत्येक प्रश्न 8 अंकों का है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अधिकतम 350 शब्दों में दीजिये।

6) **खंड ड** (प्रश्न संख्या 27 से 29) स्रोत आधारित प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है।

7) **खंड घ** (प्रश्न संख्या 30) मानचित्र संबंधी है, जिसमें लक्षणों को पहचानना तथा महत्वपूर्ण मदो को दर्शाना शामिल है। मानचित्र को उत्तर-पुस्तिका के साथ नत्थी कीजिए।

खंड क

किन्हीं 15 प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (1x5=15)

1. मगध की प्रारंभिक राजधानी थी : 1

(क) पाटलिपुत्र (ख) काशी

(ग) राजगृह (घ) मथुरा

2. भारतीय पुरातत्व का जनक किसे माना जाता है? 1

3. हड़प्पा सभ्यता अपनी जिस विशेषता के लिए सबसे अधिक जानी जाती है वह है:

(क) नगर योजना (ख) कृषि

(ग) व्यापार (घ) पशु पालन

4. ब्रिटिश संसद में पांचवी रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी थी सन्:

(क) 1814 में (ख) 1813 में

(ग) 1815 में (घ) 1816 में

5. नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और लिखिए की यह चित्र किस संदर्भ में है: 1

केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 5 के स्थान पर:
संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे:

(क) सरदार वल्लभभाई पटेल (ख) जवाहरलाल नेहरू

(ग) जी बी पंत (घ) बी आर अंबेडकर

6. कुलीन तंत्र क्या है ?

7. जियारत का अर्थ है : 1

(क) कृष्ण की भक्ति में गाया जाने वाला गीत।

(ख) बादशाह अकबर की दरगाह यात्रा

(ग) सूफी संतों के मजार की यात्रा।

(घ) सूफी संतों के जन्मदिवस पर मोमबत्ती जलाना।

8. ''जब वे एक पत्थर से बने सर्प को देखते हैं तो उस पर दूध चढ़ाते हैं, यदि असली सांप आ जाए तो कहते हैं मारो मारो।'' 1

बसवन्ना द्वारा रचित इस वचन का संदर्भ क्या है?

9. जोतेदार थे : 1

(क) सुरक्षा बल (ख) अमीर किसान

(ग) कर संग्राहक (घ) एक पहाड़ी जनजाति

10. निम्न युग्मों में से सही युग्म का चयन कीजिए : 1

I. डोमिनगो पेस : फारस

II. निकोलो द कांटी : इटली

III. दुयार्ते बारबोसा : चीन

(क) I और II दोनों सही है। (ख) सिर्फ II सही है

(ग) I, II और III सभी सही है (घ) सिर्फ III सही है

11. गांधी जी के राजनीतिक सफर तथा राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास को सूत्रबद्ध करने के लिए उपयोगी किन्हीं दो स्त्रोतों का नाम लिखिए। 1

12. संविधान सभा में एक शक्तिशाली केंद्र सरकार की हिमायत में दी जाने वाली किसी एक दलील को लिखिए। 1

13. हड़प्पा सभ्यता में निचला शहर दुर्ग से किस प्रकार भिन्न था? 1

14. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक के कथन (A) के रूप में और दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है:- 1

कथन (A) - सातवाहन शासन में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण थी।

कारण (R) - सातवाहन शासकों को उनके मातृ नाम से चिन्हित किया जाता था।

(क) केवल कथन (A) सही है।

(ख) केवल कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है।

15. राजमहल की पहाड़ियों के सन्दर्भ में कुदाल किसका प्रतीक थी? 1

16. निम्न दुग्मों में से सही दुग्म का चयन कीजिए। 1

I. अल-बिरूनी : उज़्बेकिस्तान

II. इब्न-बतूत : मोरक्को

III. फ्रास्वां बर्नियर : इटली

(क) I और II दोनों सही है (ख) सिर्फ II सही है

(ग) I, II और III सभी सही है (घ) सिर्फ III सही है।

खण्ड – (ख)

17. नीचे दिए गए स्त्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्न में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अग्नि की प्रार्थना

हे शक्तिशाली देव, आप हमारी आहुति देवताओं तक ले जाएँ! हे बुदधिमंत, आप तो सबके दाता हैं! हे पुरोहित, हमें खूब सारे खादय पदार्थ दें।

हे अग्नि यज्ञ के द्वारा हमारे लिए प्रचुर धन ला दें। हे अग्नि, जो आपकी प्रार्थना करता है उसके लिए आप सदा के लिए पुष्टिवर्धक अद्भुत गाय ला दें। हमें एक पुत्र मिले जो हमारे वंश को आगे बढ़ाये.....

इस तरह के छंद एक खास तरह की संस्कृत में रचे गए थे जिसे वैदिक संस्कृत कहा जाता था। ये स्त्रोत पुरोहित परिवारों के लोगों को मौखिक रूप में सिखाये जाते थे।

A. उपर्युक्त छंद में जिस देवता की प्रार्थना की गई है, वह है :

(क) सूर्य (ख) अग्नि

(ग) इन्द्र (घ) वायु

B. यज्ञ के उद्देश्य निम्न में क्या नहीं थे :

(क) पुत्र की प्राप्ति (ख) धन की प्राप्ति

(ग) पुत्री की प्राप्त (घ) गाय की प्राप्ति

C. सही कथन का चयन कीजिए :

I. अग्नि देव मनुष्य की आहुति को देवताओं तक ले जाते थे।

II. पुष्टि वर्धक गाय के लिए लोग अग्नि की प्रार्थना करते थे।

(क) सिर्फ I (ख) सिर्फ II

(ग) I और II दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

D. ऋग्वेद की शिक्षा दी जाती थी:

(क) लिखित रूप में

(ख) ध्यान लगाकर

(ग) लिखित रूप से और ध्यान लगाकर

(घ) मौखिक रूप से

18. इस चित्र को ध्यान से देखिए और किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 1+1+1

A. प्रस्तुत इमारत चित्र संबंधित है :-

(क) सल्तनत काल से (ख) विजयनगर साम्राज्य से

(ग) मुगल काल से (घ) ब्रिटिश काल से

B. प्रस्तुत इमारत चित्र घनिष्ठ संबंधों को दर्शाता है :-

(क) अलाउद्दीन खिलजी और निजामुद्दीन औलिया के बीच

(ख) चिश्तियों और मुगल राज्य के बीच

(ग) भक्ति संतों और उनके उपासक के बीच

(घ) विजयनगर के राजा और उनके नायकों के बीच

C. यह इमारत बनाई गई थीं :

(क) अकबर के द्वारा (ख) शाहजहां के द्वारा

(ग) कृष्ण देव राय के द्वारा (घ) शेख मोइनुद्दीन चिश्ती के द्वारा

D. प्रस्तुत इमारत स्थित है :

(क) दिल्ली में (ख) हंपी में

(ग) आगरा में (घ) फतेहपुर सीकरी में

केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 18 के स्थान पर : दिए गए स्त्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्न में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

''महान'' और ''लघु'' परंपराएं

महान और लघु जैसे शब्द बीसवीं शताब्दी के समाजशास्त्री रॉबर्ट रेडफील्ड द्वारा एक कृषक समाज के सांस्कृतिक आचरणों का वर्णन करने के लिए मुद्रित किए गए। इस समाजशास्त्री ने देखा कि किसान उन कर्मकांडो और पद्धतियों का अनुकरण करते थे जिनका समाज के प्रभुत्वशाली वर्ग जैसे पुरोहित और राजा द्वारा पालन किया जाता था। इन कर्मकांडो को रेडफील्ड ने ''महान'' परंपरा की संज्ञा दी। साथ ही कृषक समुदाय अन्य लोकाचारों का भी पालन करते थे जो इस महान परिपाटी से सर्वथा भिन्न थे। उसने इन्हें देखा कि महान और लघु दोनों ही परंपराओं में समय के साथ हुए पारस्परिक आदानप्रदान के कारण परिवर्तन हुए।

हालांकि विद्वान इन प्रक्रियाओं और वर्गीकरण के महत्व से इंकार नहीं करते तथापि वे इन शब्दों में जो पदसोपानात्मक स्वर उभर कर आता है उसकी अवमानना करते हैं। इसे लक्षित करने का एक तरीका है इन शब्दों का उद्धरण चिन्ह के साथ प्रस्तुत करना जैसे ''लघु'' और ''महान''।

A. महान परंपरा से तात्पर्य है :

(क) जनजातियों की परंपरा (ख) गैर ब्राह्मणीय परंपरा

(ग) रॉबर्ट रेडफील्ड की परंपरा (घ) राजा और पुरोहित की परंपरा

B. रॉबर्ट रेडफील्ड था :

(क) एक समाजशास्त्री (ख) एक नेता

(ग) एक वैज्ञानिक (घ) एक संत

C. कृषक समाज के आचरण के संबंध में सही विकल्प का चयन कीजिए :-

(क) कृषक समुदाय लघु परंपरा से घृणा करते थे।

(ख) कृषक समुदाय केवल पुरोहित और राजा द्वारा अनुकरण किए जाने वाली परंपराओं का पालन करते थे।

(ग) लघु और महान किसी भी परंपरा से उनका कोई संबंध नहीं था।

(घ) किसान लघु और महान दोनों परंपराओं का पालन करते थे।

D. सही कथन का चयन कीजिए :

i. लघु और महान शब्द से पद सोपानात्मक स्वर उभर कर आता है।

ii. किसानों को सिर्फ प्रभुत्वशाली वर्ग की परंपराओं का अनुपालन करना चाहिए।

(क) सिर्फ I (ख) सिर्फ II

(ग) I और II दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

खंड ग

19. '18 वी शताब्दी के दौरान बंगाल के जमीदारों की सत्ता को ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा नियंत्रित किया गया।' स्पष्ट कीजिए।

20. 1857 के घटनाक्रम को निर्धारित करने में धार्मिक विश्वासों की किस हद तक भूमिका थी? 3

21. बौद्ध सामाजिक संविदा का सिद्धांत किस प्रकार पुरुष सूक्त में वर्णित ब्राहमण वादी दृष्टिकोण से भिन्न था? 3

22. शासक सूफी संतों से अपने संबंध को दर्शाने के लिए उत्सुक क्यों थे? 3

23. रैयत से क्या अभिप्राय है? खुद-काश्त और पाहि-काश्त में अंतर स्पष्ट कीजिए। 1+2

खंड घ

24. मौसम के दो मुख्य चक्रों के दौरान 16वीं तथा 17वीं शताब्दियों के दौरान कृषि किस प्रकार की जाती थी। विभिन्न फसलों को उदाहण देकर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

16वीं और 17वीं शताब्दियों के दौरान कृषि समाज में महिलाओं की भूमिका का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

25. 'वर्ण व्यवस्था और राज्य-कर्म से संबंधित ब्राह्मणीय नियमों का सर्वत्र अनुसरण नहीं होता था।' पुष्टि कीजिए। 8

अथवा

''प्राचीन सामाजिक मूल्यों के अध्ययन के लिए महाभारत एक बेहतर स्त्रोत है।'' इस कथन के पक्ष में युक्तियुक्त विचार प्रस्तुत कीजिए।

26. 19 सितंबर 1947 को दिल्ली में महात्मा गांधी का आगमन बड़ी लंबी और कठोर गर्मी के बाद बरसात की फुहारों के आने जैसा था। इस कथन का विश्लेषण कीजिए। 8

अथवा

"असहयोग शांति की दृष्टि से नकारात्मक किंतु प्रभाव की दृष्टि से बहुत सकारात्मक था। यह स्वशासन के लिए एक प्रशिक्षण था।'' इस कथन की व्याख्या असहयोग आंदोलन के प्रभाव के संदर्भ में कीजिए।

खंड ङ

27. दिए गए उद्धरण को ध्यानपूर्वक पढ़िये व दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1+2+2

राजा की वेदना

जब देवानापिय पियदस्सी ने अपने शासन के 8 वर्ष पूरे किए तो उन्होंने कलिंग(आधुनिक तटवर्ती उड़ीसा)पर विजय प्राप्त की

डेढ़ लाख पुरुषों को निष्कासित किया गया; एक लाख मारे गए और इससे भी ज्यादा की मृत्यु हुई।

कलिंग पर शासन स्थापित करने के बाद देवानापिय पियदस्सी धम्म के गहन अध्ययन, धम्म के स्नेह और धम्म के उपदेश में डूब गए हैं।

यही देवानांपिय के लिए कलिंग की विजय का पश्चाताप है।

दवानांपिय के लिए यह बहुत वेदनादायी और निंदनीय है कि जब कोई किसी राज्य पर विजय प्राप्त करता है तो पराजित राज्य का हनन होता है, वहां लोग मारे जाते हैं, निष्कासित किए जाते हैं।

27.1. देवानांपिय पियदस्सी किसे कहा जाता था?

27.2. इतिहास के स्त्रोत के रूप में अभिलेखों की क्या सीमाएं हैं?

27.3. कलिंग के युद्ध का अशोक पर क्या प्रभाव पड़ा?

28. निम्नलिखित उद्धरण को सावधानीपूर्वक पढ़िए वह उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2+1+2

कॉलिन मैकेंजी

1754 ई. में जन्मे कॉलिन मैकेंजी ने एक अभियंता सर्वेक्षक तथा मानचित्रकार के रूप में प्रसिद्धि हासिल की। 1815 में उन्हें भारत का पहला सर्वेयर जनरल बनाया गया और 1821 में अपनी मृत्यु तक वे इस पद पर बने रहे। भारत के अतीत को बेहतर ढंग से समझने और उपनिवेश के प्रशासन को आसान बनाने के लिए उन्होंने इतिहास से संबंधित स्थानीय परंपराओं का संकलन तथा ऐतिहासिक स्थलों का सर्वेक्षण करना आरंभ किया। वे कहते हैं, ''ब्रिटिश प्रशासन के प्रभाव में आने से पहले दक्षिण भारत खराब प्रबंधन की दुर्गति से लंबे समय तक जूझता रहा।'' विजयनगर के अध्ययन से मैकेंजी को यह विश्वास हो गया कि कंपनी, ''स्थानीय लोगों के अलग-अलग - कबीलों, जो इस समय भी जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा थे, को अब भी प्रभावित करने वाले इनमें से कई संस्थाओं, कानूनों तथा रीतिरिवाजों के विषय में बहुत महत्वपूर्ण जानकारियां'' हासिल कर सकती थी।

28.1. कॉलिन मैकेंजी कौन था?

28.2. कॉलिन ने किस प्राचीन शहर की खोज की?

28.3. कॉलिन मैकंजी ने सर्वेक्षण क्यों प्रारंभ किया?

29. निम्नलिखित उद्धरण को सावधानीपूर्वक पढ़िए वह उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 1+2+1

''खंडित निष्ठा के लिए कोई जगह नहीं''

गोविंद वल्लभ पंत ने कहा कि निष्ठावान नागरिक बनने के लिए लोगों को समुदाय और खुद को बीच में रख कर सोचने की आदत छोड़नी होगी :

लोकतंत्र की सफलता के लिए व्यक्ति को आत्मानुशासन की कला का प्रशिक्षण लेना होगा। लोकतंत्र में व्यक्ति को अपने लिए कम तथा औरों के लिए ज्यादा फिक्र करनी चाहिए। यहाँ खंडित निष्ठा के लिए कोई जगह नहीं है। सारी निष्ठाएँ केवल राज्य पर केंद्रित होनी चाहिए। यदि किसी लोकतंत्र में आप प्रतिस्पर्धी निष्ठाएँ रख देते हैं या ऐसी व्यवस्था खड़ी कर देते हैं जिसमें कोई व्यक्ति या समूह अपने अपव्यय पर अंकुश लगाने की बजाय बृहतर या अन्य हितों की जरा भी परवाह नहीं करता, तो ऐसे लोकतंत्र का डूबना निश्चित है।

संविधान सभा बहस, खंड 2

29.1. गोविंद वल्लभ पंत के अनुसार लोकतंत्र में एक निष्ठावादी नागरिक के कोई दो अभिलक्षण लिखिए।

29.2. संविधान लिखते समय पृथक निर्वाचिका की मांग क्यों की गई थी?

29.3. गोविंद वल्लभ पंत पृथक निर्वाचिका की मांग के विरुद्ध क्यों थे? दो कारण लिखिए।

खंड च

(मानचित्र प्रश्न)

30. 30.1. भारत के दिए गए राजनीतिक मानचित्र पर निम्नलिखित स्थलों को अंकित कीजिए- 1+1+1

a) लोथल - एक हड़प्पा स्थल

अथवा

सांची - एक प्रमुख बौद्ध स्थल

b) अजमेर - अकबर के अधीन एक क्षेत्र

अथवा

कानपुर- 1857 के विद्रोह का एक मुख्य केंद्र

c) अमृतसर

30.2. भारत के दिए गए इसी राजनैतिक मानचित्र पर राष्ट्रीय आंदोलन से संबन्धित दो स्थल A, B अंकित किए गए है, उन्हें पहचानिए और उनके नाम लिखिए। 1+1

नोट: निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधितों के लिए प्रश्न संख्या 30.1 एवं 30.2 के स्थान पर हैं।

30.1. छठी शताब्दी ईसा पूर्व के किन्हीं तीन महत्वपूर्ण नगरों के नाम लिखिए।

अथवा

कोई तीन बौद्ध स्थलों का नाम लिखिए।

30.2. 1857 के विद्रोह के किन्हीं दो केंद्रों के नाम लिखिए।

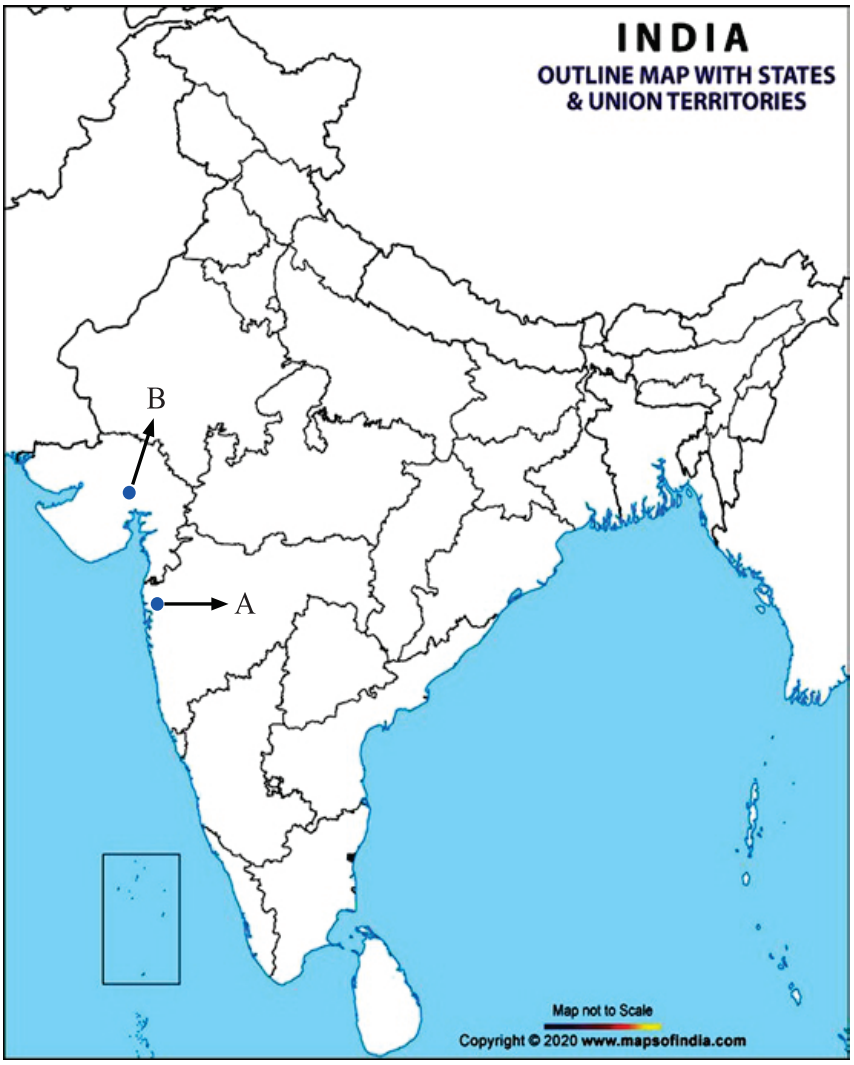

अंक योजना

अभ्यास प्रश्न पत्र इतिहास (027)

कक्षा - बारहवीं

खंड क

1.	ग) राजगृह	1
2.	सर अलेक्जेंडर कनिघंम	1
3.	(क) नगर योजना	
4.	(ख) 1813 में	1
5.	संविधान पर हस्ताक्षर के समय का **केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए** घ) डॉ बी.आर. अंबेडकर	1
6.	ऐसी सरकार जिसमें शासन सत्ता एक समूह के हाथों में होती है	1
7.	(ग) सूफी संतों के मजार की यात्रा।	1
8.	अंधविश्वासों पर कुठाराघात	1
9.	(ख) अमीर किसान	1
10.	(ख) सिर्फ II सही है।	1
11.	अखबार,ए बँच ऑफ ओल्ड लेटर्स (कोई अन्य मान्य स्त्रोत)	1
12.	देश को एकजुट रखने के लिए (कोई अन्य मान्य बिंदु)	1
13.	दुर्ग ऊंचाई पर पश्चिम दिशा में जबकि निचला शहर आम लोगों के लिए पूरब में स्थित (कोई अन्य मान्य तथ्य)	1
14.	(ख) केवल कारण (R) सही है।	1
15.	पहाड़िया लोगों का	1
16.	(क) I और II दोनों सही है।	1

खंड ख

17. A. (ख) अग्नि 1+1+1=3

B. (ग) पुत्री की प्राप्ति

C. (ग) I और II दोनों

D. (घ) मौखिक रूप से

18. A. (ग) मुग़ल काल से 1+1+1=3

B. (ख) चिश्तियों और मुगल राज्य के बीच

C. (क) अकबर के द्वारा

D. (घ) फतेहपुर सीकरी में

केवल दृष्टिबधितों के लिए : प्रश्न संख्या 18 के स्थान पर

A. (घ) राजा और पुरोहित की परंपरा 1+1+1=3

B. (क) एक समाजशास्त्री

C. (घ) किसान लघु और महान दोनों परंपराओं का पालन करते थे।

D. (क) सिर्फ

खंड ग

19. 1. जमींदारों की सैन्य टुकड़ियों को भंग कर दिया गया। 3
2. जमींदारों से न्याय और स्थानीय पुलिस की व्यवस्था करने की शक्ति छीन ली गई।
3. जमींदारों की कचहरियों को कंपनी द्वारा नियुक्त कलेक्टर की देखरेख में रखा गया।
4. कोई अन्य मान्य बिन्दु

20. i) ईसाई प्रचारकों की गतिविधियों और धर्मांतरण का खतरा 3

ii) धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में कंपनी के हस्तक्षेप से असुरक्षा की भावना।

iii) धर्म के अलावा सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक रूप से परायी, हृदयहीन और दमनकारी व्यवस्था।

iv) कोई अन्य मान्य बिन्दु

21. I) बौद्ध सामाजिक संविदा के अनुसार सामाजिक अनुबंध के अंतर्गत राजा का पद लोगों द्वारा चुने जाने पर जबकि पुरुषसूक्त के अनुसार यह दैवीय व्यवस्था। 3

ii) बौद्ध सामाजिक संविदा के अनुसार आर्थिक और सामाजिक संबंधों को बनाने में मानवीय कर्म का हाथ जबकि पुरुषसूक्त ने चारों वर्णों की उत्पत्ति ब्रह्मा के शरीर से।

iii) बौद्ध सामाजिक संविदा के अनुसार यदि मनुष्य एक प्रणाली को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार थे तो भविष्य में उसमें परिवर्तन भी ला सकते थे जबकि पुरुषसूक्त के अनुसार यह दैवीय व्यवस्था।

iv) कोई अन्य मान्य बिन्दु

22. i) सूफी संतों की धर्मनिष्ठा, विद्वता और लोगों का उन पर विश्वास। 3

ii) अधिकांश प्रजा इस्लाम को मानने वाली नहीं थी और सूफी संतों पर उनका विश्वास था।

iii) आम जनता का सूफी संतों की तरफ झुकाव था।

iv) कोई अन्य मान्य बिन्दु।

23. i) मुगलकाल भारतीय-फारसी स्रोत किसान के लिए रैयत या मुजरियान शब्द का इस्तेमाल करते हैं।

ii) खुदकाश्त के किसान थे जो उन्हीं गाँव में रहते थे। जिनमें उनकी जमीन थी।

iii) पादि-काश्त वे किसान थे जो दूसरे गांव में ठेके पर खेती करने आते थे।

iv) कोई अन्य मान्य बिन्दु।

खंड घ

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

24. (1) खेती मौसम के दो मुख्य चक्रों – खरीफ (पतझड़ में) और रबी (बसन्त में)

(2) सूखे इलाकों और बंजर जमीन को छोड़कर ज्यादातर जगहों पर साल में कम से कम दो फसलें होती थीं।

(3) जहाँ बारिश या सिंचाई के साधन हर वक्त मौजूद वहाँ साल में तीन फसलें भी, अतः पैदावार में भारी विविधता।

(4) आइन के अनुसार, आगरा में 39 किस्म की, दिल्ली में 43 फसलों की पैदावार और बंगला में सिर्फ चावल की 50 किस्में पैदा होती थीं।

(5) कपास, गन्ना, तिलहन और दलहन जैसी नकदी फसलों की पैदावार।

(6) पेट भरने के लिए होने वाले उत्पदन और व्यापार के लिए किए जाने वाले उत्पादन एक दूसरे से जुड़े हुए।

(7) टमाटर, आलू, अनानास, पपीता, मिर्च, मक्का का नई दुनिया से भारत आना।

(8) कोई अन्य मान्य बिन्दु (समग्रता में मूल्यांकन)

अथवा

(1) महिलाएँ और मर्द कंधे से कंधा मिलाकर खेतों में काम करते।

(2) मर्द खेत जोतते, हल चलाते और महिलाएँ बुआई, निराई और कटाई के साथ पकी हुई फसल का दाना निकालती।

(3) महिलाओं की जैव वैज्ञानिक क्रियाओं को लेकर पूर्वाग्रह

(4) दस्तकारी के काम जैसे सूत कातना, बर्तन बनाने के लिए मिट्टी को साफ करना और गूँथना और कपड़ों पर कढ़ाई जैसे कार्य महिलाओं के श्रम पर निर्भर।

(5) वस्तु का जितना अधिक वाणिज्यीकरण, उतना अधिक महिलाओं के श्रम की माँग।

(6) महिलाएँ न सिर्फ खेतों में काम करती बल्कि जरूरत पड़ने पर नियोक्ताओं के घर और बाजार भी जाती।

(7) बच्चे पैदा करने की काबिलियत की वजह से वे महत्त्वपूर्ण संसाधन।

(8) तलाकशुदा और विधवाएँ दोनों की कानूनन शादी कर सकती थीं।

(9) कोई अन्य मान्य बिन्दु (समग्रता में मूल्यांकन)

25. I) शास्त्रों के अनुसार केवल क्षत्रिय राजा हो सकते थे, किन्तु अनेक महत्वपूर्ण राजवंशों की उत्पत्ति अन्य वर्णों से भी हुई थी जैसे मौर्य वंश, शुंग और कण्व वंश

ii) वस्तुत: राजनीतिक सत्ता का उपभोग हर वह व्यक्ति कर सकता था जो समर्थन और संसाधन जुटा सके। राजत्व क्षत्रिय कुल में जन्म लेने पर शायद ही निर्भर करता था।

iii) शक शासक जो मध्य एशिया से भारत आए को ब्राह्मण मलेच्छ, बर्बर अथवा अन्यदेशीय मानते थे।

iv) सातवाहन कुल के सबसे प्रसिद्ध शासक गोतमी-पुत्त सिरी-सातकनि ने स्वयं को अनूठा ब्राह्मण और साथ ही क्षत्रियों के दर्प का हनन करने वाला बताया था।

v) सातवाहन स्वयं को ब्राह्मण वर्ण का बताते थे जबकि ब्राह्मणीय शास्त्र के अनुसार राजा को क्षत्रिय होना चाहिए।

vi) सातवाहनों ने उन लोगों से वैवाहिक संबंध स्थापित किए जो इस वर्ण व्यवस्था से ही बाहर थे।

vii) सातवाहन अंतर्विवाह पद्धति का पालन करते थे न कि बहिर्विवाह प्रणाली का जो ब्रह्मणीय ग्रंथों में प्रस्तावित है।

viii) कई व्यापारी ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ण से।

ix) प्रभावती गुप्त द्वारा वर्ण व्यवस्था के विपरीत अग्रहार दान करना

x) सातवाहन शासकों द्वारा माँ के गोत्र से पहचाना जाना।

xi) कोई अन्य मान्य बिन्दु

अथवा

i) बंधुता के रिश्तों में परिवर्तन : एक स्तर पर महाभारत इसी की कहानी है। यह बांधवों के दो दलों कौरव और पांडव के बीच भूमि और सत्ता को लेकर हुए संघर्ष का चित्रण करती है। दोनों ही दल कुरु देश से संबंधित थे। यह संघर्ष एक युद्ध में परिणत हुआ जिसमें पांडव विजयी हुए। 8

ii) महाभारत की मुख्य कथावस्तु ने पितृवंशिकता के आदर्श को सुदृढ़ किया।

iii) ऊंची प्रविष्ठा वाले परिवारों की कम उम्र की कन्याओं और स्त्रियों का जीवन बहुत सावधानी से नियमित किया जाता था। जिससे 'उचित' समय और 'उचित' व्यक्ति से उनका विवाह किया जा सके।

iv) कन्यादान अर्थात् विवाह में कन्या की भेंट को पिता का महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य माना गया।

v) उस समय अंतर्विवाह, बहिर्विवाह, बहुपत्नी प्रथा और बहुपति प्रथा प्रचलित थी।

vi) स्त्री का स्थान महत्वपूर्ण था। द्रौपदी का अपमान महाभारत युद्ध का कारण बना। कुंती का चरित्र और सम्मानजनक स्थिति स्त्रियाँ की अच्छी स्थिति का उदाहरण है। गांधारी ने भी दुर्योधन को युद्ध न करने का परामर्श दिया जिसे दुर्योधन ने नहीं माना और युद्ध में हारा।

vii) राजाओं में ध्रुत क्रीडा का प्रचालन यह प्रदर्शित करता है कि उनमें बुराइयाँ आ गई थी। कौरवों द्वारा छल कपट का प्रयोग नैतिक पतन को प्रदर्शित करता है।

viii) ब्राह्मणों ने समाज के लिए विस्तृत आचार संहिताएँ तैयार की।

ix) कोई अन्य मान्य बिंदु।

26. I) सांप्रदायिक सद्भाव बहाल करने के लिए गांधीजी ने अहिंसा के अपने सिद्धान्त को एक बार फिर आज़माया। 8

ii) वे पूर्वी बंगाल के नोआखली (वर्तमान बांग्लादेश) से बिहार के गाँवों में और उसके बाद कलकत्ता व दिल्ली के दंगों में झुलसी झोपड़-पट्टियों की यात्रा पर निकल पड़े।

iii) उनकी कोशिश थी कि हिन्दू मुसलमान एक दूसरे को ना मारें।

iv) हर जगह उन्होंने अल्पसंख्यक समुदाय को, हिन्दू अथवा मुस्लिम को दिलासा दी।

v) दिल्ली में, उन्होंने दोनों समुदायों में पारस्परिक भरोसा और विश्वास बनाने की कोशिश की।

vi) जान बचाने के लिए भागकर पुराने क़िले के भीड़ भरे शिविर में पनाह लेने वाले शाहिद अहमद देहलवी नामक दिल्ली के एक मुसलमान ने 9 सितंबर 1947 को दिल्ली में गांधीजी के आगमन को ''बड़ी लंबी और कठोर गर्मी के बाद बरसात की फुहारों के आने, जैसा महसूस किया।

vii) देहलवी ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि मुसलमान एक-दूसरे से कहने लगे थे : ''अब दिल्ली बच जाएगी''।

viii) दिल्ली में जब गांधीजी देखा कि दिल्ली का दिल कहलाने वाले चाँदनी चौक की सड़क पर एक भी मुसलमान नहीथा। उसी शाम को अपने भाषण में उन्होंने कहा, ''हमारे लिए इससे ज्यादा शर्म की बात और क्या हो सकती है कि चाँदनी चौक में एक भी मुसलमान नहीं है।

ix) दिल्ली में मुसलमानों को शहर से बाहर खदेड़ने की सोच से तंग आकर उन्होंने अनशन शुरु कर दिया था जिसमें पाकिस्तान से आए हिंदू और सिख शरणार्थी भी अनशन में उनके साथ बैठते थे।

x) मौलाना आज़ाद ने लिखा है कि इस अनशन का असर, ''आसमान की बिजली जैसा रहा। लोगों को मुसलमानों के सफ़ाए के अभियान की निरर्थकता दिखाई देने लगी।

xi) कोई अन्य मान्य बिन्दु
(समग्रता में मूल्यांकन)

अथवा

i) असहयोग से पहले गांधीजी ने चंपारण, खेड़ा और अहमदाबाद में सफलतापूर्वक स्थानीय आंदोलन चलाए।

ii) रौलट एक्ट के खिलाफ आंदोलन और एक सच्चे राष्ट्रीय नेता के रूप में उभरना।

iii) गांधीजी के अनुसार असहयोग का ठीक से पालन किया जाए तो भारत एक वर्ष के अंदर स्वराज प्राप्त कर लेगा।

iv) असहयोग आंदोलन के दौरान विद्यार्थियों ने स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार किया।

v) वकीलों ने अदालत में जाने से मना कर दिया।

vi) कई कस्बों और नगरों में श्रमिक-वर्ग हड़ताल पर चला गया। जिससे 70 लाख कार्यदिवसों का नुकसान हुआ था।

vii) देहात भी असंतोष से आंदोलित हो रहा था।

viii) उत्तरी आंध्रा की पहाड़ी जनजातियों ने वन्य कानूनों की अवहेलना कर दी।

ix) अवध के किसानों ने कर नहीं चुकाए।

x) कुमाऊँ के किसानों ने औपनिवेशिक अधिकारियों का सामान ढोने से मना कर दिया।

xi) इस सबके लिए प्रतिवाद, परित्याग और स्व-अनुशासन आवश्यक थे। वह स्वशासन के लिए एक प्रशिक्षण था।'

1857 के विद्रोह के बाद पहली बार असहयोग आंदोलन के परिणामस्वरूप अंग्रेजी राज्य की नींव हिल गई।

फरवरी 1922 में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रांत के चौरी-चौरा पुरवा में एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी। इस अग्निकांड में कई पुलिस वालों की जान चली गई। हिंसा के कारण गांधीजी ने यह आंदोलन तत्काल वापस ले लिया।

xii) महात्मा गांधी के अमरीकी जीवनी-लेखक लुई फिशर ने लिखा है कि 'असहयोग भारत और गांधीजी के जीवन के एक युग का ही नाम हो गया। असहयोग शांति की दृष्टि से नकारात्मक किन्तु प्रभाव की दृष्टि से बहुत सकारात्मक था।

xiii) कोई अन्य मान्य बिन्दु

(समग्रता में मूल्यांकन)

खंड ङ

27. 27.1) राजा अशोक मौर्य को 1+2+2=5

27.2) i) अक्षरों का हल्के ढंग से उत्कीर्ण होना।

ii) अक्षरों का लुप्त हो जाना

iii) कोई अन्य मान्य बिंदु (कोई दो बिंदु)

27.3) I) वेदनादायी था और पश्चाताप हुआ।

ii) युद्ध की जगह धम्म नीति को अपनाया।

iii) कोई अन्य मान्य बिन्दु (कोई दो बिन्दु)

28. 28.1. i) एक अभियंता, सर्वेक्षक तथा मानचित्रकार 2+1+2=5

ii) भारत का पहला सर्वेयर जनरल

iii) कोई अन्य मान्य बिन्दु (कोई दो बिन्दु)

28.2. हम्पी की

28.3. i) भारत के अतीत को बेहतर ढंग से समझने के लिए

ii) उपनिवेश के प्रशासन को आसान बनाने के लिए

iii) कोई अन्य मान्य बिन्दु (कोई दो बिन्दु)

29. 29.1. i) समुदाय और खुद को बीच में रख कर सोचने की आदत ने हो। 1+2+2=5

ii) आत्मानुशासन हो।

iii) कोई अन्य मान्य बिन्दु (कोई दो बिन्दु)

29.2. समुदायों के बीच मतभेद कम करके समानता लाने के लिए।

(कोई अन्य मान्य बिन्दु)

29.3. i) इससे निष्ठा खंडित हो जाएगी जबकि सारी निष्ठाएँ केवल राज्य पर केन्द्रित होनी चाहिए।

ii) लोकतन्त्र में प्रतिस्पर्धी निष्ठाएँ होने से लोकतन्त्र का डूबना निश्चित है।

iii) कोई अन्य मान्य बिन्दु (कोई दो बिन्दु)

खंड च

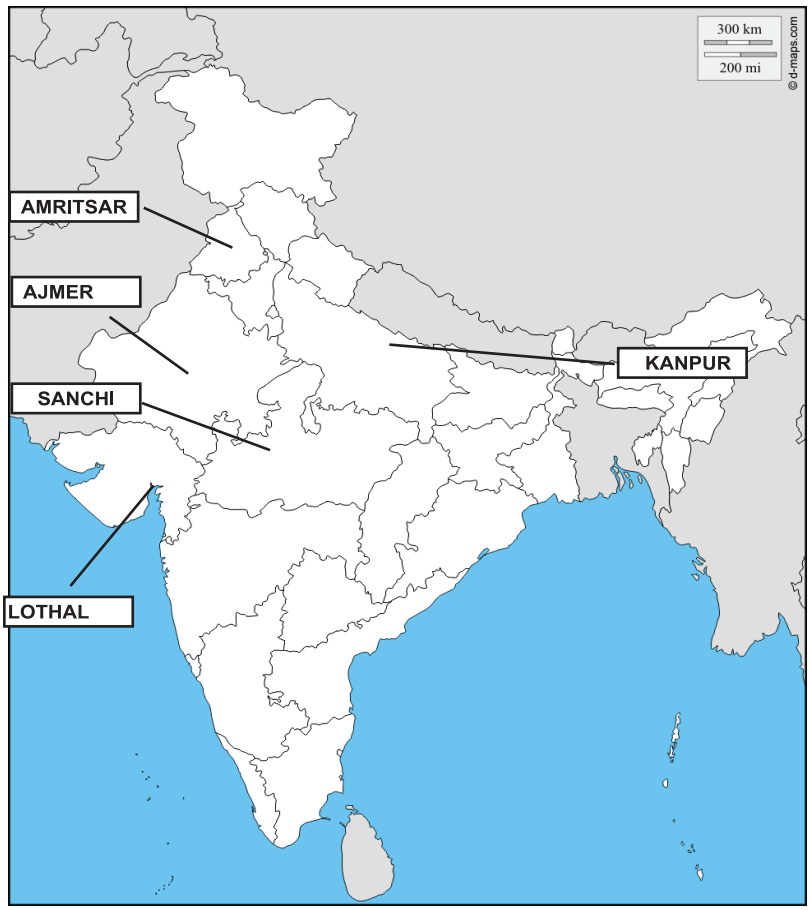

30.2) A) बंबई 1+1=2

B) अहमदाबाद

दृष्टिबाधित परिक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 30.1 एवं 30.2 के स्थान पर

30.1. मथुरा, वाराणसी, उज्जैन (अन्य प्रासंगिक स्थल भी मान्य) (कोई तीन)

अथवा

सारनाथ, बोध गया, कुशीनगर, लुम्बिनी, श्रावस्ती (अन्य प्रासंगिक स्थल भी मान्य) (कोई तीन)

30.2. दिल्ली, मेरठ, लखनऊ, बनारस ग्वालियर, जबलपुर, आगरा, (अन्य प्रासंगिक स्थल भी मान्य) (कोई दो)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

विषय-1

11-(ग)	12-(क)	13-(ख)	14-(ग)
15-(ख)	16-(ख)	17-(ग)	18-(ख)
19-(क)	20-(घ)	21-(पुरोहित राज्य)	

विषय-2

11-(ख)	12-(ग)	13-(क)	14-(घ)
15-(क)	16-(ग)	17-(क)	18-(घ)
19-(घ)	20-(क)	21-(सिर्फ शीर्ष)	

विषय-3

11-(ख)	12-(घ)	13-(ग)	14-(क)
15-(घ)	16-(ख)	17-(ख)	18-(क)
19-(घ)	20-(ग)	21-(श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए)	

विषय-4

11-(घ)	12-(ग)	13-(ख)	14-(क)
15-(ग)	16-(घ)	17-(क)	18-(ख)
19-(क)	20-(घ)	21-(धर्म चक्रप्रवर्तन)	

विषय-5

11-(घ)	12-(ख)	13-(घ)	14-(क)
15-(ग)	16-(ख)	17-(घ)	18-(ग)
19-(क)	20-(ग)	21-(फ्रांस्वा बर्नियर)	

विषय-6

11-(घ)	12-(घ)	13-(क)	14-(ख)
15-(ग)	16-(क)	17-(ग)	18-(क)
19-(क)	20-(घ)	21-(बौद्ध देवी-मारिची)	

विषय-7

11-(ग)	12-(घ)	13-(ख)	14-(क)
15-(घ)	16-(ख)	17-(क)	18-(घ)
19-(ख)	20-(घ)	21-(कमल महल)	

विषय-8

11-(ख)	12-(ग)	13-(क)	14-(घ)
15-(क)	16-(ख)	17-(घ)	18-(क)
19-(ख)	20-(क)	21-(अपने आश्रयदाता को अकबरनामा की पांडुलिपि दे रहे हैं)	

15-(क) 16-(ग) 17-(घ) 18-(क)

विषय-10

11-(क) 12-(ग) 13-(घ) 14-(क)

19-(घ) 20-(ख) 21-सिद्धू मांझी

विषय-11

11-(क) 12-(ख) 13-(क) 14-(घ)

15-(क) 16-(ख) 17-(क) 18-(ग)

19-(क) 20-(ग) 21-नाना साहब

विषय-13

11-(ग) 12-(क) 13-(घ) 14-(ग)

15-(ख) 16-(ग) 17-(ग) 18-(ग)

19-(ग) 20-(क) 21- महात्मा गाँधी

विषय-15

11-(क) 12-(ग) 13-(क) 14-(ग)

15-(ख) 16-(क) 17-(ख) 18-(ख)

19-(ग) 20-(ख) 21- (पंडित जवाहर लाल नेहरू)